

११/११/११

१२७

# हमचा मीडिकल कॉलेज



सुबोध पाठे



मेरा दोस्त आधा सेब मुंह में डालकर कहता है, "तो जाने दीजिए कोई और होंगी। आ जायेंगे सिनेमा देखकर वे लोग।"

इस बातचीत के बाद मेरा दोस्त नाशपाती काटने में तल्लीन हो जाता है और मेरी पत्नी मायके जाने के लिए सामान बाँधने में लग जाती है। थोड़ी देर के बाद उसकी सिसकियों की धीमी-धीमी आवाज मेरे दोस्त के कानों में पड़ती है और आप बड़ी प्रसन्नता और निश्चिन्तता से सान्त्वना देने लगे हैं :

"घबराइए नहीं भाभी, जीवन में ऐसा ही होता है।"

"भाड़ में जाय ऐसी जिन्दगी !"

"सम्भव है भाभी, मुझे धोखा हुआ हो।"

"नहीं जी ! मैं सब समझती हूँ; वह हैं ही ऐसे।"

"मान लीजिए कि ऐसे ही हैं भाभी, फिर भी उन्हें सन्मार्ग पर लाना आपका काम है।"

"यहाँ मैंने कोई स्कूल नहीं खोल रखा है।"

"भाभी, आप भी ग़लब करती हैं। आप ही ने उन्हें इतनी ढील दे रखी है, वरना वह यों उच्छृंखल न होते। सच कहता हूँ भाभी, जब तुम्हारी सूरत देखता हूँ तो कलेजा मुँह को आता है। कहने को तो वह मेरा दोस्त है, मगर मैं उसका यह अत्याचार नहीं देख सकता। मैं उसको हजार बार समझाता हूँ, लेकिन क्या करूँ



२१५  
लढहागी

२००७  
१३.३.६८

कृशन चन्दर





२१५  
कपहली

२००६३  
१३.३.६८

## पुलिन्दे के नग

भसवारी ज्योतिषी  
मेरा दोस्त  
भक्ति भारतीय हिरोइन्स कागफोन्स  
सेठ जी  
जनतन्त्र दिवस  
साहब  
भूग की दास  
हिन्दी का नया कायदा  
मंत्रियों का कलव  
सचनसिंह  
विलो भीर सजीर  
हम तो मोहब्बत करेगा

## अखबारी ज्योतिषी

जब से हिन्दुस्तानी राजाओं को पेशान मिली, राज-ज्योतिषियों और नाचने वालियों का भाव मन्द पड़ गया। इससे पहले नाचने वालियों और विशेषकर राज-ज्योतिषियों की रियासतों में बड़ी पूछ थी। राजा लोग इन्हें सिर-पाँखों पर बिठाते थे और रेशमी चिलमन (परदा) की झोड़ में महारानियाँ इन्हें धपना हाथ दिखाती थीं—वे तरब और नाजुक हाथ जिनकी सुहोल और कोणाकार भँगुलियों पर नीलम, पुसरज, याकूत (माणिक) और लाल बदह्शाँ चमकते थे। एक बार बघफन में मैंने भी धपना हाथ एक राज-ज्योतिषी की दिखाया था। राज-ज्योतिषी ने मेरा हाथ देखकर कहा था—“यह शालक बड़ा जानी होगा।” और मैंने राज-ज्योतिषी की मोटी तोंद, उसकी रेशमी बघकन और सोने के बटन देखकर सोचा था कि बड़ा होकर यदि मैं जानी हुआ तो इस राज-ज्योतिषी की तरह ज्ञान-ध्यान हासिल करूँगा, बरना जीने का कुछ मजा नहीं है।

अब मैं रेलवे में चलक हूँ और मेरा सारा ज्ञान-ध्यान इसी में खर्च होता है कि किस तरह पुरानी फाइलों को छः महीने तक दबाये रखूँ और नई फाइलों को खोलने से इन्कार करता जाऊँ। यह बड़ा मुश्किल काम है। और मैं इसे करता ही रहता, लेकिन इस साल भूँकि मर्हमाई ने दिसकुस कमर छोड़ दी, इसीलिए मुझे रेलवे की



शुक्रवार के नितने ग्राहक बढ़ाता है।”

मैंने कहा—“भाप फिक्र न कीजिए। दूसरे सप्ताह में ही आपके शुक्रवार की बिक्री पचास हजार न बढ़ जाय तो मेरा नाम पण्डित गणेशीराम वसुन्धा नहीं कुछ और रख दीजिएगा।”

प्रधान सम्पादक पैसिल के पिछले छिरे पर लगा हुआ खरब बताते हुए बोले—“बड़ा भाप रस का ज्योतिष भी जानते हैं?”

मैंने मेज पर से पीला स्पंज उठाकर उसे साते हुए जवाब दिया—“जी हाँ, जो हाँ, बिघाड़ा के स्वर्गीय महा-



राजा की मैं ही 'टिप' निकालकर दिया करता था। हद तो यह है कि 'रेमकोर्स' पर लोगों के धलावा खुद छोड़े मुझसे पूछने लग पड़े थे कि बताओ, मैं इस बार रस नीतुंगा या नहीं! इसके धलावा मैं चाँदी, सोने, मोहे, तेल और बई का ज्योतिष भी जानता हूँ।”

प्रधान सम्पादक ने खुश होकर कहा—“तब तो आप हमारे 'वाणिज्य और व्यवसाय' पृष्ठ के लिए भी उपयुक्त हो सकेंगे।”

“भापकी कृपा है”, मैंने खुश होकर स्वाही गले में उढ़ेंम ली और होंठों को बनाटिंग पेपर से साफ करते हुए कहा।

शनिवार का दिन सर पर आ गया, पर मैंने तब तक अपनी रिपोर्ट तैयार करके प्रेस में नहीं दी थी। प्रधान सम्पादक ने दो-तीन बार याद दिलाई। मैंने कहा—“भाप शुक्रवार रोककर रखिए। मैं कड़ी मेहनत कर रहा हूँ। पूरा 'मैटर' तैयार होने में थोड़ी-सी



बलकी छोड़कर 'देशभक्त' अखबार में अखबारी ज्योतिषी के पद पर  
 नौकर हो जाना पड़ा। आजकल हर बड़े दैनिक पत्र में एक ज्योतिषी  
 है, जो सण्डे-के-सण्डे अखबार में ज्योतिष से हिसाब लगाकर  
 अखबार के पाठकों के भाग्य का अनुमान लगाता है। इससे  
 कांग्रेस और सोशलिस्ट अखबारों में ज्योतिषी नहीं हुआ करते  
 , लेकिन पन्द्रह अगस्त के बाद इन लोगों को भी ज्योतिषियों की  
 जरूरत पड़ गई। जब मैंने 'देशभक्त' अखबार का विज्ञापन देखा तो  
 तत्काल अरज़ी दे दी, जो मंजूर भी हो गई। तीन सौ ज्योतिषियों में  
 मैं ही प्रथम आया। दुर्भाग्य से मुझे इस निर्वाचन पर प्रसन्न नहीं  
 होना चाहिए था; लेकिन सोचा कि जब बड़े राज-ज्योतिषी ने कहा  
 था—'बेटा, बड़े होने पर ज्ञानी हों', इसलिए आज ज्ञानी बनने का  
 अवसर हाथ आया है उसे क्यों छोड़ें; लगे हाथों इस काम को  
 कर ही डालें और फिर रेलवे की बलकी के दिन-भर की घिस-  
 स के बाद मुश्किल से सत्तर-अस्सी रुपये मिलते हैं। इनसे क्या  
 होता है? यहाँ हर माह साढ़े तीन सौ मिलेंगे और काम कुछ भी  
 नहीं है। बस, प्रति सप्ताह सात दिन का भविष्य-फल तैयार करके  
 अखबार में दे देना है, ताकि पढ़नेवाले उसे देखकर आगामी सप्ताह  
 के लिए अपने भविष्य का अनुमान कर लें। बस यों समझिये कि  
 हर महीने में सिर्फ चार भविष्य-फल और एक महीने के बाद पूरे  
 महीने का मासिक भविष्य-फल खास तौर पर उन लोगों के लिए  
 जो इस महीने में पैदा हुए हों।

मैंने अखबार के प्रधान सम्पादक से पूछा—“इसके सिवा और  
 कोई काम भी होगा?”

प्रधान सम्पादक बोले—“पहले हम यह धन्धा नहीं करते थे;  
 सिर्फ देश के लड़नेवाले सेवकों की खबरें छापते थे। अब वे लड़ने-  
 वाले ही नहीं रहे तो हम लोग क्या करें? इधर 'देश-सेवक' अखबार  
 ने एक भारी ज्योतिषी रखा है, जिससे उस अखबार की बिक्री दस  
 हजार बढ़ गई है। अब आप का काम देखते हैं कि यह हमारे

भसवार के बितने चाहक बढ़ाता है।”

मैंने कहा—“भाप किन न कीजिए। दूसरे सप्ताह में ही भापके भसवार को बिनी पचास हजार न बढ़ जाय तो मेरा नाम रक्षित एकदोसम सगुन्या नहीं कुछ और रस दीजिएगा।”

प्रधान सम्पादक वैसिस के पिछले सिरे पर सगा हुआ रबर बबाले हुए बोले—“क्या भाप रस का ज्योतिष भी जानते हैं?”

मैंने मेड पर से गीला स्पंज उठाकर उसे छाते हुए जवाब दिया—“जी हाँ, जी हाँ, बिधावा के स्वर्गीय महा-



राजा को मैं ही 'टिप' निकालकर दिया करता था। हद तो यह है कि 'रेमकोम' पर लोगों के भलावा खुद छोड़े मुझसे पूछने लग पड़े थे कि बताओ, मैं इस बार रस जीतूँगा या नहीं। इसके भलावा मैं चाँदी, सोने, सोहे, तेल और रई का ज्योतिष भी जानता हूँ।”

प्रधान सम्पादक ने खुस होकर कहा—“तब तो भाप हमारे 'वाणिज्य और व्यवसाय' पृष्ठ के लिए भी उपयुक्त हो सकेंगे।”

“भापकी कृपा है”, मैंने खुस होकर स्याही गले में उड़ेंन ली और होठों की ब्राइटिंग पेपर से साक करते हुए कहा।

शनिवार का दिन सर पर आ गया, पर मैंने तब तक अपनी रिपोर्ट तैयार करके प्रेस में नहीं दी थी। प्रधान सम्पादक ने दो-तीन बार याद दिलाई। मैंने कहा—“भाप भसवार रोककर रखिए। मैं कड़ी मेहनत कर रहा हूँ। पूरा 'मैटर' तैयार होने में थोड़ी-सी

पाले, हर तर से साय-ही-साय है।

इस सप्ताह के छः दिनों में कार-खानों में हड़ताल रहेगी, सातवाँ दिन रविवार का होगा, जिस दिन छुट्टी रहती है। लेकिन इससे घबराने की कोई आवश्यकता नहीं। स्टॉक एक्सचेंज के बाहर घूमने वाले साँठों की पूजा करने से और उनके मुँह में सम्बाकुवाला पान डालने से यह संकट जाता रहेगा।



### रेस के टिप् (लेखक—रेस का रसिया)

इस सप्ताह का 'जाकी' दिन पाँचवाँ है इसलिए भाँखें बाढ़ करके पाँचवाँ 'रेस' खेलिये और इस पाँचवें नम्बर के घोड़े पर अपनी सारी जायदाद लगा दीजिए।

तीसरी और आठवीं 'रेस' बिल्कुल न खेलिए, सब घोड़े और सब 'जाकी' निकम्मे हैं, और घोड़ों के मालिक एक-दूसरे से मिले हैं। पशुिक को उत्सु बनायेंगे और लाखों रुपये लुट लेंगे।

चौथी रेस में ग्वानियर और कश्मीर लड़ रहे हैं, लेकिन ये सफल नहीं हो सकते। जीत सेठ मोंटूनाल के घोड़े 'टामी' की होगी। और अगर, 'टामी' न जीता तो 'हरामी' तो अवश्य जीटेगा। दोनों खेलिए—'विन' और 'प्लेस'।

पहली और दूसरी 'रेस' के सब घोड़े अच्छे हैं। कोई किसी दूसरे को हरा नहीं सकता। आप कोई-सा घोड़ा खेलें।



सुसंवाद सुनेंगे ।

मंगलवार—कोई गुप्त खजाना मिलेगा । बीबी से सझाई होगी । मैटिनी शो में आप एक खूबसूरत सड़की को देखेंगे, जिसके साथ उसका पति होगा और आप उससे कोई बात नहीं कर सकेंगे और कसेजा एकद्वेकर रह जायेंगे । रात को घर लौटते समय ट्राम का कण्ठघटर आपकी बेइज्जती करेगा । सुबह धाय के साथ भालू की भाजी मिलेगी; रात को उपवास होगा, मगर बीच के दिन का वक्त बड़े आनन्द में व्यतीत होगा ।

बुधवार—आपका चेक 'डिसवानर' होगा । पुलिस हिरासत में रखेगी । शाम को आप की बीबी का भाई, यानी साजा, जमानत देकर छड़ाकर जायेगा । यह बहुत बुरा दिन है आपके लिए, लेकिन रात बहुत अच्छी गुजरेगी । घर में आना भी अच्छा मिलेगा; मिर में मैं तेरा की मालिश भी होगी । इस दिन यदि आप घर से बाहर न निकलें तो अच्छा है । वरना आपकी मरजी ।

गुरुपतिवार—राज-दरबार में सम्मान होगा । कोई नई प्रेमिका मिलेगी । दोपहर के समय आप बाजार में ताश लेने के लिये जायेंगे और फिर किसी मोटर के नीचे धाकर मर जायेंगे ।

शुक्रवार—गुरुपतिवार को यदि आप नहीं मरे तो धाज के दिन सुबह नास्ते पर ठीतर सार्ये और अगर आप साकाहारी हैं तो भूंग की दाल के कोप्ते ! अलवार मे आप अवश्य कोई बुरी खबर पढ़ेंगे, जिसे पढ़कर आप को बड़ा सदमा होगा, जो एक 'पेग' बाण्टी से दूर हो जायेगा । इस दिन आपके छोटे बच्चे की दाँग टूट जायेगी । आपकी पत्नी एक नई साड़ी का लफाजा करेगी ।

शनिवार—आप सबेरे राशन लेने जायेंगे, लेकिन दुकान बन्द मिलेगी; कपड़े के कूपन लेने जायेंगे, लेकिन दफ्तर बन्द रहेगा; रेत खेलने जायेंगे और बहुत रुपये हारकर जायेंगे । घड़े बलास का टिकट खरीदकर फस्ट में बैठेंगे और टिकट चेकर धाकर चालान कर देगा, लेकिन आप वैसे घटा करके छूट जायेंगे । इस दिन पड़ोसियों

से लड़ाई का खतरा है, लेकिन हाथ जोड़ देने से यह खतरा जाता रहेगा। विजनेस में लाभ होगा। दिल खोलकर सट्टा खेलिए और ब्लैक मार्केट कीजिये। यह दिन ब्लैक-मार्केट के लिये बहुत अच्छा है।

रविवार—आपको अचानक दफ्तर में बुला लिया जायेगा और अपनी छुट्टी के सारे प्रोग्राम खत्म हो जायेंगे। आप दफ्तर में सड़ेंगे और घर पर बीबी-बच्चे आपको गालियाँ दे रहे होंगे। शाम को घर जाते हुए बच्चों के लिए दो केले, दो अमरूद और एक सन्तरा खरीदेंगे और कोई मनचला आपकी जेब कतर लेगा। लेकिन जो लोग रविवार के दिन जन्मे हों उनके लिये यह दिन अच्छा है। वे सौ साल तक जियेंगे। इससे पहले पचास बरस घर में और दफ्तर में और अगले पचास बरस पागलखाने में।

'देश-भवन' अखबार जब रविवार के दिन जब प्रकाशित हो कर बाजार में आया तो दस मिनट में सब बिक गया। एक कापी भी बाकी न रही। दूसरे दिन अखबार के दफ्तर के बाहर अखबार पहले वालों की भीड़ जमा थी। वे लोग दफ्तर को आग लगाने की कोशिश कर रहे थे; लेकिन पुलिस की सहायता ने स्थिति पर काबू किया गया। प्रधान सम्पादक और अन्य सम्पादकों ने मिलकर मेरी सलाह की। इसलिए यह सब इतरता में बैठा निख रहा हूँ। आप समझते होंगे कि देश खोलेख चलत निकला। मेरा ज्योतिष शत-प्रतिशत सच निकला—इतना सच है कि लोग इसे सहन न कर सकें। और अखबारों को लेखी व दस्त लच्छाई होने नहीं जाते हैं। पहले भी हमने इसे कहने से नहीं मना किया।

## हमारा स्कूल

[वही स्कूल है, जिसमें हम और आप पढ़ते रहे हैं। वही जाने-पहचाने मास्टर जी हैं, जिनके तमाचे और छड़ियाँ हम लोग खाते रहे हैं। वही अपने बचपन के प्यारे खेलण्डे (खिलाड़ी) लड़के हैं, जिनके मुश्त मन हमेशा स्कूल की छहारदीवारी के बाहर भागते रहते हैं। वही पुराने कमरे हैं, जिनकी दीवारों पर किसी ने सफेदी नहीं कराई है। दीवारों पर बावशाह जाम पंजम और महारानी मेरी और बिबटोरिया महारानी की तस्वीरें हैं। हर चीज बदस्तूर ठीक उसी तरह मजूर आती है जिस तरह आज से तीस साल पहले थी। सिर्फ किताबें बदल गई हैं, क्योंकि देश स्वतन्त्र हो गया है। पढ़ने और पढ़ाने वाले और उनके स्कूल का आतावरण वही है, लेकिन किताबें बदल गई हैं। आइए, हम भी नया कोर्स पढ़ें। यह पहली ब्याच का कमरा है।]

मास्टर—बच्चों! यह हिन्दी की पहली किताब है। इसके पृष्ठ पर मैं बच्चे को गोद में लिए बैठी है। पढ़ो मैं बच्चे को गोद में लिए बैठी है।

बच्चे—(रोहराते हुए) मैं बच्चे को गोद में लिए बैठी है।

मास्टर—बच्चा घोंटा घुस रहा है।

बच्चे बच्चा घोंटा घुस रहा है।

एक बच्चा—मास्टरजी, बच्चा अँगूठा क्यों चूस रहा है ? दूध क्यों नहीं पीता ?

दूसरा बच्चा—(डपटकर) अरे, दूध कहां से आयेगा ? दूध आजकल रुपये का सेर बिकता है; वह भी आधा पानी और आधा दूध । अब बच्चा अगर रुपये का सेर दूध पियेगा तो बच्चे के माँ-बाप क्या खायेंगे; तेरा सिर ?

तीसरा बच्चा—हाँ, ठीक है ! आजकल के बच्चे दूध नहीं पी सकते, सिर्फ अँगूठा चूस सकते हैं । ठीक है मास्टरजी !

दूसरा बच्चा—ठीक है मास्टरजी, पढ़ाइए ! माँ-बच्चे को गोद में लिए बैठी है ।

चौथा बच्चा —माँ-बच्चे को गोद में कहां लिये बैठी रहती है ? हमारी माँ तो नहीं बैठती । दिन-भर काम करती रहती है । बच्चा खदिया पर पड़ा रहता है । मास्टरजी, कभी हमें सँभालना पड़ता है, कभी हमारे भाई को; कभी मँझली बहन को । मगर वह भी काम करती है ?

मास्टर—क्या काम करती है ?

चौथा बच्चा—मेरी माँ और मेरी बहन, वे दोनों मिल में काम करने जाती हैं । नया बच्चा घर पर रोता है । माँ सुबह खाना पकाती हैं, दिन-भर मिल में मजदूरी करती हैं । बच्चे को गोद में नहीं लेती । (चिल्लाकर) मास्टर जी, इस किताब में झूठ लिखा है । माँ-बच्चे को गोद में नहीं लेती । मास्टर जी, (आँखों में आँसू भरकर) मेरी माँ छोटे भाई को गोद में नहीं लेती !

मास्टर—चुप रहो !

पाँचवाँ बच्चा—(निहायत साफ-सुथरा)—यह झूठ बोलता है मास्टर जी ! माँ-बच्चे को गोद में लेती है । जब हम घर पर जाते हैं तो माँ हमें गोद में उठा लेती है । जब हम घर जाते हैं हमारी माँ हमसे बहुत प्यार करती है ।



धोपा बच्चा—तुम्हारा घर कहाँ है ?

पाँचवीं बच्चा—मालाबार हिल पर ।

[एक कहकहा लगता है । सभी बच्चे हँसते हैं ।]

मास्टर—बुप-बुप ! भागे पड़ो ! (जल्दी-जल्दी पड़ाता है) माँ-बच्चे को गोद में लिये बैठी है । बच्चा झंझूठा चुस रहा है । बाप भंग भोट रहा है ।

सलीम—(खड़ा होकर)—मास्टरजी, एक सवाल है ।

मास्टर—सलीम, तुम अपने बेटेदे सवासों के लिए पिछले साल फेल हो चुके हो; बैठ जाओ भागे पड़ो ।

सलीम—मास्टरजी, एक सवाल है । पिछले साल मैंने पढ़ा था, बाप हुक्का पी रहा है । इस साल वह भंग भोट रहा है । ऐसा क्यों है ?

सीसरा बच्चा—भबे बूढ़ ! किताब बदल गई है ना ! भाजादी से पहले वह हुक्का पीता था ; भब भंग भोटता है ।

धोपा बच्चा—भगले साल बरस पीदेगा ।

मास्टर—नहीं बच्चो ! यह इसलिए बदल गया है कि मुसलमान हुक्का पीते हैं, हिन्दू भंग भोटते हैं ।

सीसरा बच्चा—मेरा बाप तो मुसलमान नहीं है; फिर वह हुक्का क्यों पीता है ?

धोपा बच्चा—घीर मेरा बाप बार मीनार के सिगरेट पीता है । वह भी तो तम्बाकू है । मास्टरजी, इसमें होना चाहिए कि बाप बार मीनार के सिगरेट पी रहा है ।

सीसरा—नहीं ! मेरा बाप बीड़ी पीता है । इसमें होना चाहिए, बाप बीड़ी पीता है ।

पहला—मेरा बाप तो गाँगा पीता है ।

सलीम—हमारा बाप धन्नीम खाता है ।

धोपा—(पाँचवें से) क्यों जी, तुम्हारा बाप क्या पीता है ?

पाँचवाँ बच्चा—(पले भोलेपन से) मास्टरजी, मैंने कभी नहीं पीया है ।

खालिस विलायती शराब पीता है ।

[कहकहा—साथी वच्चे हँसते हैं ।]

—चुप रहो ! अब कोई बोला तो बेंत लगाऊँगा ।

[वच्चे चुप हो जाते हैं ।]

१. २—(वच्चों से)—पढ़ो ! माँ वच्चे को गोद में लिये बैठी है ।

वच्चा अँगूठा चूस रहा है । बाप भंग घोट रहा है । कपड़े

अलगनी पर टेंगे हैं । माँ वच्चे को नई कमीज पहना रही है ।

सलीम—कहाँ से पहनाती है ? हमारी तो एक साल से यही कमीज है ।

मास्टर—चुप रहो ।

सलीम—हूत तो एक साल से यही फटी कमीज पहन रहे हैं । अब्बा

से कहते हैं तो वह कहते हैं कि नई कमीज नहीं मिल सकती ।

बाजार में आजादी के बाद कपड़ा बहुत महँगा हो गया है ।

मास्टर—(सलीम को तमाचे मारता है) चुप रहेगा कि नहीं ?

सलीम—(रोकर)—यही एक फटी-पुरानी कमीज है । घर में अब्बा

से कहते हैं तो वह मारते हैं; यहाँ कहते हैं तो मास्टर जी

मारते हैं । हम कहाँ जायँ ? बोलो, हम कहाँ जायँ ? किससे

फरियाद करें ? कितावें नई हैं, लेकिन पाठ वही हैं, चाँटे वही

हैं, कमीज वही है ! (गुस्से में फटी कमीज और फाड़ बेता है

और मुट्ठी भींचकर कहता है) मुझे यह स्कूल नहीं चाहिए ।

[चला जाता है । कमरे में सन्नाटा है ।]

मास्टर—यह लड़का कभी पास नहीं हो सकता । आगे बढ़ो : माँ

वच्चे को नई कमीज पहना रही है ।

[कमरे में सन्नाटा है । कोई नहीं बोलता ।]

मास्टर—(गुस्से में मेज पर हाथ मारकर) पढ़ो ! पढ़ते क्यों नहीं ?

माँ वच्चे को नई कमीज पहना रही है और गीत गा रही है ।

एक लड़का—(गाता है) मिलके बिछुड़ गई अखियाँ, बिछुड़ गई

अखियाँ, बिछुड़ गई अखियाँ...

सब बच्चे—हाय रामा ।

[घण्टी बजती है परदा गिरता है ।]

### दूसरी ब्लास का कमरा

[बच्चे बंटे शोर मचा रहे हैं । छात्रों की टोपी पहने हुए एक मास्टर धाँवर प्रवेश करता है । बच्चे लड़के हो जाते हैं ।]

मास्टर—बच्चों ! आज से हम आजाद हैं । आज से हम अपने जीवन की नई पोशाक पहन रहे हैं ।

एक लड़का—तभी आज आपने हैट उतार कर गांधी टोपी पहन ली है ।

मास्टर—गुस्ताख ! कमरे में बाहर चले जाओ । (छान्ति)  
बच्चों ! आज ये हिंदुस्तान आजाद है । आज हम अपना राष्ट्रीय गीत गावेंगे ।

दूसरा लड़का—गॉड  
सेव दी किंग—  
जो आप रोज  
गवाते थे ।

मास्टर—यह कौन  
बोला, मोहन ?

मोहन—जी, आप ही  
तो रोज यह गीत  
हमसे गवाने थे  
और हम नहीं गाते थे तो आप हमें मारते थे । ये देखिए,  
मार के निशान !



मास्टर—आगे जाओ ! (उसे थप्पड़ मारता है) निकल जाओ  
कमरे में ।

ही नहीं, तो गायेगा क्या ? क्यों सुरेस चटर्जी ?

सुरेश—(बंगाली में)—श्रो बाबो ! (यानी हमारा टंगोर, हमारी बंगला भाषा और बंगाल बुनिया में सबसे ऊँचा है ।)

मास्टर—अच्छा, तो 'बन्दे मातरम्' गाओ ।

बूतारा सड़का—मगर उसके गाने से तो एक सम्प्रदाय को दुष्ट पहुँचता है और हिन्दुस्तान में तो सभी सम्प्रदाय के लोग हैं ।

मास्टर—अच्छा, तो 'महा गुजरात' गाओ ।

बावकार—'महा गुजरात' क्यों मास्टरजी ? हमारा 'महा महाराष्ट्र' क्यों नहीं ?

शमशेरसिंह—'महा पंजाब' क्यों नहीं ?

नयाम पल्ली—'महा मद्रास' क्यों नहीं ?

गोविन्द जी—'महा यू० पी०' क्यों नहीं ?

मास्टर—(बपटकर)—तो कुछ मत गाओ ! बैठ जाओ ।

[सड़के बैठ जाते हैं—सिधाय एक के । सम्पादक छाया रहता है । मास्टर किताब खोल रहा है । किताब खोलकर कत्ता के बिछा बिछों की धोर बैठता है तो एक सड़के को खड़ा पाता है ।]

मास्टर—तुम क्यों नहीं बैठे ? मुना नहीं ? बैठ जाओ ।

बौया सड़का—मास्टर जी, मैं पूछता हूँ, हम आजाद हो गए हैं न ?

मास्टर—हाँ बेटा !

बौया सड़का—आजाद हो गए है न ? तो हम अपने लिए एक छोटा-सा राष्ट्रीय गीत नहीं बना सकते ? मास्टर जी, यह कैसी आजादी है ?

मास्टर—कमरे से बाहर चले जाओ !

बौया सड़का—क्यों ?

मास्टर—मैं आजादी के तिलाफ एक शब्द भी नहीं सुन सकता ! चले जाओ ।

[सड़का चला जाता है । निस्तब्धता ।]

मास्टर—किताबें खोलो । [सब सड़के किताबें खोलते हैं; सेल्फिन']

शमशेरसिंह के पास कोई किताब नहीं। वह अपने साथी को पर से देखने की कोशिश कर रहा है। दूसरा लड़का नहीं देता। शोर होता है। मास्टर की दृष्टि पड़ती है।]

—क्यों शोर मचा रहे हो ?

मोहन—मास्टरजी, यह मेरी किताब से देखना चाहता है।

मास्टर—क्यों वे, तेरी किताब कहाँ है ?

शमशेरसिंह—मेरे पास किताब नहीं है।

मास्टर—क्यों नहीं है ?

शमशेरसिंह—(चुप)

मास्टर—मैं पूछता हूँ तुम्हारे पास किताब क्यों नहीं है ?

शमशेरसिंह—मैं शरणार्थी हूँ।

मास्टर—परेशान कर दिया इन शरणार्थियों ने। इनके पास पढ़ने के लिए किताब नहीं, पहनने के लिए कपड़ा नहीं खाने के लिए रोटी नहीं, रहने के लिए घर नहीं। सब-कुछ हमसे माँगते हैं वे भिखमंगे। समझ में नहीं आता सरकार इन्हें जेल में क्यों नहीं बन्द करती !

शमशेरसिंह—मेरे पास किताबें भी थी, कपड़े भी थे, रोटी भी थी, घर भी था। फिर आजादी आई, मेरे पास कुछ न रहा।

मास्टर—तो वापिस चले जाओ।

शमशेर सिंह—कहाँ चला जाऊँ मास्टरजी ! पहले उन्होंने मेरे बाप को मार डाला, फिर मेरी माँ को, फिर मेरी बड़ी बहन को, फिर मेरे बड़े भाई को, फिर वे मुझे मारने लगे कि, सईद रोता-रोता मेरे गले से लग गया।

मास्टर—सईद कौन है ?

शमशेरसिंह—सईद एक मुसलमान लड़का है। वह मेरा दोस्त है। हम कभी अलग नहीं हुए। जब सईद के पिता मुझे मारने रोता-रोता मेरे गले से लग गया।

बोला—'इसे न मारो ! यह तो मेरा दोस्त है, मेरा भाई है ।'  
 और उन्होंने मुझे छोड़ दिया । और वे लोग हमारे घर का  
 सामा ले गए । और मैंने अपनी सारी किताबें सईद को दे  
 दीं । वह लेता नहीं था । मैंने कहा—'तुम रखो; जब मैं फिर  
 आऊंगा तो तुमसे ले लूंगा ।' बड़ी-बड़ी तसवीरों वाली किताबें  
 थीं । बड़े अच्छे-अच्छे खिलौने थे । एक नन्ही-सी मोटर थी, जो  
 चाबी से चलती थी । एक हवाई जहाज था । एक सड़क  
 का घोंड़ा था । मोहे की प्यारी-सी रेवगाडी थी । परियों की  
 कहानियाँ थी किताबों में, जो माँ मुझे रात के समय सुलाया  
 करती थी । और अब मेरी माँ भी मेरे पास नहीं है । मेरा  
 बाप भी नहीं है । मेरा भाई, मेरी बहन, सब मर गए हैं, और  
 इस देश में आजादी आ गई है ।

मास्टर—तो तुम अपने देश चले जाओ न ?

शमशेरसिंह—अब मेरा कौन देश है मास्टरजी, मुझे बतला दो ।  
 कोई मुझे बता दे कि मेरा कौन देश है । पहले मेरा एक देश  
 था । उसे लोग पंजाब कहते थे । और सईद और मैं और  
 हमारे माँ-बाप और गिरधारी और शमशेरसिंह और गुलाम  
 अहमद सभी लोग पंजाबी कहलाते थे । फिर आजादी आ गई  
 और हमारे देश के टुकड़े-टुकड़े हो गए । मैं जहाँ का था वहाँ  
 का न रहा । मैं किस देश का रहने वाला हूँ, मास्टरजी ?

मास्टर—(घुप)

शमशेरसिंह—बतलाइए मास्टरजी, मैं किस घर का रहने वाला  
 हूँ ? मेरे कौन माँ-बाप हैं ? मुझे सिखा कौन देश ? कौन  
 मेरे माँ पर अपना प्यार से सर हाथ रखेगा ? रात को जब  
 मैं झोला सड़क के किनारे धरती पर सोने लगता हूँ मुझे क्यों  
 अपनी बहन के नन्हे-मूँह हाथ-पाद धाने हैं ? अपनी माँ की  
 मोठी-भीठी सोरियाँ क्यों सुनाई देती हैं ? माँ ! हाथ मेरी  
 मँगा । (सिसकियाँ लेता है)।

मास्टर—यह सब कुछ हम नहीं जानते । अगर तुम्हें पढ़ना है तो अपनी किताबें साथ लाओ, वरना इस स्कूल से बाहर निकल जाओ ।

[शमशेरसिंह चारों तरफ सहमा-सा ताकता है । लड़के सिर झुकाये बैठे हैं । फिर वह धीमे-धीमे सिसकियाँ लेता हुआ कमरे से बाहर निकल जाता है ।]

[सन्नाटा; फिर एक लड़का किताबें बस्ते में बन्द करके उठता है ।]

मास्टर—तुम कहाँ जा रहे हो ?

लड़का—मैं वहाँ पहुँगा जहाँ शमशेरसिंह पढ़ेगा । यह स्कूल अब हमारे लिए नहीं है ।

[शमशेरसिंह और उसका साथी चले जाते हैं । फिर धीरे-धीरे दूसरे लड़के उठने लगते हैं और क्लास खाली हो जाती है । सिर्फ एक लड़का रह जाता है ।]

मास्टर—जाने दो, सबको जाने दो ! (लड़के की ओर देखकर)

तुम बहुत अच्छे लड़के हो । क्या नाम है तुम्हारा ?

लड़का—रमणिकलाल समनिकलाल वाराभाई ।

मास्टर—तुम वाकई बहुत अच्छे लड़के हो । हम तुम्हारे पिताजी को पत्र लिखेंगे । क्या करते हैं वह ?

लड़का—जी, वह सरकार के मिनिस्टर हैं ।

[घण्टी बजती है । परदा गिरता है]

### तीसरी क्लास का कमरा

शिक्षक—बच्चो, अब तुम बड़े हो गए हो । आज हम तुम्हें नागरिक जीवन का पहला पाठ पढ़ायेंगे । यह पाठ इसलिए और भी आवश्यक हो गया है कि अब तुम पराधीन नहीं रहे हो; स्वतन्त्र देश नागरिक हो । तुम्हारे उत्तरदायित्व बढ़ गए हैं ।

लड़का—उ. कहते हैं, मास्टरजी ?

शिक्षक—जैसे माँ-बाप का अपने बच्चों के लिए उत्तरदायित्व होता है कि वे उनका सालन-यातन करें, उन्हें पढ़ाएँ, तिलाएँ, उनकी देखभाल करें, उसी तरह हर नागरिक का अपने शहर के प्रति उत्तरदायित्व होता है। और इस उत्तरदायित्व को कर्तव्य समझकर पूरा करना हर नागरिक के लिए आवश्यक है।

पहला लड़का—समझ में नहीं आया।

शिक्षक—मैं समझाता हूँ। देखो, मैं तुम्हारे घर से प्रारम्भ करता हूँ। तुम्हारा घर जिस गली में है। उस गली की सफाई मैं तुम्हारा भी हिस्सा है। तुम्हारे घर की गली बहुत साफ-सुथरी होनी चाहिए।

पहला लड़का—हमारा घर गली में नहीं है।

शिक्षक—तो फिर कहाँ है ?

पहला लड़का—हमारा घर तो चाल में है; बत्तीस नम्बर की चाल में, जो सकारियल की बगल में है।

शिक्षक—तो तुम उस चाल को साफ-सुथरा रखने में मदद करो।

दूसरा लड़का—कैसे रखें ? वहाँ तो सबके पास एक-एक कमरा है। उसी में खाना, उसी में सोना, उसी में रहना, उसी में बीमार पड़ना, उसी में स्कूल का काम करना, उसी में रिश्तेदारों का आना-जाना। वस एक कमरा तो है हमारे पास। सबके पास एक कमरा है। और एक कमरे में दस-बारह भादमी रहते हैं। हमारी चाल की पाँच मजिलें हैं। पाँच मजिलों में दो-दो कमरे हैं। अगर दृष्टियाँ सिकं तीन हैं और एक बल। बोलो मास्टरजी, चाल कैसे साफ रखें ? पीने को तो पानी मिलता नहीं, सफाई के लिए कहाँ से लायें ?

शिक्षक—यह मैं नहीं जानता। जिस तरह हो, चाल को साफ रखना तुम्हारा कर्तव्य है। खैर, एक तुम चाल में रहते हो, सभी लड़के तो चाल में नहीं रहते।



दूसरा लड़का—जी हाँ, मैं चाल में नहीं रहता ।

शिक्षक—शाबाश ! तुम कहाँ रहते हो ?

दूसरा लड़का—जी, मैं रिपयूजी-कैम्प में रहता हूँ ।

शिक्षक—शाबाश ! अब तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम अपने कैम्प को साफ रखने में मदद करो । वहाँ पर किसी प्रकार का कूड़ा-करकट नहीं होना चाहिए ।

दूसरा लड़का—यह कैसे सम्भव है मास्टरजी ? जहाँ हमारा कैम्प है उसके पास ही कमेटी के मेहतर शहर का सारा कूड़ा-करकट आकर फेंकते हैं । वह बंदू आती है कि क्या बताऊँ ?

शिक्षक—मगर तुम अपने कैम्प की चहारदीवारी के अन्दर तो सफाई रख सकते हो । उसके कमरे ..

दूसरा लड़का—वहाँ कमरे नहीं हैं ।

शिक्षक—उसकी टट्टियाँ हैं ?

दूसरा लड़का—वहाँ टट्टियाँ भी नहीं हैं ।

शिक्षक—स्नान-गृह ?

दूसरा लड़का—वहाँ पानी का नल भी नहीं है मास्टरजी ! आप कैसी बातें करते हैं ? वहाँ हमारे सिर पर छत तक नहीं है ।

शिक्षक—(भुँक्षलाकर) खैर, वह रिपयूजी-कैम्प तो एक अस्थायी जगह है...

दूसरा लड़का—हमें कई साल हो गए आये हुए ।

शिक्षक—चुप रहो । मैं नागरिक जीवन की बात कर रहा हूँ—नागरिक घरों की, नागरिक मकानों की, नागरिक बच्चों की । रिपयूजी लोगों की बात नहीं कर रहा हूँ । (एक और लड़के से) तुम कहाँ रहते हो जी ?

तीसरा लड़का—मैं कहीं नहीं रहता हूँ ।

शिक्षक—यह कैसे हो सकता है ?

तीसरा लड़का—जी, मैं बिल्कुल सच कहता हूँ; मैं कहीं नहीं रहता हूँ । हमें कोई घर नहीं मिला । हम लोग अहमदाबाद के रहने

वाले हैं ! मेरे पिताजी वहाँ 'आधाभाई सारामाई पूराभाई' फर्म में बलकं हैं ।

घोया लड़का—वह हमारे पिताजी का फर्म है । हमारी कम्पनी में इसका बाप बलकं है ।

तीसरा लड़का—(गुस्से से उसे देखता है और उसे घूँसा दिखाता है ।)

शिक्षक—ए-ए लड़ो मत ! दगा-मस्ती न करो । क्यों व्यर्थ का गुस्सा दिखाता है ?... अच्छा, बोलो ।

तीसरा लड़का—अब मेरे पिताजी की बदली हो गई है । हम लोग अहमदाबाद से अपना मकान छोड़कर यहाँ चले आए हैं । अब यहाँ पर हमें कोई जगह नहीं मिलती । और अगर मिलती है तो वे चार हजार, छ. हजार, दस हजार तक पगड़ी मांगते हैं । मेरे पिताजी को सिर्फ़ साठ रुपये तनख्वाह मिलती है । पगड़ी कहीं से दें ? पहले हम पिताजी के एक दोस्त के यहाँ रहते थे; मगर अब उसने भी जवाब दे दिया ।

शिक्षक—तो अब कहीं रहते हो ?

तीसरा लड़का—कहीं रहते हैं ! कहीं नहीं रहते । सड़क पर पड़े हैं । एक पेड़ के नीचे सोते हैं । वहीं खाना पकाने हैं । पुलिस वाले धाकर धमकाते हैं तो वहाँ से उठकर चले जाते हैं और किसी दूसरी सड़क पर किसी दूसरे दरस्त के नीचे बैठ जाते हैं । कहीं जायें मास्टरजी ?

शिक्षक—जहाँ तुम्हारा जी चाहे । अब तुम बिल्कुल आजाद हो ।

[लड़के हँसते हैं ।]

शिक्षक—धुप ! धुप ! शहर की सफाई नागरिक जीवन का पहला सिद्धान्त है । अगर शहर में सफाई न होगी तो बीमारी फैलेगी, लोग मरेंगे, शहर तबाह होगा । इसलिए हर शहर में म्युनिसिपल कमिटी बनाई जाती है, ताकि वह मर्याद रखे । लेकिन इस काम में नागरिक बहुत मदद कर सकते हैं ।

गली और गली से बाजार बनता है। बाजार से  
मार्केट से कारखाने और कारखानों से शहर बनता  
। जो व्यक्ति अपने घर की सफाई में हिस्सा लेता है। वह  
मानो पूरे शहर की सफाई में हिस्सा लेता है। तुममें से जो  
लड़का घर की सफाई में हिस्सा लेता है वह हाथ ऊंचा करे।

[कुछ हाथ ऊंचे हो जाते हैं।]

शिक्षक—(हाथ उठाने वाले एक लड़के से)—तुम्हारा नाम ?

लड़का—भोहरचन्द आधाभाई साराभाई पूराभाई।

शिक्षक—तुम्हारा मकान कहाँ है ?

भोहरचन्द—हमारे पास मकान नहीं है, पलैट है।

शिक्षक—पलैट कहाँ है ?

भोहरचन्द—नये पैंसी रोड पर। उसमें आठ कमरे हैं, छः गुमलखाने  
और छः टट्टियाँ और किचन हैं।

शिक्षक—उसमें कितने लोग रहते हैं ?

भोहरचन्द—दो।

शिक्षक—केवल दो ?

भोहरचन्द—जी हाँ ! मैं और मेरे पिताजी। वैसे तो और भी लोग  
हैं, मगर वे हमारे नौकर हैं।

शिक्षक—कितने नौकर हैं ?

भोहरचन्द—चार नौकर हैं और नर्स है मेरे लिए।

तीसरा लड़का—भई, तुम्हारे पास आठ कमरे हैं, तो एक कमरा हमें  
दे दो। हम लोग तुम्हारे बाप की फर्म में नौकर हैं।

भोहरचन्द—नहीं, नहीं ! पिताजी कहते हैं, हमारे यहाँ क्लर्क-पेशा  
लोग नहीं रह सकते।

शिक्षक—(तीसरे लड़के से)—चुप रहो ! बैठ जाओ ! हाँ भोहरचन्द  
आधाभाई साराभाई पूराभाई, तो तुम अपने मकान की सफाई  
में हिस्सा लेते हो ?

भोहरचन्द—जी हाँ ! मैं अपने कमरे की देख-भाल खुद करता हूँ।

नर्स मदद जरूर करती है और नौकर गलीचा बगैरह भी साफ करता है और बेकम क्लोनर से भी काम लिया जाता है, मगर मैं अपने कमरे की सफाई एक तरह से खुद करता हूँ; किताबें खुद रखता हूँ; तसवीरें खुद साइता हूँ, बिजली का पंखा खुद चलाता हूँ, खुद ही बन्द कर देता हूँ।

शिक्षक—साबाश ! साबाश !

शोहरचन्द—सप्ताह में तीन बार अपनी मेज में खुद साफ करता हूँ। सप्ताह में दो बार बाग बेगिन स्वयं धोता हूँ। एक बार गुत्तल्लाने में मैंने पानी का नल खुला छोड़ दिया तो नर्स ने मुझे बड़ी डाँट सिनाई। उस दिन के बाद मैंने नहाकर कभी नल खुला नहीं छोड़ा।

शिक्षक—साबाश ! साबाश ! तुम बहुत अच्छे सबके हो। हम तुम्हारे पिताजी को पत्र लिखेंगे।

नईम—एक खत हमारे भग्वाजी को भी लिख दीजिए न !

शिक्षक—तुम भी घर की सफाई में मदद करते हो ?

नईम—मदद करना क्या साहब, सारे घर की सफाई मैं ही किया करता हूँ।

शिक्षक—तुम्हारे घर में कितने कमरे हैं ?

नईम—बारह।

शिक्षक—बारह कमरे हैं ? कहाँ रहने हो ?

नईम—मवान भाँफ धसियारू-पैतेस में।

शिक्षक—बड़ी अच्छी शिशा दी है तुम्हें नवान साहब ने, मगर आश्चर्य होता है यह सुनकर कि तुम बारह कमरे खुद साफ करते हो।

नईम—जी हाँ, हर रोज साफ करता हूँ—सुबह और शाम।

शिक्षक—सुबह भी और शाम भी ?

नईम—जी हाँ ! सुबह छ. बजे उठकर कमरे साफ करता हूँ—घाठ बजे तक। फिर नहा-धोकर स्कूल आता हूँ। स्कूल से जाने

के बाद फिर कमरे साफ करता हूँ और खाना खाकर सो जाता हूँ ।

तुम तो तुम बहुत थक जाते होगे ?

जी हाँ, बहुत थक जाता हूँ । पहले दो-तीन कमरे तो आसानी से हो जाते हैं । बाद में पसीना आने लगता है और जब बारहवें कमरे पर पहुँचता हूँ तो बिल्कुल चूर-चूर हो जाता हूँ ।

शिक्षक— तो तुम इतने कमरे साफ न किया करो; कम किया करो ।

तर्क— कम करूँ तो नवाब साहब मुझे पीटते हैं ।

शिक्षक— तुमहें पीटते हैं ? यह तो बहुत बुरी बात है । मैं समझता हूँ कि वह तुम्हें नागरिक जीवन का सिद्धान्त सिखा रहे हैं । अगर बारह कमरे साफ करवाना और वह भी एक छोटे-से लड़के से, यह ज्यादाती है । मैं उन्हें अवश्य पत्र लिखूँगा कि यह अपने बेटे के साथ सरासर अत्याचार कर रहे हैं ।

तर्क— मैं नवाब साहब का बेटा नहीं हूँ; उनके खानसामा का लड़का हूँ । (निस्तब्धता) मास्टरजी, आप खत में क्या लिखेंगे ?

शिक्षक— (गुस्से में) निकल जाओ ।

[ घण्टी बजती है । परदा गिरता है । ]

### चौथी क्लास का कमरा

मास्टर— बच्चो ! आज हम तुम्हें भारत का इतिहास पढ़ायेंगे ।

हमारा देश सदियों की दासता के बाद स्वतन्त्र हुआ है ।

पहला लड़का— कितनी सदियों के बाद ?

मास्टर— लगभग दो सौ साल के बाद ।

पहला लड़का— लगभग क्यों ? ठीक-ठीक नहीं बता सकते आप ? नहीं बताइए !

मास्टर— मोहन, तुम फौरन कमरे से बाहर चले जाओ ।

[ मोहन चला जाता है । ]

मास्टर—

स्वतन्त्र भारत का इतिहास पढ़ना चाहिए

धीर सप्तमे बहादुरी, वीरत्ता, साहस, सच्चाई, नेकी आदि सद्-  
गुण, जिनसे महान् राष्ट्र का निर्माण होता है, सोखने चाहिए।

दूसरा लड़का—जी, क्या हम एक महान् राष्ट्र नहीं हैं ?

मास्टर—महान् राष्ट्र तो नहीं हैं बन रहे हैं।

दूसरा लड़का—कैसे नहीं हैं हम ? महात्मा गांधी जी, जवाहरलाल  
नेहरू, बल्लभभाई पटेल जैसे बड़े-बड़े नेता यहाँ हुए और हैं।  
इतने बड़े नेताओं का राष्ट्र महान् न होगा ?

मास्टर—बड़े और महान् नेताओं से ही राष्ट्र महान् नहीं बनता।

दूसरा लड़का—मास्टरजी, आप विद्रोह फैला रहे हैं।

मास्टर—क्या कहते हो ?

दूसरा लड़का—आप सतरनाक बातें कर रहे हैं।

मास्टर—घरे !

दूसरा लड़का—आप कम्युनिस्ट हैं।

मास्टर—तुम दास तो नहीं ला गए ? मैं तो एक मामूली स्कूल  
मास्टर हूँ।

दूसरा लड़का—मैं कुछ नहीं जानता। मैं पुलिस में रिपोर्ट कर दूँगा  
कि मास्टर जी हमें दासों के सिक्काफ जनटी-मीधी बातें पढ़ाते  
हैं। मैं अभी जाता हूँ।

मास्टर—घरे, बैठ भी ! कहा जाता है ? बैठ, बैठ। घरे देस,  
मिट्टाई नापेगा ?

दूसरा लड़का—जी नहीं ! मैं सीधा जाने जाता हूँ, कहना हूँ—  
मास्टरजी रिपब्लिक भी देन थे। मिट्टाई सिक्काफ को कहते थे।

मास्टर—अच्छा बाबा ! बोन तो सही, घातिर तू क्या चाहता है ?

दूसरा लड़का—आप कहें कि भारतवासी बड़ी जाति और भारत  
महान् राष्ट्र है।

मास्टर—भारतवासी बड़ी जाति है।

दूसरा लड़का—बहुत बड़ी जाति है !

मास्टर—बहुत बड़ी जाति है।

मास्टर—तो फिर क्या होता है वहाँ ? लड़ाई के बाद लोगों से पूछा जायेगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं या बाहर जाना चाहते हैं ?

छठा लड़का—कश्मीर तो सदा ही से हिन्दुस्तान में था । अब हिन्दुस्तान के रहने वालों से यह पूछा जायगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना पसन्द करते हैं या नहीं ? और यदि उन्होंने पसन्द नहीं किया तो क्या होगा ?

मास्टर—तो सेना वापस बुला ली जायगी ।

चौथा लड़का—तो मतलब यह कि हम इसलिए लड़ रहे हैं कि कश्मीर की जनता लड़ाई के बाद यह फैसला कर सके कि वह हिन्दुस्तान में रहना चाहती है या बाहर जाना चाहती है ।

मास्टर—हाँ !

चौथा लड़का—तो यह फैसला लड़ाई के बगैर भी हो सकता था ।

मास्टर—कैसे पूछ लिया जाय ? वहाँ हमारे दुश्मन जो मौजूद हैं ।

चौथा लड़का—तो इससे क्या होता है ? दुश्मन से जायें कश्मीर की ; हमें तो कोई लाभ है नहीं कश्मीर से ।

तीसरा लड़का—नहीं है तो क्यों लड़ रहे हैं हम कश्मीर में ? लड़ने हैं कश्मीरियों की । वे स्वयं ही अपने भाग्य का फैसला कर लेंगे ।

मास्टर—वास्तव में बात यह है कि कश्मीर का भारत के लिए बड़ा महत्व है ।

तीसरा लड़का—तो फिर इस बात की घोषणा होनी चाहिए । दुनिया से साफ कह देना चाहिए कि कश्मीर हिन्दुस्तान का है और बाकी सब बातें गलत हैं ।

मास्टर—तुम इतिहास नहीं समझते ।

तीसरा लड़का—आप समझा दीजिए ।

मास्टर—तो फिर सुनो—आजकल हिन्दुस्तान की सीमा यह है—उत्तर में कश्मीर, दक्षिण में तंका---

तीसरा लड़का—तंका भी तो एक जमाने में हिन्दुस्तान का हिस्सा

दूसरा लड़का—दुनिया की सबसे बड़ी जाति हैं !

मास्टर—दुनिया की सबसे बड़ी जाति हैं ।

तिसरा लड़का—ठीक है । अब आप पढ़ाइये (लड़का बैठ जाता है ।)

[ मास्टरजी रूमाल से चेहरे का पसीना पोंछते हैं और फिर से एक नक्शा उठाकर दीवार पर टांग देते हैं । फिर खांसकर हैं । ]

मास्टर—यह स्वतन्त्र भारत का नक्शा है । इसकी सीमायें देखिए ।

तीसरा लड़का—यह तो कुछ कम मालूम होता है । पुराने नक्शे में हिन्दुस्तान इससे अधिक था ।

चौथा लड़का—हाँ, अब आजादी मिल गई है, इसलिए सीमायें कम हो गई हैं ।

पाँचवाँ लड़का—मास्टरजी, क्या हमें पूरी आजादी मिल गई है ?

मास्टर—पूरी तो नहीं; करीब-करीब पूरी समझो ।

पाँचवाँ लड़का—तो जब पूरी आजादी मिल जायगी तो ये सीमाएँ और भी कम हो जायँगी ?

छठा लड़का—जी हाँ ! ज्यों-ज्यों आजादी बढ़ती है, नक्शा कम होता जाता है ।

मास्टर—चुप रहो ।

छठा लड़का—बहुत अच्छा जनाव !

मास्टर—अच्छा, अब मैं इसकी सीमाओं का वर्णन करता हूँ । सुनो, उत्तर में कश्मीर...

छठा लड़का—कश्मीर क्यों ? कश्मीर तो हिन्दुस्तान में है ।

मास्टर—हाँ, हैं तो सही, मगर अस्थायी रूप से । अभी यह निर्णय नहीं हुआ है कि कश्मीर भारतवर्ष में रहेगा या बाहर चला जायेगा ।

छठा लड़का—मगर वहाँ तो हमारे सिपाही लड़ रहे हैं और रोज लाखों रुपये खर्च होते हैं आक्रमणकारियों को मार भगाने के लिए ।



मास्टर—तो फिर क्या होता है वहाँ ? लड़ाई के बाद लोगों से पूछा जायेगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं या बाहर जाना चाहते हैं ?

3 घटा लड़का—कश्मीर तो सदा ही से हिन्दुस्तान में था । भव हिन्दुस्तान के रहने वालों से यह पूछा जायगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना पसन्द करते हैं या नहीं ? और यदि उन्होंने पसन्द नहीं किया तो क्या होगा ?

मास्टर—तो सेना वापस युता सी जायगी ।

बोया लड़का—तो मतलब यह कि हम इसलिए लड़ रहे हैं कि कश्मीर की जनता लड़ाई के बाद यह फैसला कर सके कि वह हिन्दुस्तान में रहना चाहती है या बाहर जाना चाहती है ।

मास्टर—हाँ !

बोया लड़का—तो यह फैसला लड़ाई के बगैर भी हो सकता था ।

मास्टर—हाँ पूछ लिया जाय ? वहाँ हमारे दुश्मन जो मौजूद हैं ।

4 बोया लड़का—तो हमने क्या होता है ? दुश्मन से जायें कश्मीर को, हमें तो कोई लाभ है नहीं कश्मीर से ।

तीसरा लड़का—नहीं है तो क्यों लड़ रहे हैं हम कश्मीर में ? लड़ने हैं कश्मीरियों को । वे स्वयं ही अपने भाग्य का फैसला कर लेंगे ।

मास्टर—भारत में बात यह है कि कश्मीर का भारत के लिए क्या महत्व है ।

तीसरा लड़का—तो फिर हम बात की चोरना होनी चाहिए । दुनिया से साफ यह देना चाहिए कि कश्मीर हिन्दुस्तान का है और इसी सब धाड़ें बनाने हैं ।

5 मास्टर—तुम इतिहास नहीं समझते ।

तीसरा लड़का—माय समझा दीजिए ।

मास्टर—तो फिर सुनो—प्रायःकत हिन्दुस्तान की सीमा यह है—उत्तर में कश्मीर, दक्षिण में बंगाल...

तीसरा लड़का—लेकिन तो एक समय में हिन्दुस्तान का हिस्सा था ।

दूसरा लड़का—दुनिया की सबसे बड़ी जाति हैं !

मास्टर—दुनिया की सबसे बड़ी जाति हैं ।

दूसरा लड़का—ठीक है । अब आप पढ़ाइये (लड़का बंठ जाता है ।)

[ मास्टरजी रुमाल से चेहरे का पसीना पोंछते हैं और फिर से एक नक्शा उठाकर दीवार पर टांग देते हैं । फिर खांसकर । ]

—यह स्वतन्त्र भारत का नक्शा है । इसकी सीमायें देखिए ।

लड़का—यह तो कुछ कम मालूम होता है । पुराने नक्शे में हिन्दुस्तान इससे अधिक था ।

लड़का—हाँ, अब आजादी मिल गई है, इसलिए सीमायें कम हो गई हैं ।

लड़का—मास्टरजी, क्या हमें पूरी आजादी मिल गई है ?

—पूरी तो नहीं; करीब-करीब पूरी समझो ।

वाँ लड़का—तो जब पूरी आजादी मिल जायगी तो ये सीमाएँ और भी कम हो जायँगी ?

लड़का—जी हाँ ! ज्यों-ज्यों आजादी बढ़ती है, नक्शा कम होता जाता है ।

र—चुप रहो ।

लड़का—बहुत अच्छा जनाव !

—अच्छा, अब मैं इसकी सीमाओं का वर्णन करता हूँ । सुनो, उत्तर में कश्मीर...

लड़का—कश्मीर क्यों ? कश्मीर तो हिन्दुस्तान में है ।

—हाँ, हैं तो सही, मगर अस्थायी रूप से । अभी यह निर्णय नहीं हुआ है कि कश्मीर भारतवर्ष में रहेगा या बाहर चला जायेगा ।

छठा लड़का—मगर वहाँ तो हमारे सिपाही लड़ रहे हैं और रोज लाखों रुपये खर्च होते हैं आक्रमणकारियों को मार भगाने के लिए ।

मास्टर—तो फिर क्या होता है वही ? लड़ाई के बाद लोगों से पूछा जायेगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं या बाहर जाना चाहते हैं ?

छठा लड़का—कश्मीर तो सदा ही से हिन्दुस्तान में था । अब हिन्दुस्तान के रहने वालों से यह पूछा जायगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना पसन्द करते हैं या नहीं ? और यदि उन्होंने पसन्द नहीं किया तो क्या होगा ?

मास्टर—तो सेना वापस मुला भी जायगी ।

चौथा लड़का—तो मतलब यह कि हम इसलिये सज्ज रहें हैं कि कश्मीर की जनता लड़ाई के बाद यह फैसला कर सके कि वह हिन्दुस्तान में रहना चाहती है या बाहर जाना चाहती है ।

मास्टर—हाँ ।

चौथा लड़का—तो यह फैसला लड़ाई के बर्गर भी हो सकता था ।

मास्टर—बंसे पूछ लिया जाय ? वही हमारे दुश्मन जो मौजूद हैं ।

चौथा लड़का—तो इससे क्या होता है ? दुश्मन से जावे कश्मीर को, हमें तो कोई लाभ है नहीं कश्मीर से ।

तीसरा लड़का—नहीं है तो क्यों सज्ज रहें हैं हम कश्मीर में ? लड़ने हैं कश्मीरियों को । वे स्वयं ही अपने भाग्य का फैसला कर लेंगे ।

मास्टर—वास्तव में बात यह है कि कश्मीर का भारत के लिए बड़ा महत्व है ।

तीसरा लड़का—तो फिर एक बात की धोरण होनी चाहिए । दुनिया के साथ कह देना चाहिए कि कश्मीर हिन्दुस्तान का है और बाकी सब दावे फलान हैं ।

मास्टर—मुझ इतिहास नहीं समझते ।

तीसरा लड़का—छात्र सम्झा दीजिए ।

मास्टर—तो फिर मुझे—आजकल हिन्दुस्तान की सीमा यह है—उत्तर में कश्मीर, दक्षिण में मंचा—

तीसरा लड़का—मंचा भी तो एक कमाने में हिन्दुस्तान का हिस्सा था

मास्टर—हाँ, लेकिन अब वह स्वतन्त्र है ।

तीसरा लड़का—यानी अपने ही देश से स्वतन्त्र है । बहुत खूब !

मास्टर—तुम बातें मत करो । जो मैं कहता हूँ सुनते जाओ ।

तीसरा लड़का—बहुत अच्छा जनाब !

मास्टर—इसके पश्चिम में पश्चिमी पंजाब और पूर्व में पूर्वी बंगाल ।

तीसरा लड़का—पश्चिम में पंजाब है, पूर्व में बंगाल है ।

मास्टर—नहीं पश्चिमी पंजाब है इस तरफ और उस तरफ पूर्वी बंगाल ।

चौथा लड़का—लेकिन पहले पंजाब तो इस नक्शे में शामिल था और बंगाल भी सारा-का-सारा ।

मास्टर—हाँ, मगर अब आजादी आ गई है । पंजाब दो हो गए हैं एक पश्चिमी पंजाब, एक पूर्वी पंजाब । यही हाल बंगाल का हुआ है ।

चौथा लड़का—लेकिन पंजाब तो दो नहीं थे; बंगाल भी एक ही था—एक भाषा, एक लोग, एक राष्ट्र, एक वेश-भूषा एक लोक संस्कृति, एक लोक-कथायें, एक लोक-गीत !

मास्टर—नहीं, अब ये लोग दो जातियों में, दो राष्ट्रों में बँट गए हैं—पूर्वी पंजाबी और पश्चिमी पंजाबी; इसी तरह पूर्वी बंगाली और पश्चिमी बंगाली ।

चौथा लड़का—तो इस तरह उत्तरी और दक्षिणी बिहारी और उत्तर प्रदेश की जातियाँ भी बन सकती हैं । यानी जाति और राष्ट्र क्या हुए भूगोल का नक्शा हो गया ।

मास्टर—तुम्हारी तो शंका करने की आदत है ।

चौथा लड़का—साहब, आप ही ने तो कहा था कि खूब शंकायें किया करो; इससे समस्या के सभी पहलुओं पर रोशनी पड़ती मगर यहाँ तो अँधेरा बढ़ता ही जाता है । खैर, आगे बताइये ।

मास्टर—आगे क्या बताऊँ, खाक ! तुम लोग सुनते ही नहीं हो । देखो, अब कोई बोला तो इस हण्टर से खाल उधेड़ दूंगा ।

आजादी का यह मतलब नहीं कि जो जी में चाहे वैसे बसे जायें। तुम लोग विचार्यो हो, बहुत-सी बातें नहीं जान सकते। हमसे सीखो।

पंचा सङ्का—बहुत अच्छा सर !

मास्टर—तो अच्छी तरह से जान लो कि ये हैं स्वतन्त्र भारत की सीमाएँ।

पंचा सङ्का—मास्टरजी, तो इस कमरे में बादशाह आज पंचम और विक्टोरिया महारानी की ससवीरें क्यों टँगी हुई हैं। यहाँ तो महारानी गांधी और जवाहरलाल नेहरू और बल्लभभाई पटेल की ससवीरें होनी चाहिए।

मास्टर—बात तो ठीक है, बेटा ! मगर बात वास्तव में यह है कि हम लोग अभी तक एक विशेष रूप में इंग्लैण्ड के सम्राट की प्रथा है।

पंचा सङ्का—ऐसा क्यों ? सर दूसरे सम्राट् महाराजों नेहरू नहीं हैं ?

मास्टर—नहीं बेटा ! और अब सम्राटों का शासन नहीं होगा। सच्ची आजादी में तो जनवादी शासन होता है।

पंचा सङ्का—जनवादी शासन किसे कहते हैं ?

मास्टर—यही—सर्वसाधारण जनता का शासन। ऐसा शासन जिसमें तुम लोग, तुम्हारे माता-पिता, काम करने वाले लोग, क्लर्क, किसान, मजदूर, नौकरी पेसा, कर्मचारी, दुकानदार—सभी सम्मिलित होते हैं।

पंचा सङ्का—तो अपने लोगों में तो ये लोग शामिल नहीं, फिर आजादी के बाद इन लोगों की ससवीरें क्यों यहाँ पर है ?  
ससवीरें उतार दीजिए। यहाँ हम अपने  
लगायेंगे।

[सहसा 'नहीं सर ! हां सर !' का शोर-गुल बढ़ता जाता है ।  
बच्चे उठकर उन तसवीरों को उतार देते हैं और उनकी जगह बड़े-  
बड़ नेताओं की तसवीरे लगा देते हैं । मास्टरजी नई तसवीरें  
देखकर मुस्कराने लगते हैं ।]

लड़के—भाजाद हिन्दुस्तान जिन्दाबाद !

जय हिन्द !

जवाहरलाल नेहरू जिन्दाबाद !

वल्लभ भाई पटेल जिन्दाबाद !

एक लड़का—जम्मन जिन्दाबाद !

[सब लड़के चुप रहते हैं ।]

मास्टर—अरे, यह जम्मन कौन है ?

जम्मन का बेटा—मेरे पिताजी थे मास्टरजी ! वह भिण्डी बाजार  
के ताके पर मोची का काम करते थे, मास्टरजी ! देखिए,  
यह उनकी तसवीर है । इसे भी यहाँ लटका दीजिए ।

मास्टर—अरे, पागल है तू ?

जम्मन का बेटा—नहीं मास्टरजी ! इसे जरूर टांग दीजिए ।  
मेरे पिताजी ने भी आजादी के लिए जान दी है ।

मास्टर—अरे वेवकूफ ! ऐसे तो हजारों आदमियों ने जाने दो हैं ।  
सबकी तसवीरें यहाँ थोड़े ही टांग सकते हैं ?

जम्मन का बेटा—लेकिन वह मेरे पिताजी थे, मास्टरजी ! वह  
एक गरीब मोची थे । हम लोग बड़ी मुश्किल से अपना पैट  
पालते थे । वही हमारा सहारा थे और वह आजादी के लिए  
मर गए । मास्टरजी, अमीर आदमी के लिए मर जाना  
आसान होता है, गरीब आदमी का मरना मुश्किल होता है ।  
मास्टरजी, यह तसवीर जरूर टांग दीजिए यहाँ ।

मास्टर—नहीं, यह तसवीर इतने बड़े लीडरों के साथ नहीं लगाई  
जा सकती ।

जम्मन का बेटा—वह मेरे पिताजी थे मास्टरजी ! वह बहुत

गरीब थे। उन्होंने जीवन-भर जूते सिये। और कपड़े और मुस्लिम लीग और सोशलिस्ट पार्टी न जाने क्या-क्या, वह हर पार्टी के जेबों में जाकर बालन्दियर बन जाते थे और लोगों को पानी पिताते थे। और सुबह से शाम तक काम करते थे। कहते थे, यह पुण्य का काम है। और हम उन लोग दिनों घबराकर भूखे रहा करते थे।

मास्टर—(तत्सवीर फाड़कर फेंकता है।) यह तत्सवीर यहाँ नहीं लगाई जा सकती।

जन्म का घेडा—आज दूसरी बार मेरे पिताजी को गोली लगी है। पहली बार उन्हें गोली भिण्डी बाजार में लगी, जब जहाजी मल्लाहों ने हड़ताल की थी और बम्बई के सभी नागरिकों ने उनका साथ दिया था और गोरे गोलियाँ बरसाते हुए भिण्डी बाजार में निकल आए थे। जब नौसैनिकों ने आजाद हिन्दुस्तान के नारे लगाये तो मेरे पिताजी भी अपना हथौड़ा उठाकर उनमें मग्नित हो गए। और जब गोरे ने गोलियाँ चलाई तो मेरे पिताजी ने भापी नहीं मानी, उन्होंने पीठ नहीं दिखाई, वे भागे नहीं मास्टरजी! उन्होंने अपने बन्धों का खयाल नहीं किया, उन्होंने हमारी भूख और उपवासों के बारे में नहीं सोचा, हमारे नंगे शरीरों का खयाल नहीं किया। उन्होंने हँसते-हँसते हथौड़ा ऊपर उठाया और बढ़कर गोरे की गोली के बार को अपनी छाती पर रोक। वह पहली गोली थी जो मेरे पिताजी के सीने में लगी; यह दूसरी गोली है जो आज उनकी तत्सवीर को फाड़कर उनके सीने पर चलाई गई है। (कुछ सड़के तत्सवीर के टुकड़े इकट्ठे कर रहे हैं। वे तत्सवीर को धंग से बिपकाकर उसे दीवार पर लगा देते हैं। मास्टर हीरत से ताकता रह जाता है।)

सब लड़के — जम्मन जिन्दावाद !

जम्मन जिन्दावाद !

जम्मन जिन्दावाद !

[घन्टी बजती है । परदा गिरता है ।]



## मेरा दोस्त

मेरा दोस्त—लेकिन मैं अपने किस-किस दोस्त का जिक्र करूँ ? मेरा दोस्त एक तो यह है जो जरा कवि-हृदय है; और जो मुझसे बातें कम करता है, लेकिन मेरी पत्नी से ज्यादा बातें करता है। कहीं आप हमका उलटा-सीधा मतलब न ले लें। वास्तव में वह बड़ा ही निरीह प्राणी है और ज्यादातर मेरी पत्नी से मेरे बारे में ही बातें करता रहता है। बड़ी ही मामूली भोली-भाली बातें होती हैं वे।

उदाहरण के तौर पर उसे मायूम है कि मैं खाने में कद्दू से बहुत घृणा करता हूँ। उस हर एक चीज से जो देखने में या खाने में कद्दू से समता रखी है, मुझे अत्यधिक घृणा है—फिर चाहे वह भादमी हो या सच्ची-तरकारी। मेरा दोस्त इस बात को अच्छी तरह जानता है। इसीलिए वह बड़ी ही दीनता से मेरी, पत्नी से कहता है :

“मैं देख रहा हूँ कि कुछ दिनों से आपके पति का चेहरा उतरा-उतरा-सा है।”

पत्नी कहती है—“हाँ, मैं भी कुछ ऐसा ही अनुभव करती हूँ।”

कवि-हृदय मित्र कहता है—“कहीं खाने में कोई कमी तो नहीं होती ?”

“नहीं तो !” पत्नी इस बार बड़े विश्वास से कहती है।

कवि-हृदय दोस्त सिर हिसाकर कहता है—“फिर उनके

लेकिन मेरा दोस्त जो मुझे कट्टू सिखाता है, उस दोस्त के साथे हँस है जो मुझे गम सिखाता है। और आप जानते हैं कि कट्टू माने में और गम खाने में और गम खाने में बहुत अन्तर है, यद्यपि स्वाद दोनों का बुरा होता है। फिर भी कट्टू खाते-खाते आपकी क्षय नहीं हो सकता, लेकिन लगातार गम खाने से हो सकता है। इसलिए आपने उस दोस्त को, जो मुझे अक्सर गम सिखाता है, मैं अभी नहीं भूल पाता।

उसकी टंकनिब भी अजीब है। दूसरे दोस्त तो उस समय पर मेरे जाने के जब मैं घर पर होता हूँ, वह आम तौर पर उस समय आता है जब मैं घर पर नहीं होता। वह बड़ी जल्दी में तेज चरण उठाता हुआ अन्दर दाखिल होता है और आते ही मुझे जोर-जोर से आवाजें देने में जुट जाता है। फिर टेबल पर पड़े हुए पुस्तक में से अक्षर, नामपाती खाने में तल्लीन हो जाता है और आप-ही-नाम मेरी पत्नी से बार्ने भी करता जाता है।

"आश्चर्य है, अभी तक नहीं आये?" वह सवाल करता है।

मेरी पत्नी कहती है—"इसमें आश्चर्य की क्या बात है? वह अक्सर इस समय घर पर नहीं होते।"

'आश्चर्य की बात है, मुझसे तो इस समय मिलने को कहा था। दोपहर को सिनेमा के अन्दर जाने हुए मिले थे।'

'सिनेमा के अन्दर जाने हुए?' मेरी पत्नी धबकाकर पूछती है।

'हाँ हाँ!'" मेरा दोस्त घट्टों का एक गुच्छा मुँह में डालकर

बताव देता है "उनके माथ में सम्मिलित आपकी वही रिश्तेदार थी, जो बरान-ही है और खूबनूरत बड़ी-बड़ी घाँवें और बाल मुंहवरे बिचे हुए।"

'लेकिन की तो कोई ऐसी रिश्तेदार नहीं है,' मेरी पत्नी जोर से धबकाकर बताव देती है, 'जो खूबनूरत हो, जवान हो जो जिसने नाम मुंहवरे बिचे हुए हों।'

वह मेरी मुनता ही नहीं ! कम्बस्त ! जातिम बदमाश !”

और वह—मेरी पत्नी—रो-रोकर कहती है, “बस, उनके दोस्तों में मे तुम्ही सबसे अच्छे हो ।”

“भाभी, तुम्हारी जेब में दस रुपये हैं ?” मेरा दोस्त बड़े भोले-पन से पूछता है और फिर वह दस रुपये लेकर चला जाता है । जब मैं घर में आता हूँ और देखता हूँ कि घर में बिजली ‘फेल’ हो चुकी है और मोमबत्ती की रोशनी में दस्तरखान पर सेब के टुकड़े पड़े हैं और मेरी पत्नी मायके चली गई है तो मैं फौरन समझ जाता हूँ कि मेरा दोस्त माया होगा । वही मेरा दोस्त जो हमेशा मेरी अनुपस्थिति में आता है और दस बीस रुपये लेकर मेरी पत्नी का सामान बँधवाकर उसे मायके भेज देता हैं । दोस्त और दुश्मन की पहचान एक यह भी है कि दुश्मन आप पर पुरुषोचित या पुरुषों की ओर से हमला करता है, दोस्त ‘स्त्रियोचित’ या स्त्रियों की ओर से भी हमला कर सकता है ।

लेकिन यह तो जाहिर है कि इस तरह दस-बीस रुपये खोने में मेरा अधिक नुकसान तो हो नहीं सकता, लेकिन धराइए नहीं, इसके लिए मेरा दूसरा दोस्त विद्यमान है जो उस काम को वहाँ से शुरू करता है जहाँ से मेरे पहले दोस्त ने उसे भ्रूत छोड़ा था । दोस्त और दुश्मन की एक पहचान यह भी है कि दुश्मन दुश्मन की मदद नहीं करता, लेकिन दोस्त दोस्त की मदद अवश्य करता है । कुछ लोगों का समझ है कि सच्चा दोस्त वही है जो मुसीबत में मदद करता है । मेरा अनुभव यह बनलाता है कि सच्चा दोस्त न केवल मुसीबत में मदद करता है, बल्कि वह मुसीबत भी खुद ही लाता है । और एक मुसीबत ही नहीं, बल्कि बहुत सारी मुसीबतें एकट्ठी करके ले आता है, ताकि मदद करने में भासानी रहे ।

एक इसी तरह का सच्चा दोस्त मेरा वह दोस्त है जो मुझे भवसर कोई-न-कोई नया विजनेस शुरू करने के लिए कहता रहता है ।

उदाहरण के तौर पर एक दिन वह मुभसे कहने लगा—  
“भई, तुम हाथ-पर-हाथ घरे क्यों बैठे रहते हो ? कोई बड़ा धन्धा  
क्यों नहीं करते ?”

“क्या करूँ ?”

‘फिल्म का बिजनेस करो । बड़ा नफा है । बड़ा धन्धा है ।  
वह तुमने फिल्म देखी थी ‘बन्दर रेखा’ ? कहते हैं उसमें प्रोड्यूसर  
को ढाई करोड़ का फायदा हुआ ।”

परिणाम यह हुआ कि हमने अपने दोस्त की बातों में आकर  
सात लाख का नुकसान कर डाला । बड़ा धन्धा था, इसलिए और  
सबको फायदा हुआ सिवाय हमारे । अब हमारे दोस्त ने कहा,  
“वास्तव में देखा जाय दोस्त, तो बड़े धन्धे में बड़ा खतरा है । अब  
तुम छोटा धन्धा करो ।”

“कौन-सा छोटा धन्धा करूँ ?”

“यही पान की दुकानें ! बहुत-सी खरीद डालो । शहर में हर  
नुकड़ पर पान की तुम्हारी दुकान हो जाय । और हर दुकान पर  
तुम्हारा अपना नौकर हो । कम-से-कम सौ-पचास दुकानें खोल लो ।  
छोट-सा धन्धा है । हर दुकान से रोज पाँच रुपये नफा आता है ।  
सौ दुकानों का पाँच सौ रुपये रोज आयगा । साल-भर का तुम  
हिसाब कर लो ।

बड़ा खूबसूरत-सा छोटा-सा धन्धा था ! साल-भर के बाद  
हिसाब किया । मालूम हुआ कि इससे तो फिल्म का धन्धा क्या बुरा  
था ! ‘बन्दर रेखा’ बनाते-बनाते बनारसी पान बेचने लगे । मालूम  
हुआ शहर के बीच में जो बड़ा होटल अपना था वह अब अपना नहीं  
रहा है । मकान भी अपना नहीं है और मोटर दोस्त ने गिरवी रख  
ली है । और अब वह उसके स्टियरिंग व्हील पर सिर झुकाकर मुभसे  
कहता है—“दोस्त, ये सब धन्धे पुराने हो चुके । अब कोई नया  
धन्धा करो ।”

“कौन-सा नया धन्धा ?”

“प्लास्टिक की  
घोटियाँ (वेणिर्मा)  
तैयार करो !”

इसलिए भयभीत  
बार मैंने नया घन्था  
किया । यह मेरा  
आखिरी घन्था था ।  
मैंने प्लास्टिक की  
घोटियाँ और घुड़ियाँ  
तैयार की और फिर  
उन्हें पहनकर भयभीत  
पर बैठ गया । अब  
छोटे-बड़े नये-पुराने सब  
घन्थे छारम हो चुके ।



यद्यपि घन्थे समाप्त हो जाते हैं, दोस्त कभी समाप्त नहीं  
होते । इसके अतिरिक्त दोस्त और दुश्मन की एक पहचान यह भी  
है कि आदमी दुश्मन का मुकाबला कर सकता है, लेकिन दोस्त का  
मुकाबला किसी हासल में नहीं कर सकता । ऐसा करना मित्रता के  
विरोध होगा । इसका अनुभव मुझे हाल की अपनी बीमारी के दौरान  
में हुआ । क्योंकि जैसा कि बड़े-बूढ़ों ने कहा है, जब सब घन्थे छारम  
हो जाते हैं तो बीमारी शुरू हो जाती है । भयभीत बार मुझे मेरे  
डॉक्टर दोस्त ने बताया कि मुझे कुछ न होने की बीमारी है । आप  
यह सुनकर जरूर हँसान होंगे कि यह कुछ न होने की बीमारी क्या  
होती है । जहाँ सुनिश्च, बीमारियाँ दो तरह की होती हैं—एक तो  
ओ होती है, जहाँ आपको सररी होगी मुझे गरमी होगी, घावको  
देखिए होगी मुझे टिक (छाप, घरमा) होगी, घावको कोड़ होगी  
मुझे हँस होगी—ये तो हुई होने की बीमारियाँ । दूसरी होती है न

होने की बीमारियाँ, जिसमें कुछ न होने के कारण कुछ-न-कुछ हो जाता है। उदाहरण के लिए यदि आपके बदन में कैल्शियम नहीं होता है तो आपको कैल्शियम न होने बीमारी हो जाती है; लोहा नहीं होता है तो लोहा न होने की बीमारी हो जाती है। इसी तरह विटामिन, फासफोरस, नमक, मिट्टी का तेल नहीं होता है तो शरीर का स्टोव (अंगीठी) बुझा-बुझा-सा रहता है। इसलिए अब की मेरी हाल की बीमारी शरीर में आयोडीन न होने के कारण थी। डॉक्टर ने उस कमी को पूरा करने के लिए मुझे एक बढ़िया-सा इंजेक्शन दिया और चला गया। उसके बाद मेरी शायद आई मेरा मतलब है, मेरा दोस्त आया।

मेरा यह दोस्त बड़ा मासूम और भोला-भाला है। इसकी वेश-भूषा ढीली-ढाली है और वह देशी टोने-टोटको का मतवाला है, यानी बिल्कुल गड़बड़भाला है वह आते ही लम्बोतरा-सा मुँह बना-कर मेरे सिरहाने बैठ गया और मुझसे पूछने लगा—

“क्या तकलीफ है दोस्त?”

“शरीर में आयोडीन नहीं है।”

“तो टिक्चर आयोडीन पीयो; मेरे घर पर रखी है।”

मैंने कहा—“टिक्चर आयोडीन पीते नहीं, लगाते हैं।”

वह बोला—“मेरे खयाल में घोड़ों को पिलाते हैं।”

मैंने कहा—“मैं घोड़ा नहीं हूँ।”

वह बोला—“माफ करना, मैं भूल गया; मैंने समझा, मैं रेस कोर्स में बैठा हूँ।”

इसके बाद थोड़ी देर तक वह चुप रहा। फिर सोच-विचारकर बोला, “मेरे खयाल में तो तुम हल्दी पीयो तो अच्छा है।”

मैंने कहा—“तुम्हें हल्दी का खयाल क्यों आया?”

वह बोला—“हल्दी और आयोडीन का रंग मिलता है, इसलिए स्वभाव भी मिलता होगा और गुण-धर्म भी। इसलिए तुम हल्दी अवश्य पीयो। बिल्कुल ठीक हो जाओगे। मैं सब समझता हूँ।

देतो, घब तुम जिद न करो । तुम नही समझते हो ; मैं तुम्हारे भले के लिए कह रहा हूँ ।”

मेरे दोस्त में यह बड़ी खूबी है कि वह सब समझता है और मैं कुछ नहीं समझता हूँ । वह सब-कुछ जानता है और मैं कुछ नहीं जानता हूँ । वह सब-कुछ देखता है और मैं कुछ नहीं देखता हूँ । यद्यपि मेरा दोस्त डॉक्टर, वैद्य या हुकीम नहीं है तो क्या हुआ ? वह नहीं है, मगर उसका दावा तो था । और उसके दावा जी के बताये हुए टोटके आज तक हमारे घर से दमशान भूमि-तक चलते हैं । इसलिए उसने भाग्य करके मुझे हल्दी पानी में घोलकर पिलाई । फिर मेरे पेट पर हल्दी का लेप कर दिया । मेरी थायों में हल्दी का सुरमा लगा दिया और मेरे माथे पर हल्दी बिछेरकर मुझे अपनी समझ में परतोक पहुँचाकर मुझसे विदा हो गया ।

यही सच्चे दोस्त और दुश्मन की पहचान है कि दुश्मन आपकी अच्छाइयों पर निगाह रखता है, आपकी कमजोरियों पर हमला करता है । दोस्त आपकी अच्छाई, कमजोरी और बीमारी तीनों पर निगाह रखता है, और वारों तन्फ में हमला करता है । दुश्मन का वार कभी-न-कभी माली बसा जाता है, लेकिन दोस्त का वार कभी सली नहीं जाता ।

परन्तु मेरा दोस्त अपने परिवार के परम्परागत टोटकों के परिणामस्वरूप भर गया, और मरते समय मुझे एक विषय, ग्यारह सच्चे और बहुत से लम्बे-चोड़े कर्जों की जिम्मेवारी सौंप गया । बसीयत में अपना गुजली खाता भुत्ता भी मेरे सुपुर्द कर कर गया । पाश्चात्य में उत गुजली खाते भुत्ते को नहानाता हूँ और सोचना है कि दुश्मन को दुश्मनी उसके मरने के बाद समाप्त हो जाती है, लेकिन दोस्त की दोस्ती उसके मरने के बाद भी बिटमान रहती, यद्विक् ॥ प्रत्येक एक आपका साव देती है ।

हैं। हद तो यह है कि मोर्हे मुँढाने वाली और पलकें चुनने और सारे चेहरे की 'शेव' करने वाली हिरोइनों ने भी इस को स्वीकार कर लिया। यह फैसला इस बात का सबूत है कि देश बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है और कम-से-कम एशिया फ़ैम इंडस्ट्री के नेतृत्व का एकाधिकारी बन सकता है।

कॉन्फ़ेस का उद्घाटन देश के प्रसिद्ध नेता श्री जी० के० काक-ने किया। उद्घाटक महोदय का नाम ऐसा है कि जो पब्लिक यूनिटी-एक्ट के अन्तर्गत आता है। लेकिन चूंकि यह नाम श्रीपुत टेल के माता-पिता ने उस समय रखा था जबकि देश में शराब-कातून प्रचलित नहीं हुआ था, इसलिए शासन ने इस नाम पर 'एक्शन' लेना ठीक नहीं समझा। इन साहज की देश-सेवा का प तीन बार जेल और दो बार पागलखाने जा चुके हैं। रिकार्ड में स्पष्ट है कि कई मज्जनों ने उन्हें बार-बार यह समझाया कि वह केवल अपना नाम बदल दानें तो देश में ऊँची-से-ऊँची भी प्राप्त कर सने हैं। लेकिन श्री जी० के० काकटेल चूंकि नि डंग के भादमी हैं इसलिये समझाने-बुझाने पर भी अपना नामा डंग नहीं बदलते; और उसी पुराने ढर्रे पर, जिसने आज तक रतवर्ष के पुराने रीति-रिवाजों की जीवित रसा है, चले जाते हैं। ही लोगो ने हिन्दुस्तान को वहाँ ही रखा है जहाँ कि वह ज है।

श्री जी० के० काकटेल का प्रारम्भिक भाषण बहुत ही जोर-शोर, तर्कसंगत, धवसार के उपयुक्त, विद्वत्तापूर्ण और विषय के अनु-प था। ऐसा भाषण वही भादमी दे सकता है जिसने कम-से-कम दोस साल तक देशसेवा की हो और जो छः बार पुलिस से पिटा जा हो। ऐसा भाषण वह भादमी कभी नहीं दे सकता जिसे जेल में अभी 'ए' ब्लाक नहीं मिला हो। भाषण के दौरान में इतनी बार जोर-शोर से तालियाँ पीटी गईं कि सुकुमार भारतीय तारिखों की तालियाँ मूज गईं और होत में डॉक्टरों को 'फ़ैस्ट एड' करना पड़ा।



श्रीयुत जी० के० काकटेल ने अपने भाषण में यह प्रमाणित किया कि “वास्तव में हिन्दुस्तानियों ने ही फिल्मों का आविष्कार किया है और महाभारत के युद्ध की वह पूरी तस्वीर, जो संजय ने धृतराष्ट्र को दिखलाई थी, असल में एक फिल्म ही थी। भारत की पहली बोलती-चालती, लडती-झगड़ती हिन्दुस्तानी फिल्म—जो संस्कृत भाषा में तैयार की गई थी। (मजे की बात है कि यह फिल्म टेकनीकलर में थी)। महाभारत के युद्ध के बाद भारतीय समाज का ढाँचा ही बिखर गया। और इसलिए यह पुरानी इंडस्ट्री भी दूसरे उद्योगों के साथ नष्ट-भ्रष्ट हो गई। बाद में पश्चिम के वैज्ञानिकों ने हमारे वेद और पुराणों का अध्ययन करके वर्तमान ‘स्क्रीन’ का अनुसंधान किया। लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तान में ही सारी दुनिया से पहले फिल्में बनीं और इन फिल्मों के आविष्कार का श्रेय हिन्दुस्तान उर्फ भारत को ही प्राप्त है।

“न केवल फिल्म बल्कि एटम बम के आविष्कार का सेहरा भी हिन्दुस्तान के सिर है। (तालियाँ) और अगर कभी हाइड्रोजन बम बना तो आप देखेंगे कि इसके बनाने की तरकीब भी हमारे वेद-ग्रन्थों से ही चुराई जायगी। (तालियाँ) क्या मैं पूछ सकता हूँ कि पौराणिक इतिहास में शिवजी महाराज के जिस ताण्डव का वर्णन है और जिससे सारी दुनिया में प्रलय मच गया था, वह आखिर क्या था? असल में वह एक एटम बम था, जिसे उस युग में योग-बम कहते थे। दुःख है कि हमारी आपसी फूट के कारण यह आविष्कार भी हमारे हाथ से निकल गया और आज पराये इस बम की बदौलत सारी दुनिया पर शासन कर रहे हैं। मैं हिन्दुस्तान के कर्णधारों से निवेदन करना चाहता हूँ कि आज भी वे मानसरोवर के किनारे तपस्या करके योग-बम को प्राप्त कर सकते हैं और इस तरह हिन्दुस्तान 1 विलुप्त गौरव पुनः स्थापित किया जा सकता है। (तालियाँ) इसके लिए बीस वर्ष तक योगाभ्यास करना होगा। है कोई लीडर जो यह काम कर सके? (तालियाँ) ”

इस पर एक यू० पी० की प्रतिनिधि हिरोइन ने, जिसे आज-कल कोई काम नहीं मिल रहा था, चिल्लाकर कहा—“तुजूर क्यों न तशरीफ ले जायें !” लेकिन शीघ्र ही उसकी यह आवाज ‘शेम-शेम’ के नारों में दबा दी गई ।

श्री जी० के० काकटेल ने मेज पर मुक्का भारकर कहा—“मैं जानें के लिए तैयार हूँ, मगर क्या आपमें से भी कोई धाने के लिए तैयार है ? (तालियाँ—पूर्ण निस्तब्धता) देखा, यह है इस देश की फूट का नतीजा ! कोई किसी का भरोसा नहीं करता । मजदूर पूँजीपति का भरोसा नहीं करता, विद्यार्थी प्रोफेसर का भरोसा नहीं करता और हिरोइन लीडर का भरोसा नहीं करती । आपसी फूट ने हम सबको एक-दूसरे से मतलब कर रखा है । भाग्यो, हम एक-दूसरे के गले लग जायें और सारी दुनिया का बता दें कि हम सब भाई-भाई हैं ।”

‘भाई और बहन,’ एक हिरोइन बोली ।

श्रीयुत काकटेल ने उसे धुरकर देखा । नई हिरोइन को एक माँख नकली और काँच की थी, इसलिए वह बड़ी आसानी से श्री काकटेल के धूरने को सह गई । श्री काकटेल ने अपना हाथ उठकर घेंगुली हवा में खड़ा करके कहा—“क्षमा कीजियेगा, चुभती हुई बात कहता हूँ, मगर आपमें से भी बहुत-सी हिरोइनें ऐसी हैं जिन्हें अपने देश की उन्नति का कोई खयाल नहीं ।”

सब हिरोइनें एक-दूसरे की ओर देखने लगी । “नहीं, नहीं ! यह कैसे हो सकता है,” मिस फीतावासी ने कहा । “यह बिल्कुल असंभव है,” वह हिरोइन धमककर बोली, जिसकी तस्वीर धक्कर साबुन के बिजापनों के सिवा और कहीं दिखाई नहीं देती ।

श्री काकटेल ने चिल्लाकर कहा—“मैं उन हिरोइनों की बात करता हूँ, जो हमारे देश को थोखा देकर पाकिस्तान चली गई ।”

इस वर डेंतीगेट औरनें ही नहीं, पूरा उपस्थित समुदाय गुस्से में घांप से बाहर हो गया और चीख-ओख कर कहने लगा—“पाकि-

स्तान हिरोइन मुर्दावाद ! पाकिस्तान हिरोइन मुर्दावाद ! पाकिस्तान  
हिरोइन मुर्दावाद !”

“इन्कलाव जिन्दावाद !”

“हम पाकिस्तानी हिरोइन की फिल्म...”

“नहीं देखेंगे।”

“इन्कलाव जिन्दावाद !”

श्री जी० के० काकटेल के चेहरे पर आनन्द की एक रेखा उभर आई। अपने श्रोताओं को शान्त करते हुए उन्होंने कहा, “यह ‘स्पिरिट’, जो आज आप में पैदा हो रही है, उस समय हिन्दुस्तानी हिरोइनों में मौजूद होती तो देश का बँटवारा कभी न हो पाता, क्योंकि यह बात हर आदमी जानता है कि राजनीतिक लीडरों के वाद इस में अगर जनता किसी को चाहती है तो वे हिन्दुस्तानी हिरोइनें हैं। (‘हियर-हियर’ और तालियाँ) मैं कहता हूँ इस समय देश का भाग्य हिन्दुस्तानी हिरोइनों के हाथ में है। क्योंकि राजनीतिक नेताओं को तो इस समय शासन-कार्यों से ही फुरसत नहीं है, इसलिए इस समय हिन्दुस्तानी हिरोइनों को कार्य-क्षेत्र में उतर आना चाहिए। (तालियाँ) देखिए, आपके आसपास के देश में क्या हो रहा है? चीन में, इण्डोचाइना में, बर्मा में, मलाया में, चारों तरफ आग लगी हुई है। इस आग को बुझाना आपका कर्तव्य है।”

मिस कुरकुरी बोली—“साहब, यह फायर-ब्रिगेड वालों की कान्फ्रेंस नहीं है। यह तो हिरोइन्स...”

“शट अप !” ‘दिल की गृहस्थी’ उर्फ ‘हुकुम का इक्का’ की साइड हिरोइन मिस ओम्मा ने चिल्लाकर कहा। और फिर उसने श्री जी० के० काकटेल की ओर मुड़कर कहा—“साहब, आप अपना भाषण जारी रखिए। इसकी कोई परवाह न कीजिये। एतराज करने वाली हिरोइन नहीं है; खाली एक प्लेबैक सिंगर है।”

“और मुर्दार, तू कहाँ की हिरोइन है? कल की एक्स्ट्रा हमारे सलाम करती थी। आज उस डाइरेक्टर दुखियानन्दन की

मेहरबानी .. से”

“मिस कुरकुरी और मिस घोमा आपस में गुंथ गईं। हाल में शोर मच गया। ‘पकड़ो’ ‘निकात दो’ ! ‘मारो’ ! ‘भागो !’ की आवाजें बुलन्द हुईं। किसी तरह दो-तीन भारी-भरकम हिरोइनों ने बीच-बचाव करा दिया। और किसी ने श्री जी० के० काकटेल से भी कहा—“धब जल्दी से भापण पूरा कीजिए, वरना यही दफा १४४ लागू हो जायगी।”

श्री जी० के० काकटेल अवसर की नाजुकता को समझ गए। भापण समाप्त करते हुए बोले...“बस, इन्हीं बातों से फिल्म-उद्योग बदनाम है और इसीलिए गवर्नमेण्ट इसकी मदद नहीं करती। आप लोगो की चाहिये कि मिल-जुलकर रहें, सड़र पहनें, गुड खाएँ और एक वक्त उपासे रहें। सर्वोदय के प्रोत्साहन पर प्रावरण करने से फिल्म-इण्डस्ट्री का नैतिक स्तर बहुत ऊँचा हो जायेगा और आप लोग बहुत अच्छी-अच्छी फिल्में बना सकेंगे। मैंने आज तक अपने जीवन में दो फिल्में देखी है—एक तो हेमलेट की कामेडी, जो इतनी अच्छी फिल्म थी कि मैं हँसते-हँसते दोहरा हो गया और दूसरी एक ट्रेजेडी थी, जिसमें तारेस और हाईकी ने काम किया है। क्या बताऊँ इन दो आदमियों का काम देखकर मेरे दिल पर क्या गुजरी ! मत पर इतनी उदासी छा गई कि मैं घण्टों रोता रहा। अगर आप लोग भी हेमलेट-जैसी कामेडी और सारेस-हाईकी जैसी ट्रेजेडी बना सकें तो दुनिया की कोई शक्ति हिन्दुस्तान की फिल्म इण्डस्ट्री के सामने नहीं टिक सकती।

“अच्छा, अब मैं समाप्त करता हूँ, यद्यपि जी तो नहीं चाहता लेकिन...”, और। जयहिन्द !”

(तालियाँ और तानियाँ और तानियाँ)

उद्घाटन-भाषण के बाद मिस चमेसी गुग्गु के भोंके उड़ाती हुई स्टेज पर उपस्थित हुई। मिस चमेसी ने उस समय एक काले रंग की साड़ी पहन रखी थी—बाल में चूड़ियाँ की चूड़ियाँ जड़े

ईरानी बिल्ली इठला रही हो; मुस्कराहट में ऐसा आकर्षण जैसा भारत-सरकार के लिये अमरीकन कर्जों में होता है। हाल की तेज रोशनी में उसकी श्वेत, शीतल, रेशमी त्वचा इस तरह चमक रही थी जैसे रेफ्रिजरेटर में रखी हुई दूध की बोतल।

मिस चमेली कान्फ्रेंस की सेक्रेटरी हैं और भारतीय फिल्मकारों की राय में इस समय की सौन्दर्य-साम्राज्ञी हैं। आपके पास इन दिनों पचास काण्ट्रैक्ट हैं; और तीन हवाई जहाज हैं और ग्यारह कुत्ते। आपका भाषण मुझे ज्यादा दिलचस्प नहीं लगा, क्योंकि दुर्भाग्य से यह भाषण मुझी को लिखना पड़ा था। मिस चमेली ने मुझे इसका मेहनताना सिर्फ पचास रुपये दिया था और 'बाकी पचास फिर कभी दूंगी' कहकर टाल दिया था। मैंने इसीलिये भाषण में मुझे दिये जाने वाले कम मेहनताने का खयाल रखा था। भाषण अत्यन्त फीका, ढीला-ढाला, अत्यधिक भावुकता से भरा और कवित्वमय था। मैं जानता था कि मैं कुछ भी क्यों न लिखूँ, लोग हँसेंगे नहीं, वे तो खाली अपनी सौन्दर्य-साम्राज्ञी को देखकर तालियाँ बजायेंगे और गीत गाएँगे। और हुआ भी ठीक यही। स्टेज पर आते ही तालियाँ, सीटियाँ और आवाजें शुरू हो गईं। ज्योंही मिस चमेली ने कहा— "वहनों और भाइयो" कि "हाय जी, मार डाला ! जालिमो, जरा इधर भी तो देखो ! मैं कुर्बान ! यह काली साड़ी ! यह काली नागिन है या क्यामत है ! जरा वो सुना दो कालेज की छोरी अब तेरे सिवा नहीं...पतली कमरिया तिरछी नजरिया...डडा डडा डा।" की आवाजें उठने लगीं।

सम्भव है कि कुछ और गड़बड़ हो जाती, लेकिन कान्फ्रेंस के कार्यकर्ताओं ने जल्दी से पुलिस अन्दर बुलाई और कान्फ्रेंस की कार्यवाही फिर शुरू हुई। मिस चमेली के भाषण के बाद पहले दिन की कार्यवाही समाप्त हो गई।

दूसरे दिन रात को डेलीगेट हिरोइनों का खास इजलास था।

इसमें बाहर के दसकों को घाने की अनुमति नहीं थी। सिर्फ मुत्तिस के घोर प्रेस के प्रतिनिधि था सकने थे। इस बैठक में कोई गड़बड़ नहीं हुई। बहुत-से प्रस्ताव पास किये गए, जिन पर प्रमत्त करने से फिल्म-उद्योग को फायदा पहुँच जाने की सम्भावना है।

विषय निर्वाचनी समिति में जिन हिरोइनों ने भाग लिया उनमें करगिस, मिस फुर्रिया, मिस फिकार, मिस जरासिम (शाब्दिक अर्थ कीटाणु) और मिस मस्ताना थाफ़ डिला-मिट्टी' केम के नाम उल्लेखनीय हैं। पहला प्रस्ताव हिरोइन शब्द की व्याख्या और उसकी कानूनी स्थापना के बारे में था। सर्वसम्मति से तै किया गया कि हिरोइनों की दो किस्में होती हैं —

१. स्टेण्डर्ड हिरोइन, यानी असली हिरोइन वह है जिसके पाप पैतीस से ज्यादा काष्ठैकट हो।

२. नव स्टेण्डर्ड हिरोइन

(अ) जिनके पास भिर्फ़ सोलह काष्ठैकट हों।

(ब) जिनके पास घाठ या घाठ से कम काष्ठैकट न हों।

तब हुआ कि जिन हिरोइनों के पास घाठ या इसमें कम काष्ठैकट रहेंगे वे सिर्फ़ माइड हिरोइन मानी जाएंगी और उन्हें यह अधिकार न होगा कि वे स्टूडियो के दिन डाक्टर के सर्टिफिकेट के बिना स्टूडियो से अनुपस्थित रह सकें लेकिन असली हिरोइन और सब-स्टेण्डर्ड हिरोइन (अ) ऐसा कर सकती हैं; बल्कि असली हिरोइन को तो यह अधिकार भी होगा कि यदि उनका जी चाहे तो प्रोड्यूसर की गाड़ी को भाग लगा दें या उसके मुँह पर धराव रोक दें और प्रोड्यूसर उस पर कोई दावा दायर न कर सकेगा। इस प्रस्ताव का समर्थन मिस फिकार ने किया। और यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत हो गया।

दूसरे प्रस्ताव में देश की हिरोइनों से अपील की गई कि वे अपने-आपको धुवला रखें। ध्यानकर जिस तरह हिन्दुस्तानी हिरो-इनें मोटी होती जा रही हैं उसे देखते हुए बहुत सम्भव है कि कुछ

भाई का कहीं जिक्र नहीं। शायद आप लोगों को मालूम नहीं है कि मेरा भाई कितना आबारा आदमी है। इधर मैं किसी नये फिल्म में काम करती हूँ उधर वह एक नई दास्ता हूँ लेता है। बाजे लोग तो मेरे पास कितने काण्ट्रैक्ट हैं इस बात का अन्दाजा मेरे भाई की रखैलों पर से ही लगा लेते हैं। अपने भाई की ऐयाशी के कारण मेरा जी जंजाल में है। किसी तरह मुझे बचाइए। मैं तबाह हो रही हूँ।”

मिस हीरा यह कहकर रूमाल आँखों पर रखकर रोने लगी। मिस करगिस चुप कराने के लिए आगे बढ़ी और खुद इसके साथ रोने लगी। थोड़ी देर में सभी हिरोइनें रो रही थीं, सुगन्धित रूमाल चेहरों पर फिरा रही थीं, और एक-दूसरे को धीरज दे रही थीं। अन्त में जब आँसू अच्छी तरह से निकल चुके और दिल ठण्डा हो गया तो फौरन वह संशोधन भी पास कर लिया गया, जिसमें मिस हीरा के भाई की कड़ी निन्दा के साथ उन भाई-बहनों और माओं की भी कड़े शब्दों में निन्दा की गई, जो बेचारी हिरोइनों के सारे पैसे चट कर जाते हैं।

एक प्रस्ताव यह भी पास किया गया कि चूँकि आजकल फिल्मों ज्यादा बनती हैं और हिरोइनें कम हैं, इसलिए कोई हिरोइन किसी फिल्म निर्माता को महीने में एक दिन से ज्यादा शूटिंग का वक्त



न दे; नहीं तो हिरोइन सभा उसके खिलाफ कायंबाही करेगी। यह प्रस्ताव भी सर्वे सम्मति से पास हो गया।

एक प्रस्ताव में सरकार से माँग की गई कि वह प्रत्येक हिरोइन को वर्ष में तीन मोटरों का वेट्रोल दिया करे। हिरोइन की मोटर कैबिनेट मिनिस्टर से भी ज्यादा चलती है, फिर यह भ्रष्टाचार क्यों ?

मद्रास की हिरोइनों ने एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें वहाँ की लोकल समस्याओं का उल्लेख था।

मिम जियाकलम् बोली — “आपको मालूम नहीं है हमारे यहाँ फिल्मों कितनी लम्बी होती हैं।”

“कितनी लम्बी होती हैं ?” करगिस ने पूछा।

जियाकलम् बोली — “छिन्ने दो साल से त्रिचनापल्ली में एक ही फिल्म दिखाई जा रही है। अभी ठमका पहुँचा तो भी खत्म नहीं हुआ।”

“कमाल है।” फुरैया ने हैरान होकर कहा।

जियाकलम् बोली — “और जानती हो याने कितने लम्बे होते हैं ?”

“नहीं ?” मिम जरागिम ने झींझ झंझाकर कहा।

जियाकलम् बोली — “मैं गीत रचा ॥ शुरू करती हूँ और रामकल्याण पर खत्म करती हूँ, क्योंकि एक ही गीत में सुबह से शाम हो जाती है।”

“बाप रे !” मिम भोला मटर्जी ने टोड़ी पर घेंगुनी रख-कर कहा।

मिम मालती ने कहा — “यह तो कुछ भी नहीं है। कोयम्बटूर में एक फिल्म बन रही है। पहले मैं उसमें हिरोइन का काम कर रही थी, अब मेरी बेटो काप करती है; फिल्म अभी तक पूरी नहीं हुई।”

इसके पौरन बाद एक रिजोल्यूशन पास किया गया जिसमें



सरकार से निवेदन किया गया कि वह मद्रासी प्रोड्यूसरों पर फौरन यह पाबन्दी लगा दे कि वे

१—चालीस हजार फुट से लम्बी फिल्म नहीं बना सकते ।

२—पचास से ज्यादा गाने नहीं रख सकते ।

३—छः साल से अधिक समय एक फिल्म में नहीं लगा सकते ।

४—दस करोड़ से ज्यादा एक फिल्म की पब्लिसिटी पर खर्च नहीं कर सकते ।

एक प्रस्ताव प्रगतिशील लेखकों के खिलाफ पास किया गया—

“ये लोग हमेशा हमें बुरे कपड़े पहनाते हैं—किसी भिखारिन, किसी गरीब मजदूर की पत्नी या भूखों मरती किसान की बेटी का काम देते हैं, जिसमें हमें हमेशा फटे-पुराने कपड़े पहनने पड़ते हैं; चेहरे पर कालिख लगानी पड़ती है, रोना-धोना रहता है। हमेशा इनकी तस्वीरों में इतने लम्बे-लम्बे संवाद होते हैं और देश तथा जाति के लिए क्या-क्या दावे किये जाते हैं ! भाड़ में जाय देश और जाति ! अरे मियाँ, हँसने दो दुनिया को ! चार दिन का मेला है। तुम यह क्या खटराग ले बैठे हो ! इन प्रगतिशीलों को फिल्म से बाहर निकाल देना चाहिए। और फिर इनकी फिल्में वाक्स आफिस भी तो नहीं होतीं। काहे को उन लोगों को जगह दे रखी है इण्डस्ट्री में ? अब तो सरकार भी इनसे नाराज है। इसी बहाने इनको चलता कर दो।”

कोई इस प्रस्ताव के विरोध में नहीं बोला ।

मिस वहना कुंवर ने रिपयूजी हिरोइनों के पक्ष में प्रस्ताव पेश किया—

“आज हमारा यहाँ कौन हाल पूछने वाला है ? लाहौर में मेरे पास छः कॉन्ट्रैक्ट थे, दो मोटर-गाड़ियाँ थीं, माडेल टाऊन में घर था। आज यहाँ हमारे लिए कोई जगह नहीं। हम रिपयूजी हैं। मैं अपनी वहनों से प्रार्थना करती हूँ कि वे पाकिस्तान चली गई हिराइनों की सम्पत्ति हमको दिलाएँ—उनके कॉन्ट्रैक्ट, उनकी गाड़ियाँ, उनके

मकान ।”

“धीरे उनके आशिक (प्रेमी) भी ?” मिस सटपट ने धीरे से पूछा ।

“सटपट ! सटपट ! अपने शब्द वापिस लो” के नारे सुनन्द हुए । मिस सटपट ने जल्दी से माफ़ी माँगकर पीछा छुड़ाया । प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकार किया गया ।

अन्तिम प्रस्ताव अमरीकन फिल्मों के सम्बन्ध में था । इसके सम्बन्ध में जो बहस हुई उसमें बड़ी गरमा-गरमी दिखाई दी । कुछ हिरोइनों का खयाल था कि अमरीकी फिल्मों का प्रदर्शन बन्द नहीं होना चाहिए, क्योंकि उनमें हम लोग बहुत-कुछ सीख सकते हैं । कुछ हिरोइनें कहती थीं कि कुछ भी हो जाय, बाहर की फिल्मों कितनी भी अच्छी क्यों न हों उनका प्रदर्शन एकदम बन्द कर देना चाहिए, क्योंकि इससे देश का बहुत अधिक रुपया बाहर चला जाता है ।

लेकिन मिस सटपट के भाषण ने विषय के सभी पहलुओं पर सही तरीके से पूरी रोशनी डाली । उसके भाषण के बाद यह भ्रमशा न रह गया कि यह प्रस्ताव पास न होगा । मिस सटपट ने कहा—



“वहन खटपट अमरीकी फिल्मों के प्रदर्शन को बहुत बुरा आर्ट समझती हैं। मैं कहती हूँ, इसमें आर्ट कहाँ है ? मैं जानती हूँ, अमरीकी हिरोइनों को हम पर क्यों श्रेष्ठता दी जाती है। इसलिए कि वे बोसे दे सकती हैं और नंगी टाँगें दिखा सकती हैं, मगर हम बेचारी शर्मीली, इज्जतदार हिन्दुस्तानी हिरोइनें जो न ये दे सकती हैं और न वो दिखा सकती हैं। इसलिए मेहरबानी करके या तो उन अमरीकी फिल्मों को बन्द कर दो या हमें भी इजाजत दे दो ताकि हम भी रूपहरी परदे पर दिखा सकें कि इस मैदान में हम भी अपनी अमरीकी वहनों से कम नहीं हैं। (हियर ! हियर ! तालियाँ !!!) और अगर गवर्नमेण्ट इस पर भी नहीं सुनेगी तो हम मामले को सिव्यूरिटी कौंसिल में ले जायेंगी।” (जोर-शोर के साथ तालियाँ)

कान्फ़ेंस खत्म हुई। मैं कुछ फोटो लेकर कैमरे को वापस लटका रहा था कि मुझे मिस प्रेम पिटारी ने घेर लिया।

मुस्कराते हुए वह बोली—“कहिए, रिपोर्ट तो अच्छी लिखेंगे न ?”

“जी हाँ !”

“और फोटो ?”

“फोटो भी अच्छे आये होंगे।”

“मेरा अलग से फोटो लिया है ?” मिस प्रेम पिटारी ने अपनी नई सिलवर जुवली मुस्कराहट का प्रयोग करते हुए पूछा।

“लिया है।”

मिस प्रेम पिटारी मुस्कराई। मेरे समीप आकर, बड़ी-बड़ी आँखें झपका कर शहद-धुली आवाज में कहने लगी—“अगर तुम उसे पहले पृष्ठ पर छाप दो तो... तो... डार....”

मिस प्रेम पिटारी मेरी ओर बढ़ती आ रही थी। मैं उल्टे पाँवों दरवाजे की ओर जा रहा था; लेकिन वह आगे बढ़ती आ रही थी और उसकी सिलवर जुवली मुस्कराहट गोल्डन जुविली



मुस्कराहट में बदल रही थी। वह धीरे समीप आ गईं धीरे उसकी गोल्डन जुबिली मुस्कराहट अब डायमण्ड जुबिली मुस्कराहट में एकाएक में बेहोश हो गया।

## सेठजी

सेठजी के होंठ बड़े-बड़े, मोटे और कामुकतापूर्ण थे। उनकी नाक लम्बी और टेढ़ी थी और आँखों में शाइलॉक की-सी मक्कारी भलक रही थी। मैं जब उनके दफ्तर में पहुँचा तो फौरन वह अपनी कुरसी से उठ खड़े हुए और बड़े तपाक से हाथ मिलाते हुए कहने लगे—“हां-हां, आप आये हैं! अरे भाई, किशन जी आये हैं; एक कुरसी अन्दर भेज दो।”

एक चपरासी कुरसी लेकर आया। मैं उस पर बैठ गया। मैंने सेठजी के मुस्कराते हुए, चमकते हुए चेहरे की तरफ देखा। ऐसा मालूम होता था कि किसी ने उनके चेहरे पर वनस्पति घी का डिब्बा उड़ेल दिया है। यह मुस्कराहट उसी नकली घी में तली हुई मालूम होती थी। सेठजी ने अपने पीले-पीले दाँत निकाले, अपने हाथ मले और एक अजीब बारीक-सी हँसी से, जो किसी शतान घोड़ी की हिनहिनाहट से समानता रखती थी, काम लेते हुए बोले—“अरे बाह वा ! धन् भाग हमारे। किशनजी आये हैं ! मैंने हरचन्द भाई से कहा था, किशनजी कभी मिलें तो हमारे, पास भेज देना। आप तो कभी आते ही नहीं। अरे भाई, लाख-दो लाख की बात ही क्या है। यह गरज तो जब चाहो पूरी कर लेना हम से। तुमने तो मिलना-मिलाना ही छोड़ दिया।”

मैंने कहा—“मैं आज से छः महीने पहले इसी काम के लिए आपके पास हाजिर हुआ था। आपने इतने फेरे कराये कि मेरे जूते के अन्दर का मोजा भी घिस गया।”

“हा हा हा !” सेठ साहब हँसते हुए बोले, “आप बड़े घुस-घुसिजाज मालूम होते हैं। जूते के अन्दर का मोजा भी घिस गया। हा हा हा ! ऐसा मजाक तो हमने किसी फिल्म में नहीं सुना। इसको निल दालो न किसी फिल्म में। तुम्हारी कसम है, यह बलेंगा, हा हा हा !” हँसते-हँसते सेठजी की आँखें बन्द हो गईं, और उनके पेट में कम्पन होने लगा।

जब अच्छी तरह हँस चुके तो घण्टी बजाते हुए बोले—“कुछ पियोगे, ठण्डा-बण्डा ?”

“हाँ, ठण्डे गोड़े में हिल्टकी डालकर पियूँगा।”

उसके बाद उसने फिर हँसना शुरू कर दिया। एक लड़का सेठ की आवाज सुनकर अन्दर आया और अपने मोटे सेठ की लोप में हँसी की लहरें उठती देखकर ससम्मान लडा हो गया। जब यह पूछान चका तो सेठ ने लड़के से कहा—“दो अच्छी विमटो की बोललें लाभो।”

जब लड़का चला गया, आप मेज से आगे झुककर मेरी तरफ़ देखकर कहने लगे—“मैं चाहता हूँ कि आप रुपये मुझसे सवा दो की अगर छः साल से लें, लेकिन पिक्चर ऐसी हो खो बिल्कुल कलासिकल हो।”

मैंने कहा—“कलासिकल से, आपका मतलब क्लासिकल म्यूजिक है यायद। बहुत अच्छा, मैं दिसीप चन्द्र बेदी से प्रार्थना करूँगा कि वह हमका म्यूजिक सँभाल लें।”

“नहीं, नहीं !” सेठजी बोले, “आप मेरा मतलब गलत समझे। आप एक ऐसी पिक्चर बनाएँ जो क्लासिकल हो यानी जिसका प्रभाव दुनिया में न हो। आप समझ गए न मेरा मतलब ? एकदम फाइन, समझे ?”

“समझ गया,” मैंने कहा, “मगर ऐसी पिकचर हिन्दुस्तान में देखेगा कौन ? देखिए, इसके पहले तीन-चार प्रयोग हम लोग कर चुके हैं। एक तो बंगाल के अन्न-संकट के सम्बन्ध में तसवीर थी। देश और विदेश के ख्यातनामा लोगों ने उसे देखा और उसकी बहुत-बहुत प्रशंसा की। रूस और अमरीका और इंग्लैण्ड के फिल्म-विशेषज्ञों ने भी उसकी बहुत सराहना की। लेकिन यहाँ कहीं भी तीन-चार सप्ताह से अधिक नहीं चली। आप ऐसी ही फिल्म चाहते हैं न।”

“नहीं, नहीं ! ऐसा पिकचर क्या करना है अपने को ?”

“मैंने कहा—“तो फिर एक पिकचर वह थी, जिसमें गरीबी और अमीरी का विरोध बड़ी खूबसूरती के साथ निभाया गया था। कलाकारों ने बड़े ही अच्छे ढंग से अपने पार्ट अदा किये थे। डायरेक्टर ने भी बड़ी मेहनत से वह तसवीर बनायी थी। हिन्दुस्तान में बनी थी, लेकिन जब फ्रांस में उसका प्रदर्शन किया गया तो वहाँ के सिने-आलोचकों ने उसे उस वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म करार दिया। लेकिन हिन्दुस्तान में वह अभी तक डिब्बों में बन्द है। अगर आप चाहें तो मैं...”

“वाप रे ? मैंने ऐसी पिकचर के लिए कब कहा है आपसे ? मैं तो कुछ और...”

मैंने कहा—“तो फिर शायद आप वह तीसरी पिकचर चाहते हैं जिसमें गाने और डान्स भी जनता की पसन्द के थे, लेकिन उसकी कहानी रियासती जागीरदारों के विरुद्ध थी, जिसके कारण कई रियासतों में उसका दिखाया जाना गैर-कानूनी कर दिया गया और डिस्ट्रीब्यूटर आज तक बनाने वाले की जान को रो रहा है। मगर पिकचर अच्छी-खासी थी। रियासती जनता के जीवन का प्रतिबिम्ब...”

सेठ धवराकर बोले—“अपने को प्रतिबिम्ब-प्रतिबिम्ब कुछ चाहिए। अपने को तो एक सीधी-सादी पिकचर...”

मैंने दात काटकर कहा—“तो एक बहू पिक्चर है—बड़ी सीपी-सादी मुहब्बत की कहानी है। मगर उसका विषय है—जमीन किसानों में बाँट दो। पिक्चर तीन बार सेन्सर हुई। मग्न में, न जमीन किसानों के पास रही, न किसान रहे, खाली-खुली मुहब्बत की कहानी रह गई—साहब लगाकर चाटने के लिए।”

सेठ बोले—“ना बाबा! बाज भाया! ऐसी फिल्म अपने को नहीं चाहिए। तब तो एक कौड़ी न दूँगा। मैं तो ऐसी बनासिकत पिक्चर चाहता हूँ जैसी ‘सिडकी’, ‘सन्तोपी’, ‘सहनाई’!”

मैंने कहा—“सिडकी और सहनाई तो फिल्में हैं, लेकिन ‘सन्तोपी’ कोई फिल्म नहीं है। वह तो सिडकी और सहनाई के डायरेक्टर का नाम है।”

“हा हा हा!” सेठ साहब हँसते हुए बोले, “देखा किशनजी, नामों में कौसी गड़बड़ हो जाती है?” फिर वह एकदम चौंकर बोले, “मगर सन्तोपी का नाम भी तो बुरा नहीं है। फिल्म का नाम सन्तोपी रख दें तो कैसा रहेगा?”

“नाम तो बहुत अच्छा है, मगर सन्तोपी साहब आप पर दस साल का मान-हानि का दावा कर देंगे।”

“अच्छा जी!” सेठ साहब कुरसी पर तिलमिलायें, तबड़े और फिर एकदम ठम् होकर बैठ गए, जैसे उनके सामने सारी दुनिया में अंधेरा छा गया हो।

मैंने कहा—“सन्तोपी तो नहीं, लेकिन ‘बेहोशी’ नाम कैसा रहेगा?”

सेठ साहब कुरसी से उछल पड़े। ओर से हाथ मिलाते हुए बोले, “वाह वा, किशन जी! क्या नाम सोचा है? ‘बेहोशी’ बड़ा अच्छा नाम है।”

मैंने कहा—“इसमें जितने कैरेक्टर (पात्र) हैं, सब बेहोश हो जाते हैं। हीरो (नायक), हिरोइन (नायिका), विलेन (सत्त नायक), संन्यासी, साइड संन्यासी, साइड हीरो, साइड हिरोइन—सब लोग



एक-एक गाना गाते हैं और गाते ही सब बेहोश हो जाते हैं। यह कैसा 'आइडिया' है सेठ ?”

“कमाल कर दिया किशनजी ! मगर कितने गाने रखोगे आप ?”

“मैं गाने बहुत रखूंगा। कैरेक्टर बहुत होंगे न ? और फिर हर गाने के बाद बेहोशी होगी; गोया हर बार नया ड्रामा पैदा होगा। मैं तो समझता हूँ सेठजी, कि पिक्चर लगते ही हाल में सारी पब्लिक बेहोश हो जायगी।”

“वाह वा !” सेठजी खुशी से हाथ मलते हुए बोले, “नया आइडिया है, एकदम नया ! मैं अभी अपिरेरा-हाउस बुक करता हूँ इसके लिए।”

मैंने कहा—“हाउस तो बहुत अच्छा है, लेकिन पब्लिक की बेहोशी के लिए जरा छोटा रहेगा। कोई बड़ा-सा हॉल लीजिए; और वहाँ से कुरसियाँ हटवा दीजिए, ताकि लोग पिक्चर देखते जायें और वहीं फर्श पर बेहोश होते जायें। जरा देखियेगा सेठजी कैसी 'बाक्स आफिस हिट' पिक्चर बनती है। लाइए अभी चैंक काट दीजिए।”

“चैंक तो देता हूँ, लेकिन इसमें मेरा शेयर (हिस्सा) रहेगा। पिक्चर भी गिरवी रखूंगा और सूद और रायल्टी भी लूंगा।”

मैंने कहा—“सब मंजूर है।”

वह बोले—“एक और शर्त है। इस पिक्चर में मेरा शेयर रहे इसलिए मैं नहीं चाहता कि पिक्चर के बीच में कोई शरारत हो और हमारा नाम बदनाम हो।”

“वह कैसे होगा ?” मैंने पूछा।

“बस यही कि स्टूडियो के अन्दर कोई शराब नहीं पियेगा, कोई सिगरेट नहीं पियेगा, कोई लड़कियों की ओर बुरी नजर से नहीं देखेगा।”

मैंने कहा—“यह तो सब ठीक है; मुझे मंजूर है; मगर शराब

के लिए—जरा इतनी मुदिकल है कि अगर मेरे विचार में कोई एक-घाघ पैंग पीकर धा जाय तो उसे कैसे रोक सकते हैं ? एक-घाघ पैंग तो डाक्टर भी जबरदस्ती पिला देते हैं बीमार को ।”

सेठ ने कहा—“अरे, एक-घाघ पैंग की क्या बात है ! वह तो ठीक है । तैर, मैं चैंक तिलता हूँ ।”

वह चैंक तिलने लगे । मैंने थोड़ी देर दान्त रहने के बाद खैलारकर कहा—“घोर सिगरेट से तो स्वयं मुझे यड़ी पूणा होती है ; हर समय मुंह से लम्बाफू की दुगंध आती रहती है, जैसे आपके मुंह से प्याज की बू आ रही है और...”

सेठजी एकदम चौंककर बोले—“क्या मेरे मुंह से प्याज की बू आ रही है ?”

“बू नहीं बपारे आ रहे हैं ।”

सेठ ने मुस्से से घण्टी बजाई । खपरासी आया । सेठ ने खपरासी से कलौट की बुलाने के लिए कहा । कलौट आया । सेठ उस पर बरस पड़े—“बदमाश ! ताले ! तूने बताया नहीं, घाज दाल में इतनी धुनी हुई प्याज थी कि मुंह से बू आने लगी ताने ।”

“नेठजी, मुझे क्या मालूम ?”

“तुझे मालूम नहीं ! दस साल से हमारे यहाँ काम कर रहा है और तुझे यह नहीं मालूम कि मैं मन्त्र मे धुनी हुई प्याज नहीं खाता हूँ । क्या जङ्गली के माकिक गप्पा है ! निकल जा ! अभी जा, मुनीमन्त्री से हिसाब बुकता करवा ले ।”

कलौट सिर झुकाये खला गया ।

मैंने कहा—“बगल प्याज की नहीं, सिगरेटों की हो रही थी । वास्तव में सिगरेट पीना बहुत बुरी बात है ; लेकिन कभी-कभी स्टूडियो में जब आदमी दिन-रात काम करता है तो घबराह के मारे बड़ी निपिजता आ जाती है । इसके लिए कभी-कभार सिगरेट पीना बहुत सामंदायी होता है ।”

सेठ ने कहा—“नहीं, नहीं ! मैं ऐसे सिगरेट पीने को थोड़े

ही मना करता हूँ ?”

“वाकी रही लड़कियों वाली बात,” मैंने कहा, “इस पर तो प्रकट है किसी भी भले आदमी को क्या आपत्ति हो सकती है ? लड़कियों को बुरी नजर से देखना बहुत बुरा है। लेकिन आप जानते हैं, मच्चे प्रेम को कोई नहीं रोक सकता। जहाँ स्त्री और पुरुष मिलेंगे वहाँ सच्चा प्रेम भी होगा, जैसे आज तक फिल्म-इण्डस्ट्री में हजारों बड़े-बड़े प्रोड्यूसरों से लेकर मामूली एक्स्ट्रा लोगों तक में हो चुका है। ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने दो-दो शादियों के बाद भी सच्चा प्रेम किया है। अब इस चीज को रोकना तो बहुत कठिन होगा।”

सेठजी बोले—“सच्चे प्रेम को मैं कब बोलता हूँ कि मना कर दो। अपने खुद एक बार इस भ्रम में फँस गये थे।”

मैंने आँख मारकर कहा—“सचमुच सेठजी ? आप भी ? विश्वास नहीं होता।”

“सौगन्ध ले लो किशन जी, तुम्हारे सिर का, जो भूठ बोलूँ। वह... 'हाय ! मैं मर गई' फिल्म की हिरोइन नहीं, नहीं, राम तुम्हारा भला करे, हिरोइन नहीं, साइड में कौन थी लड़की ?”

“जोगेश्वरी।”

“हाँ, हाँ ! जोगेश्वरी से हमारा प्रेम हो गया। बढ़ते-बढ़ते दो-तीन बच्चे भी हो गए। अब वह कोलावा में है। मैं उसको खर्चा-पानी सब देता हूँ। तो सौगन्ध ले लो, बिल्कुल अपनी धर्मपत्नी की तरह लगती है। अब ऐसे प्रेम की कौन मनाही करता है ? मैं यह थोड़े ही कहता हूँ कि बिल्कुल कम्युनिस्ट हो जाओ।”

“हाँ, हाँ ! सो तो प्रकट ही है,” मैंने कहा, “आपका यह मतलब थोड़े ही हो सकता है ?

सेठजी चैंक अँगुलियों में फिराते हुए बोले—“किशनजी, यह मैं क्या सुन रहा हूँ, कम्युनिस्ट चीन को ले गए ?”

“हाँ, ले गए।”

“घोरे उधर मलाया में भी इनकी बदमाशी है !”

“सुनते तो यही है !”

“भाज मुबह मैंने सवर पड़ी कि रगून से दस मीस उधर लड़ाई हो रही है । वहाँ भी यह दज्जा चल रहा है क्या ?”

मैंने कहा—“भापने ठीक पढ़ा है !”

सेठजी चैंक झँगुलियो में धुमाने-धुमाते रुक गए । उन्होंने ध्यान से चैंक की ओर देखा । मेरे ओर चैंक के बीच केवल छः इंच का फासला था । सेठजी ने एक ठण्डी साँस भरी और धीरे से चैंक को फाड़ते हुए बोले—“किशनजी, अब हमारा व्यापार नहीं चलेगा । अब यह सौदा करने का समय नहीं है !”

## जनतन्त्र दिवस

सङ्गल द्वीप और बङ्गल द्वीप दोनों टापू एक-दूसरे के बहुत समीप थे। दोनों के बीच सिर्फ एक पतली-सी समुद्री खाड़ी थी। कहते हैं कि जब सफेद बादशाह का राज्य था, उस समय ये दोनों द्वीप एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए थे। लेकिन बहुत पहले की, उस समय की बात है, जबकि इन टापुओं में रहने वालों को सभ्यता और आधुनिकता की हवा भी नहीं लगी थी। सफेद बादशाह के चले जाने के बाद जब सङ्गल द्वीप में पाँचू और बङ्गल द्वीप में काँचू का राज्य हुआ तो दोनों द्वीपों के बीच एक पतली-सी खाड़ी खोद दी गई; और दोनों टापू एक-दूसरे से अलग हो गए।

पाँचू और काँचू का किस्सा भी बड़ा विचित्र है। पहले ये दोनों जुड़वाँ भाई थे और किसी भी प्रकार एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते थे। सफेद बादशाह को यह सोचकर बड़ा कष्ट होता था कि उसके दोनों राजकुमार इस तरह जुड़वाँ हों। उसने बहुतेरे इलाज किये, लेकिन उन्हें एक-दूसरे से अलग करने की कोई तरकीब समझ में नहीं आई। अन्त में उसने नीले समुद्र के पार फङ्गल द्वीप से एक प्रसिद्ध और कुशल सर्जन को बुला भेजा। उसने आकर पाँचू और काँचू का ऑपरेशन किया, जिससे ये दोनों भाई अलग-अलग स्वतन्त्रता से जीवन यापन करने लगे; और सफेद बादशाह और

उसके कुशल सर्वेज के गुण गाने लगे, जिसने उन्हें अलग-अलग चलने-फिरने और सोचने-समझने की स्वतन्त्रता प्रदान की।

पाँच और काँच दोनों सफेद बादशाह से बहुत प्यार करते थे। सफेद बादशाह को पहलवानी का बड़ा शौक था। इस शौक में वह कभी पाँच को और कभी काँच को पटक दिया करता। उसके बाद पाँच और काँच दोनों सफेद बादशाह से लिपट जाते और उससे बड़े प्यार-भरे स्वर में कहते—

पाँच—‘मैं तेरा पट्टा हूँ, सफेद बादशाह !’

काँच—‘नहीं, मैं तेरा पट्टा हूँ सफेद बादशाह !’

और सफेद बादशाह अपने मन में कहता—‘तुम दोनों बल्सू के पट्टे हो।’ मगर प्रकट में वह मुस्कराकर कहता—‘हो, पाँच और काँच, तुम दोनों मुझे बहुत प्रिय हो।’ सफेद बादशाह में एक झगड़ाई भी थी। वह जब पाँच सामने होता तो उससे कहता—‘मैं मरते समय ते दोनों टापू तुम्हें दे दूँगा।’ और जब काँच सामने आता तो उससे कहता—‘ते दोनों टापू तो केवल तुम्हारे हैं।’ इसका परिणाम यह हुआ कि पाँच और काँच एक-दूसरे से अलग-अलग रहकर राज-सिंहासन का स्वप्न देखने लगे; और दोनों द्वीपों पर शासन करने के लिए सफेद बादशाह के सामने एक-दूसरे को अपमानित करने और नीचा गिराने की तरकीबें खोजने लगे।

पहले तो पाँच और काँच ने कहा—‘हम कभी जुड़वाँ भाई नहीं थे। हम तो प्रारम्भ से ही असम थे।’

फिर पाँच ने कहा—‘काँच मेरा भाई नहीं है; मैं तो सूर्य का पुत्र हूँ।’

काँच ने कहा—‘और मैं तो चन्द्रमा का पुत्र हूँ।’

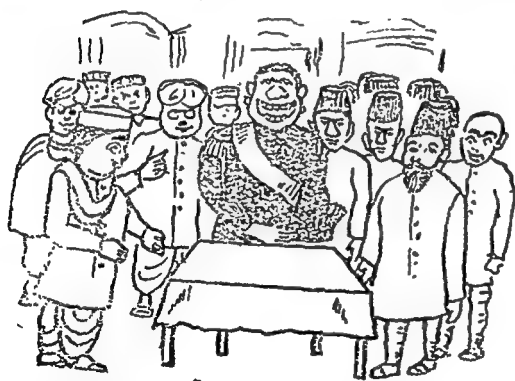
उसके बाद पाँच ने गुस्से में आकर अपने पाँव में लकड़ी का जूता पहन लिया और काँच ने भस्ताकर चमड़े का जूता पहन लिया। इससे पहले दोनों नये पाँव फिरा करते थे। लेकिन जब एक भाई ने लकड़ी का और दूसरे भाई ने चमड़े का जूता पहन लिया

तो सफेद बादशाह ने दरवार में घोषणा की कि आज से हमारे राज्य में दो संस्कृतियाँ हैं—एक का नाम पाँचू संस्कृति रहेगा और दूसरे का नाम काँचू संस्कृति। पाँचू संस्कृति वाले हमारे दाहिने हाथ की ओर बैठेंगे और काँचू संस्कृति वाले हमारे बाएँ हाथ की ओर।

दाहिनी ओर के दरबारियों ने कहा—“पाँचू संस्कृति की जय हो !”

बाई ओर के दरबारियों ने कहा—“काँचू संस्कृति की जय हो !”

सफेद बादशाह ने अपना राज-मुकुट अपने सिर से उतारकर सिंहासन पर रख दिया और स्वयं खड़े होकर कहा—“आज से मैंने राज-पाट का परित्याग किया; क्योंकि हमारा ‘मिशन’ पूरा हो गया है। दोनों राज-



कुमार भगवान् की कृपा से वयस्क हो गए हैं। अब वे जनता की भलाई के लिए इतनी ही तत्परता और लगन से काम कर सकते हैं

जितनी कि मैं आज तक करता आया हूँ। मैं सङ्गल द्वीप पाँचू को और बङ्गल द्वीप काँचू को सौंपता हूँ और स्वयं हीरे की नाव में बैठकर फंगल द्वीप जाकर वनवास ले लेता हूँ।”

पाँचू और काँचू की आँखों में आँसू भर आए। बहुत-से दरबारी रोने लगे। बिलकुल श्री रामचन्द्र के वनवास-जैसा दृश्य था। लेकिन फिर पाँचू ने काँचू को और काँचू ने पाँचू को ढाढ़स

बैठाया और एक-दूसरे में कहा—“जनता के लिए हमें यह दुःख सहना ही पड़ेगा। तुम्हें सगल द्वीप का दरबार और मुझे बंगल द्वीप का दरबार चसना ही पड़ेगा। अब डोल-राधे बजाओ और अपने-अपने द्वीपों में पार्लमेंट की घोषणा कर दो।”

नक्कारची कह रहा था—“सतवत खुदा की ! हुकुम सरकार का ! दाईं ओर के दरबारी सगल द्वीप पार्लमेंट के मेम्बर होंगे और बाईं ओर वाले बंगल द्वीप की पार्लमेंट के सदस्य होंगे। और ये दोनों समार्य जनता के लिए काम करेंगी।”

लेकिन यह जनता कौन थी, जिसकी उन्नति के लिए इस तरह शोर मचाया जा रहा था ? वास्तव में यह जनता इन दोनों द्वीप की वैदाकार थी और इनकी वहाँ बहुतायत थी। पाँचू और काँचू दोनों भाई इनका व्यापार करते और उसमें करोड़ों रुपये कमाते थे। जनता की दो टांगें, दो हाथ, दो कान, दो आँखें और एक मुँह होता है। सिर के सम्बाध में कई वैज्ञानिकों की सन्नेह है। बहरहाल पाँचू और काँचू का समाल है कि जनता के सिर-महीं होता। यदि होता भी है तो हाथी की तरह छोटा-सा होना चाहिए। इसी सिद्धान्त को लक्ष्य में रखकर पाँचू और काँचू जनता से हर तरह का काम लेते थे; और उनसे दिन-रात चींटियों की तरह परिश्रम करवाते थे। जनता खेतों में हल चलाती थी, निराई करती थी, बीज बोकर फसल उगाती थी। लेकिन जब फसल इकट्ठा करने का अवसर आता था तो दरबारी लोग सारा अनाज उठाकर ले जाते थे और थोड़ा-सा अनाज जनता के लिए शेष रहने देते थे, ताकि जनता में इतनी दक्ति रहे कि वह हल को फिर से पकड़ सके। जनता न केवल हल चलाती थी, बल्कि कारसाने भी चलाती थी, जिनमें कपड़ा तैयार होता था। लेकिन जब कपड़ा तैयार हो जाता तो दरबारी आकर सारा कपड़ा घसग रस लेते और जनता को केवल इतना कपड़ा देते कि जो उनकी संगोटी तैयार करने या फिर कफन के लिए काम आ सकता था। इसी तरह दूसरे द्वीप का भी ठीक



यही हाल था, यानी जनता काम करती थी और दरवारी खाते थे। जनता बड़ी भोली-भाली, ईमानदार, परिश्रमी और सहृदय थी। उन्हें पाँचू और काँचू से बड़ा प्रेम था, क्योंकि इन राजकुमारों ने जनता से वायदा किया था कि वे शासनारूढ़ होते ही जनता के लिए काम करेंगे और उनके सारे कष्ट मिटा देंगे। सबसे बढ़कर यह बात थी कि पहले तो जनता सफेद बादशाह की दासी थी, लेकिन अब पाँचू और काँचू जनता के दास होंगे और जैसा जनता कहेगी वैसा करेंगे। जनता इन बातों को सुनकर बहुत प्रसन्न होती। पहले तो उसने अपने सिर को खुजाया, फिर अपने सख्त खुरदरे हाथों को देखा, फिर अपने नंगे पाँवों को देखा, जिस पर न लकड़ी का न चमड़े का जूता था। इसके बाद वे लोग, यानी जनता, अपने-अपने कामों में लग गई। और पाँचू और काँचू एक-दूसरे को आँख मारकर अपने-अपने दरबारों में चले गए।

लेकिन यह बहुत दिनों की बात है। पिछले साल जब फज्जल द्वीप से एक यात्री सज्जल द्वीप में पहुँचा तो उसने देखा कि सारे सज्जल द्वीप में खुशी के नारे गूँज रहे हैं और जगह-जगह लोग खुशी से नाच रहे हैं। कहीं-कहीं लोग आनन्दातिरेक के मारे पागल हो गए हैं और अपने घरों पर दीए जला रहे हैं। जिनके पास दीये नहीं हैं, उन्होंने जोश में आकर अपने घरों को आग लगा दी है; और शोले आसमान से बातें कर रहे हैं। उस दिन जनता खुशी में पूरा दिन उपासी रही। यद्यपि उससे पहले वह दिन में सिर्फ एक वक्त भूखी रहती थी, लेकिन आज चूँकि खुशी का दिन था इसलिए जनता ने दिन-भर उपवास किया है और इस खुशी में आकर अपने कपड़े भी फाड़ डाले हैं और उनकी झण्डियाँ बनाकर राजकुमार पाँचू के जुलूस में लहरा रहे हैं। 'सचमुच संगल द्वीप की जनता बड़ी जिन्दादिल है। वह अपने दरबारियों की कद्र करना जानती है,' यात्री ने अपने दिल में सोचा।

यात्री इस द्वीप में पन्द्रह साल के बाद आया था। उसे अच्छी

वरह मालूम था कि इस द्वीप में भूख, बेकारी, अज्ञान और गरीबी इतनी अधिक है कि शायद वैसे दुनिया के किसी और द्वीप में न होगी। इसलिए जब वह दोबारा यहाँ आया तो पहले पहल जनता की खुशी उसकी समझ में न आई। वह देर तक उनके बाजारों, गलियों, महल्लों, सेतों और कारखानों में घूमता रहा और उनका धान-दो-त्सव देखता रहा। अन्त में जब उससे रहा न गया तो उसने एक नाचते हुए आदमी का हाथ पकड़कर पूछा—

“भई, क्या बात है ? इस कदर खुशी क्यों हो ? क्या तुम्हें पेट-भर के खाना मिला है आज ?”

मगर उस आदमी ने सिर्फ इतना कहा—“एक करोड़ बार ...” और फिर वह यात्री से हाथ छुड़ाकर नाचता हुआ भागे चला गया। फिर यात्री ने देखा कि एक दूसरा आदमी अपनी घोंटाईयाँ काट-काटकर फूलों के हार बना रहा था। यात्री ने बड़े आश्चर्य से उससे पूछा—“भरे भई, यह तुम क्या कर रहे हो ?”

“मुझे परेशान न करो,” उन आदमी ने जवाब दिया, “देखते हो, आज एक करोड़ बार ...”

यह कहते ही उस आदमी के चेहरे पर एक अजीब-सी मोहिनी मुस्कराहट आ गई और वह चुप हो गया और यात्री की ओर से पीठ मोड़कर अपना पेट काटने लगा। यात्री हैरान और परेशान भागे बढ़ा। यहाँ उसे एक और आदमी मिला जो अपने धीरे धीरे बच्चे की बगल से लोह निकालकर एक गिलास में जमा कर रहा था।

“भई, यह क्या करते हो ? यह तो धाम्महत्या है।” यात्री ने चीखकर कहा।

उस आदमी ने कड़कहा लगाकर कहा—“हा, हा, हा ? आज में अत्यधिक प्रसन्न हूँ। आज हमारी सरकार ने एक करोड़ बार ...”

फिर वह आदमी रुक गया और उसके चेहरे पर एक अजीब-सी मुस्कराहट आई और वह बोला—

“मैं यह गिलास दरबार में पेश करूँगा। मेरे पास धीरे कुछ

तो है नहीं।”

इतने में उसका बच्चा वेहोश होकर गिर पड़ा। वह आदमी कहकहे लगाने लगा। यात्री की समझ में कुछ न आया कि यह क्या माजरा है। वह चुपके-से आगे बढ़ गया। आगे जाकर उसे एक आदमी मिला, जिसके हाथ में हथौड़ा था और जो इस सारी धूम-धाम से बेपरवाह शान्ति के साथ आगे चला जा रहा था। यात्री ने उसे रोककर पूछा—

“भाई, एक क्षण के लिए रुक जाओ और मुझे बताओ कि क्या माजरा है?”

हथौड़ेवाला आदमी चलते-चलते रुक गया और कुछ रुककर बोला—

“पाँच और उसके दरबारी पिछले दस साल से जिस विधान का निर्माण कर रहे थे वह आज पूरा हो गया है। इसकी खुशी में आज जनतन्त्र दिवस मनाया जा रहा है।”

“मगर वह एक करोड़ बार क्या है?”

“जाओ, दरबार-हॉल में राजसी उत्सव देखो और मुझे परेशान न करो; मुझे बहुत काम करना है।”

इतना कहकर वह आदमी उस भीड़ में लीन हो गया और यात्री दरबार-हॉल की ओर बढ़ गया।

दरबार में जाकर यात्री ने देखा कि दरबार-हॉल काली भण्डियों से सजा हुआ है और हर एक भण्डी पर चाँदी के रुपये की तस्वीर बनी हुई है। यात्री ने एक दरबारी से पूछा—

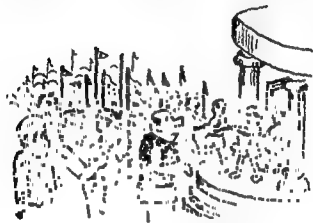
“यह क्या ब्लैक मार्केट का रुपया है?”

“शि-शि-शि,” दरबारी ने मुँह पर अँगुली रखते हुए कहा, “यह हमारे दरबार का राष्ट्रीय चिह्न है।”

“क्षमा कीजिए,” यात्री ने हाथ जोड़ते हुए कहा, “मैं विलकुल नवागन्तुक हूँ। आपके देश के रीति-रिवाजों से विलकुल परिचित नहीं हूँ, इसीलिए इतना बता दीजिए कि यह एक करोड़ बार क्या

बता है ?”

दरबारी ने फिर अपने मुँह पर झंगुली रखकर कहा—  
 “शि...। चुप रहो। इस समय राष्ट्रीय विधान पर राजकुमार पाँचू



का अन्तिम भाषण आरम्भ होने वाला है। ध्यान से सुनो। शामद  
 मुझे इस भाषण में अपने सवाल का जवाब मिल जायगा।”

यात्री बड़े ध्यान से भाषण सुनने लगा।

राजकुमार पाँचू ने कहा—

“हम जनता के लिए हैं। हमारा शासन जनता के लिए है।  
 जनता के धन्यभाग है कि जिन जन-विधान के लिए हम पिछले  
 दस साल से रात-दिन परिश्रम कर रहे थे वह आज जनता के भले  
 के लिए हमने पूरा कर लिया है। (तालियों) इसी जन-विधान की  
 धाराओं के अनुसार जनता अपने शासन की प्राप मालिक होगी;  
 यानी जमीनों के मालिक जमींदार और जागीरदार होंगे और कार-  
 खानों के मालिक कारखानेदार (सरमायादार) होंगे और शासन के  
 अधिकारी होंगे। लेकिन शासन जनता का रहेगा और विधान के

अनुसार जनता को पूरा अधिकार होगा कि वह परम्परा की तरह भुखी रहे, नङ्गी फिरे और सड़कों पर सोये । यदि वह चाहे तो जेल भी जा सकती है और गोली भी खा सकती है । जनता को इन बातों का पूरा-पूरा अधिकार होगा और हमने स्थान-स्थान पर अपने विधान में इस बात का खयाल रखा है । लेकिन यह कभी नहीं हो सकता कि जनता जमीनों पर, कारखानों पर, नौकरियों पर और आर्थिक, औद्योगिक व्यवसाय एवं शासकीय विभागों पर अपना अधिकार जमा ले । यह व्यवहार जनतन्त्र के विरुद्ध होगा और इसलिए इसे जनहित के विरुद्ध समझा जायेगा ।

“हम जनता से प्रेम करते हैं और उसके साथी हैं । इससे पहले हमने चाहा था और वादा भी किया था कि इस विधान को जनता खुद बनायेगी । मगर चूँकी जनता अभी नासमझ है और दूसरे, इस समय संगलद्वीप को बंगल द्वीप से खतरा है और पाँचू संस्कृति के विनाश के मनसूवे किये जा रहे हैं, इसलिए यह विधान स्वयं हमने ही अपने दरबारियों के के साथ मिलकर बना लिया है । आशा है कि जनता को यह विधान पसन्द आयेगा । और पसन्द आए या न आए, इस विधान को अब तो देश में प्रचलित होना ही है । जो आदमी इसका विरोध करेगा उसे जनता का दुश्मन समझकर गोली से उड़ा दिया जायेगा ।

“अन्त में मैं जनता से अपील करता हूँ कि वह इस विधान को सफल बनाए; खुद गम खाकर दूसरों को खाना खिलाए और अपने राज-दरबारियों पर पूरा भरोसा रखे । हम आपके पुराने सेवक हैं, पिछले पचास बरस से आपकी सेवा कर रहे हैं, यद्यपि इससे आपकी दशा में कोई अन्तर नहीं हुआ, मगर यह तो भाग्य की बात है । हम क्या कर सकते हैं सिवाय सेवा के ? मैं जनता को विश्वास दिलाता हूँ कि हम जनता के साथी हैं । हमारे सारे दरबारी जनता की भलाई चाहते हैं और इसका प्रमाण यह है कि हमने इस विधान की तैयारी पिछले दस वर्षों में एक करोड़ बार जनता का नाम लिया है; एक

करोड़ बार; एक करोड़ बार... बया दुनिया की कोई पालियामेण्ट जनतन्त्र में हमारा मुकाबला कर सकती है ?" (दस मिनट तक तालियाँ) ।

अभी दरबार-हाल तालियों से गूँज ही रहा था कि एकाएक किसी ने आकर खबर दी—

"हुजूर, जनता दरबार की घोर आ रही है ।"

"हाय !" पाँचू ने घबराकर कहा, "वह इधर क्यों आ रही है?

उसका इधर क्या काम है ?"

दूसरा जासूस आया— "हुजूर, जनता दरबार की घोर बढ़ती चली आ रही है, चारों ओर से आ रही है ।

पाँचू ने कहा— "उसे रोक दो । उसे रोक दो । इसी में जनता की भलाई है ।"

तीसरे जासूस ने आकर कहा— "हुजूर वह नहीं रुकती; आगे-आगे बढ़ती जाती है । वह कहती है हम अपने पाँचू को देखेंगे; अपने दरबारियों से मिलेंगे, अपने दरबार में खुद बैठकर अपनी भेंट हुजूर की खिदमत में पेश करेंगे ।"

"भगर," एक दरबारी ने कहा, "भगर वे लोग यहाँ कैसे आ सकते हैं ? यहाँ मुग़ल है और उनके शरीर से दुर्गन्ध आती है । यहाँ अच्छे कपड़े हैं और उनकी पोशाकें तार-तार हैं, यहाँ स्वास्थ्य है वहाँ बीमारी ।"

"हुजूर !" दरबारी ने हाथ जोड़कर पाँचू से कहा, "हुजूर ! भगर जनता यहाँ आ पहुँची तो हमारी तन्दुरुस्ती खराब हो जायगी "

पाँचू ने कहा— "उन्हें रोक दो; फौरन रोक दो । जन-विप्लव की दफा पाठ के अनुसार..."

इतने में चौथा जासूस आया हुआ आया ।

"हुजूर, ग़ज़ब हो गया । जनता बिगड़ गई, बदस गई । पहले तो वह अपनी जेब में उपवास और अपने हाथ में चापके लिए भेंट लिए बन

रही थी, मगर अब वह चलते-चलते थक गई है हुजूर ! उसे मालूम नहीं था कि दरवार इतनी दूर होगा । अब उन्होंने अपनी भेंट जेब में डाल ली है और हाथों में दृढ़ निश्चय लिये आगे बढ़ रही है । हुजूर, मैंने रोकना चाहा तो उन्होंने मुझे जोर से घूरा और आगे बढ़ गए और एक भयावना गीत गाने लगे—वह गीत जो दरवार को भी बदल देना चाहता है, जो कहता है कि अब जनता के पास भी अपना सिर है, अपनी अबल है, अपनी सूझ-बूझ है ।”

सारा दरवार अमानवीय चीखों से गूँज उठा—“फौज बुलाओ, फौज ! जनता को उसका सिर मिल गया है ! जनता को अक्ल मिल गई है ! अरे, पुलिस किधर है ? फौज किधर है ? जनता को सिर मिल गया ! अब वह हमारे दरवार को खत्म कर देगी ! फौज बुलाओ, उसे गोली से उड़ाओ ।”

पाँचवाँ जासूस खून में लथपथ दरवार के अन्दर आया और आते ही जमीन पर लेटकर कहने लगा—“वे लोग बहुत पास आ गए हैं । उन लोगों के पास भूख के पत्थर हैं, अकाल की आग है, नग्नता का वारुद है और इन्कलाब का डाइनामाइट है । हुजूर, फौज को आज्ञा दीजिए ।”

पाँचू ने गारद के कमाण्डर से कहा—“मारो !”

कमाण्डर सलामी देकर बाहर चला गया । पाँचू ने कहा—“दरबार का कार्यक्रम जारी रखा जाय । अब दरबारी नम्बर सात का भाषण होगा ।”

दरबारी नम्बर सात ने कहा—“हमारे जन-विधान की ४२वीं धारा के अनुसार जनता को लिखने और बोलने की, जलसे और जुलूस की पूरी स्वतन्त्रता होगी, मगर ...”

यात्री दरबार से बाहर निकल आया । बाहर गोली चल रही थी । मशीनगनों की तड़तड़ जीरों पर थी । अन्दर दरबारी नम्बर सात भाषण दे रहा था और जनता दरबार-हॉल से दूर-दूर घरती पर बिछी जा रही थी, लोट-पोट हो रही थी और खून की लहरें वह

रही थी। यात्री इस दूरम को देख न सका और यह उसी वक्त संगल द्वीप से विदा हो गया और बंगल द्वीप जाने के लिए एक नौका पर सवार हो गया ताकि देसे कि वहाँ की जनता किस हाल में है। वहाँ जनता अवश्य अच्छी दशा में होगी, उसने नौका में बैठे-बैठे सोचा।

नाव समुद्री खाड़ी को चीरती हुई बंगल द्वीप के किनारे की ओर बढ़ रही थी। मत्ताह चुपचाप डंडे पर बैठा हुआ था। एकाएक नाव का रेडियो बोल उठा—हम बंगल द्वीप से बोल रहे हैं। यात्री नौका और रेडियो की ओर मुड़ा।

“हम बंगल द्वीप से बोल रहे हैं,” रेडियो कह रहा था, “हमने संगल द्वीप वालों को विधान की लड़ाई में भिदा दिया है। श्रोता यह जानकर प्रसन्न होंगे कि संगल द्वीप का विधान सिर्फ दस साल में बना है, लेकिन हम बंगल द्वीप का विधान बीस वर्षों में बनायेंगे और अगर पिछले दस साल में संगल द्वीप के दरबार ने जनता का नाम एक करोड़ बार लिया है तो हमारे दरबार ने इस अवधि में जनता का नाम दो करोड़ बार लिया है, दो करोड़ बार दो करोड़ बार दो करोड़ बार...”

यात्री के कानों में दो करोड़ मशीनयन्त्रों की धावाज आई।

“नौका घुमा लो,” यात्री ने मत्ताह से कहा, “मैं अपने देश फङ्गल द्वीप जाऊँगा, जहाँ न दरबार है न दरबारी, सिर्फ जनता ही जनता है।”



## साहब

“साहब, यह मैं क्या सुनता हूँ कि इस देश में खाने की कमी है; लोगों को खाना नहीं मिलता ! यह झूठ है, गलत दोषारोपण है और किसी कम्युनिस्ट की घड़ी हुई बात है। वरना साहब, वास्तव में इस देश में खाने की कोई कमी नहीं है। यहाँ हर प्रकार का खाना मिलता है। अब मुझको देखिए; मैं मुर्ग, बटेर, तीतर, पुलाव, कोरमा, कवाब हर चीज खाता हूँ, प्रतिदिन खाता हूँ और बड़े मजे से खाता हूँ। सुबह-शाम मेरी थाली में भाँति-भाँति की साग-तरकारियाँ परोसी जाती हैं। और अभी परसों की बात है। मैं एक मंत्री के यहाँ निमन्त्रण पर गया था। वहाँ पर कम-से-कम दस प्रकार के खाने मेज पर सजे हुए थे और हर प्रकार के फल मौजूद थे। इतने बड़े बड़े सन्तरे मैंने कहीं नहीं देखे। हमारे नागपुर के सन्तरे तो उनके सामने कुछ भी नहीं हैं। मंत्री से पूछने पर मालूम हुआ कि सन्तरे खास तौर पर अमरीका के कैलिफोर्निया नामक स्थान से मँगवाये गए हैं और उनकी कीमत प्रति सन्तरा तीन ‘मार्शल डालर’ है। कैलिफोर्निया की दो वस्तुएँ बहुत प्रसिद्ध हैं, एक तो सन्तरे और दूसरी हालीवुड की एक्ट्रेसें। अभी सन्तरे आये हैं, लेकिन जब ‘मार्शल योजना’ हिन्दुस्तान पर लागू होगी तो हालीवुड की एक्ट्रेसें भी आर्यंगी और देश के उद्योग-धन्वों को प्रोत्साहन देंगी।

“खैर, बात खाद्य की हो रही थी, मैं कहीं से कहीं पहुँच गया ! उस दिन की बात है जब कि मैं गवर्नमेण्ट हाउस में निमन्त्रित किया गया था । वहाँ पर भी मैंने खाने-पीने की कमी नहीं देखी । कई बार अपने दोस्त रणछोड़दास के यहाँ सभाएँ हुईं । उनमें सभी लोग खाते-पीते, आनन्द मनाते नजर आये । सम्भव में नहीं आता कि अखबारों में हर रोज यह खबर कैसे आ जाती है कि देश में भ्रष्टाचार का संकट है । साहब, मैं सब निवेदन करता हूँ कि देश में भ्रष्टाचार का संकट कहीं नहीं है और अगर कहीं है तो कम्युनिस्टों का पंदा किया हुआ है । आप इनको गोली मार दीजिए, भ्रष्टाचार अपने-आप मिट जायेगा । ये कम्युनिस्ट बड़े बदमाश होते हैं, साहब ! मैं आपको अपना उदाहरण देता हूँ । एक बार ऐसा हुआ कि मैंने अपने ड्राइवर को तीन महीने से तनख्वाह नहीं दी । कुछ ऐसा ही संयोग हो गया, अचानक मैं तो अपने कर्मचारियों का स्वयं ही बहुत खयाल रखता हूँ । तो साहब, वह बहुत भी-खपड़ करने लगा । मैंने जब उसे अच्छी तरह से डाँटा तो दूसरे-दिन लाल बाबटे वालों को बुला आया । और भ्रातृ-प्रातृ की कोठियों में शोर मच गया कि पहली कोठी वाले साहब ने अपने ड्राइवर की तीन महीने की तनखा मार ली है । साहब, इन लाल बाबटे वालों ने उस ड्राइवर को तीन महीने की तनखा दिलवाई और एक महीने का बोनस भत्ता दिलवाया । ऐसी भीषण खोपड़ी के लोग हैं ये ! इनको हमारी सरकार जितनी जल्दी समाप्त कर दे अच्छा है । हमने स्वराज्य इसलिए नहीं लिया कि ड्राइवरों को बोनस देते फिरें और भ्रष्टाचारियों को मुँह लगाते लगेँ । ऐसे हुकुमत हो चुकी !

“हाँ भई, दूसरा पैग बना लो । अगर जरा बड़ा बनाना । जाने क्यों आज राष्ट्रीय में मजा ही नहीं आ रहा है ! और ये भ्रष्टाचार में सते हुए हरे भट्ट और भालू के चक्कों भी क्यों लकड़ी के बने हुए मालूम पड़ते हैं ? होटल वालों ने अपना खानसामा बदल दिया है शायद ! क्यों मिर्चा टेसर, वह पुराना खानसामा कहीं चला गया ?

साठ रुपए तनखा माँगता था ? बाप रे ! अरे मियाँ, ये लोग साठ क्या साठ सौ में भी खुश नहीं होंगे । आजकल तो जमाने की हवा ही ऐसी है । जिसे देखो, सिर पर चढ़ा आ रहा है । कहता है, महँगाई दो, जीवन-वेतन दो । अरे भाई, अब साठ माँगते हो, पहले कैसे सात में गुजर करते थे ? मैं कहता हूँ आग लग रही है, जमाने को । चीन में देखो क्या हो रहा है ? मलाया में क्या हो रहा है ? बर्मा में क्या हो रहा है ? यह हमारी सरकार क्यों सोई पड़ी है ? चीन में फौजें यों नहीं भेजती ? बर्मा और मलाया में क्यों नहीं सेना भेजती ? क्या हुआ है इसको ? अरे भाई, मैंने तो अपनी पत्नी के हीरे-जवाहरात और आभूषण स्विट्ज़रलैंड भेज दिये हैं । तुमने कहाँ भेजे हैं ? दक्षिणी अमरीका ? हाँ, भाई ! मैंने भी सुना है कि ब्राजील आजकल बहुत ही सुरक्षित स्थान है । वहाँ आजकल कोई कम्युनिस्ट दम नहीं मार सकता । मगर यार, इधर आओ ! समीप आओ ! एक बात कान में कहता हूँ । कोई भरोसा नहीं है इन लोगों का । क्या मालूम किसी दिन वहाँ भी उठ खड़े हों ? ड्राइवर लोग वहाँ भी तो होते होंगे । हाँ, मजदूर भी होंगे । बस, ये लोग फिर वहाँ भी पहुँच जायेंगे ।

“हाँ, भाई ! मैं खाद्य पदार्थों की बात कर रहा था । हिन्दुस्तान में अन्न की क्या कमी है ? अरे मियाँ, यह तो सोने की चिड़िया है, सोने की चिड़िया ! यहाँ की तो मिट्टी भी सोना उगलती है । एक दिन हमारे भंगी को कूड़े के ढेर में सोने का लटकन मिला । एक दिन मैंने देखा कि भंगी की बीवी ने मेरी पत्नी का लटकन पहन रखा है । हमारे भंगी की बीवी बड़ी खूबसूरत है । देखो तो लट्टू हो जाओ । एक दिन आ जाना, तुम्हें दर्शन करायेंगे । ही—ही—ही... । मैंने उससे पूछा—‘तूने यह लटकन कहाँ से लिया ?’ बोली—‘मेरे घर वाले ने दिया है ।’ मैंने भंगी से पूछा । वह बोला—‘मुझे कूड़े में मिला था ।’ यह है हिन्दुस्तान की मिट्टी ! अपना उदाहरण देता हूँ । एक बार जब मैं बहुत छोटा था,

मैंने मंगी के बेटे के साथ, यानी यह जो अब हमारा मंगी है, इसके साथ खेलते हुए कूड़े के ढेर को ढूँढना शुरू किया, तो उसमें से हमें चार घाने के पैसे मिले। दो सन्तरे, एक भमरूद और एक किताब के पन्ने, जिसका नाम था 'सौन्दर्य के साधन' और एक जनाना स्लीपर

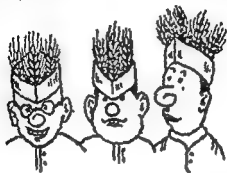


का जोड़ा (जिससे बाद में भग्ना ने मुझे पीटा), एक केक का टुकड़ा, जिसके साथ मक्खन लगा हुआ था, बहुत सारा पुलाव और गोस्त और चार-छ रोटियाँ। यह तो एक कूड़े-करकट के ढेर का हाल है। अब जरा गिन जाओ भास-पास की सैकड़ों कोठियाँ! ये गरीब लोग, जो इन ढेरों को टटोलते हैं, मज्जा उड़ाते हैं, मज्जा! कलकत्ता, बम्बई, मद्रास आदि बड़े-बड़े शहरों में ऐसे लाखों-करोड़ों ढेर लगे रहते हैं, जिनसे लाखों-करोड़ों आदमी फायदा उठाते हैं। और हमें तुम्हें इससे कोई लाभ नहीं होता, यद्यपि हमारे ही घरों से सब चीजें जाती हैं। मैं तो कहता हूँ कि हमारी सरकार इन कूड़ा-करकट धुनने बासों पर टैक्स लगा दे तो कैसा रहे? लाखों हाथ, मेरे पार! कैसी बात कही है! इस बात पर सरकार को हमें मंत्री

बना देना चाहिए। करोड़ों रुपए की आमदनी कर दूँ इसी एक टैक्स से। मैं तुमसे सच कहता हूँ ये लोग वास्तव में कूड़े-करकट के ढेर से खाना नहीं ढूँढ़ते हैं। यह सब कम्युनिस्टों की चालवाजी है। मैं सब जानता हूँ। इन सब लोगों पर टैक्स लगाना चाहिए। क्या विचार है—मैं सरकार को पत्र लिखूँ ?

“यह अन्न की पैदावार बढ़ाने का सवाल भी सरकार को यों ही परेशान कर रहा है, वरना हिन्दुस्तान में क्या नहीं होता ! गेहूँ होता है, बाजरा होता है, मक्का होती है, गन्ना होता है, पटसन होता है, गुलाब का फूल होता है, अण्डा होता है और मुर्गे की टाँग होती है, जिसका जवाब दुनिया में कहीं नहीं है। क्यों सच कहना ? मुर्गे की टाँग का जवाब दुनिया में है ? सच कहना दोस्त ? क्या मजे की बात कही है ! और लोग अनाज पैदा करने का रोना रो रहे हैं। अरे भाई मैं तुम्हें अपना उदाहरण देता हूँ। मेरे पास चार दर्जन से ज्यादा फैल्ट की टोपियाँ होंगी। और एक टोपी की बारी दूसरे-तीसरे सप्ताह कहीं जाकर आती है। अब एक बार मैं माँव (mauve) रंग की अमरीकी टोपी पहनने लगा (क्योंकि मैं उसके साथ का अमरीकन सूट पहन रहा था) कि मैं क्या देखता हूँ कि टोपी के ऊपर एक खूबसूरत पी-पलावर उगा हुआ है। ऐं ! यह कैसे हुआ ? देखा तो टोपी के ऊपर एक जरा-सी मिट्टी का टुकड़ा पड़ा हुआ है। कहीं रास्ते में गिर गया होगा। कहीं से उसे नमी भी मिल गई होगी। अब यह इस जरा-सी मिट्टी से फूल उग आया, तो जनाव यह है हिन्दुस्तान की मिट्टी ! मैं सोचता हूँ अगर प्रत्येक हिन्दुस्तानी अपनी टोपी पर अन्न उगाना शुरू कर दे तो कैसा रहे ? टोपी की ऊपरी सतह बावन वर्ग इंच है और हिन्दुस्तान में तीस-पैंतीस करोड़ आदमी तो बसते ही होंगे। अब हिसाब लगा लो तुम। मैं कहता हूँ, अगर हिन्दुस्तान के सारे आदमी सिर्फ अपनी टोपियों पर फसल उगाना शुरू कर दें तो कभी दुर्भिक्ष नहीं हो सकता। क्या कहते हो—नंगे सिर वाले लोग क्या करें ? अरे भाई, उनके

सिरो पर भी कानूनन टोपियाँ बल्कि छोटी-छोटी मिट्टी की टोकरात्मों रख दी जायें। हा—हा—हा ! कंसा चुल्फ रहे ! क्या दिमाग



काम कर कर रहा है मेरा इस वक्त ? जरा धन भी एक बड़ा पैग देना । घसलो फेंच बाण्डो पीकर मेरा दिमाग काम करता है । जाने मद्य-निषेध के बाद क्या होगा ? खैर, यार तो तब भी पियेंगे । यहाँ नहीं पियेंगे तो गोमा जाकर पियेंगे । मैंने तो अपना बैंक एकादण्ट भी गोधा भेज दिया है । जाने यहाँ काम को क्या हो जाय ! कौन किसीका भरोसा करे ? हँ ! तुम भी ऐसा ही करो मेरे यार ! घस, दो-चार साल यहाँ रहने दो, बाकी बाहर भेज दो ।

“भच्छा भैया, एक बात और सुनो । अपने यहाँ जो कहते हैं कि घन का संकट है तो ये लोग कुत्ते, धूँहे, बिल्लियाँ क्यों नहीं खाते ? भरे भाई, दूसरे कई पूर्वी देशों में तो लोग इन्हें बड़े चाव से खाते हैं । कुत्ते, बिल्लियाँ क्या, ये लोग तो गाँवों तक को उमाल-कर खा जाते हैं । यहाँ क्यों नहीं खाते ये लोग ? यहाँ तो कुत्ते, बिल्लियाँ, धूँहे इतनी संख्या में हैं कि क्या बताऊँ ! स्वयं मेरी कोठी में इतनी भारी संख्या में हैं कि इनसे एक भच्छा-खासा चीनी रेस्तराँ चल सकता है । मगर किसी में इतनी धन्य ही नहीं कि इन गरीब घादमियों से यह चीजें खाने को कहें । ध्येय ही प्रति सप्ताह

राशन में गेहूँ और वाजरा और चावल देकर इन लोगों के दिमाग खराब कर रहे हैं। मैं तो समझता हूँ राशन एक सिरे से बन्द ही कर देना चाहिए। तब कहीं जाकर ये लोग सीधे होंगे। अरे, मैं तुम्हें अपना उदाहरण देता हूँ। मैं जब पेरिस में था तो मुझे एक कॅनेडियन क्रमाण्डर ने बताया कि एक बार वह ऐसे प्रदेश में चले गए कि उन्हें दो सप्ताह तक घास ही उवालकर खानी पड़ी और वे लोग घास ही उवालकर खाते रहे और बिल्कुल ठीक, मजे में तन्दुरुस्त रहे। अब बताओ, यदि युद्ध के दौरान मैं कॅनेडा के यूरोपियन लोग घास खा सकते हैं तो कमी के दिनों में हिन्दुस्तानी लोग घास क्यों नहीं खाते ?

“क्या कहा ? बीजापुर के लोग घास ही खा रहे हैं ! गुजरात में भी ! ठीक है ! इन ग्रहमकों (मूर्खों) के साथ ऐसा ही व्यवहार होना चाहिए। निरे मूर्ख हैं ये लोग ! क्या कहा तूने ? मूर्ख न होते तो कूड़े के ढेर में खाना क्यों ढूँढ़ते ? स्वराज्य में आजादी क्यों देखते ? और अटलाण्टिक चार्टर में शान्ति क्यों तलाश करते ? और पूँजीपति से प्रेम की आशा क्यों रखते ? ...कौन है तू जो हम दो शरीफ आदमियों के बीच में बोलता है ? अरे तू इस होटल का वैरा है ? यहाँ हमारे पास खड़ा होकर सारी बातें सुनता है ! तू भी मुझे कम्युनिस्ट मालूम होता है। मैं अभी मैनेजर से तेरी रिपोर्ट करता हूँ। नहीं, नहीं, यार ! अब मैं और नहीं पियूंगा। इस साली से नशा ही नहीं आ रहा है।”

## मूँग की दाल

पूज्य बोंगा भाई जी,

बन्देमातरम् ! बोंगानाथ प्रान्त में कांग्रेस-मिनिस्ट्री को जमाना कोई मरल काम न था, क्योंकि प्रान्तीय प्रसेम्बली में प्रत्येक सदस्य की एक अपनी अलग पार्टी थी और मुझे हर समय यह भय श्रुतावा रहता था कि कहीं प्रसेम्बली के सदस्यों का बहुमत हमारी कैबिनेट (मन्त्रीमण्डल) के अस्पमत को धोखा न दे दे। ऐसी स्थिति को देखते हुए मुझे निम्नासित काम करने पड़े। सो भी इस आदर्श को धामने रखकर कि जब तक हमारे प्रान्त में कांग्रेस-मिनिस्ट्री दृढ़ नहीं हो जाती, हमारे प्रान्त में बोंगा राज्य स्थापित नहीं हो सकता। बन्देमातरम् !

भंजिभण्डन बनाते ही सबसे पहला काम मैंने यह किया कि अपने सिद्धांत प्रसेम्बली के तमाम मेम्बरों को अपने दुश्मनों (बिरोधियों) की सूची में लिख लिया। (हमारी प्रसेम्बली में उनवास मेम्बर है।) फिर इस सूची में से मैंने दस ऐसे नाम छोट लिये जो हम प्रसन्न पर मेरा बिरोध बिया करते थे। इनको मैंने मन्त्री चुन लिया। ये लोग हमसे पहले मेरे कट्टर बिरोधी थे, अब मेरे सबसे अच्छे दोस्त हैं और कांग्रेस-मिनिस्ट्री के सबसे अधिक विद्वस्त व्यक्ति हैं, मन्त्रों बने, ई०।



फिर झलझर भी शोर मचायेंगे । इसलिये मैं बहुत चिन्तित था और सोच रहा था कि इन लोगों को कैसे राजी करूँ । इतने में विरोधी पक्ष के एक प्रमुख सदस्य ने किसी साधारण-सी बात पर भूख-हड़ताल शुरू कर दी और मुझ पर दबाव डालने लगा । लेकिन मैं कहीं दबने वाला था ! मैंने उसे बताया कि भाजकल हर तरह की हड़तालों गैर-कायूनी करार दी जा चुकी हैं । तुम भूख-हड़ताल भी नहीं कर सकते । फिर इस प्रकार का दबाव डालना सत्य और अहिंसा के विरुद्ध है । फिर अब भूख-हड़ताल की आवश्यकता ही क्या है । कांग्रेस ने बौंगराज स्थापित करके बौंगास्थान के इतिहास में एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है जो, जब तक दुनिया रहेगी, जगमगाता रहेगा आदि, आदि । बहुत सारी बातें मैंने उससे कहीं, लेकिन वह कम्बस्त नहीं माना । अपनी भूख-हड़ताल पर डटा रहा । अन्त में एक दिन मैंने उसे भसग से जाकर कहा कि तुम्हें वास्तव में भूख-हड़ताल की आवश्यकता नहीं है । आवश्यकता तुम्हें इस बात की है कि तुम्हारे पास एक दानदार परमिट हो, जिसके द्वारा तुम बिलायत से झूक गाड़ियाँ यहाँ भेगा सको । मेरी यह योजना सुनते ही उसका चेहरा खिल उठा और उसने उसी क्षण 'वीयर' का एक गिलास भेगवाकर अपनी भूख-हड़ताल तोड़ दी ।



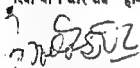
इससे मुझे यह भी मालूम हो गया कि परमिट में कितनी

शक्ति है, और जोर है, अपनी बात मनवाने का । उस दिन से मैं अपनी दाहिनी जेब में परमिट और बाईं जेब में शेष सभी मेम्बरों को रखता हूँ (सिर्फ उन दो बदमाश कम्युनिस्टों को छोड़कर जो जेल में हैं) । और अब मन्त्रि-मण्डल का काम बड़े मजे में चलता है । सच बात तो यह है कि अब हमारी असेम्बली में कोई विरोधी पक्ष ही नहीं है । और वोंगाराज में विरोधी पक्ष की आवश्यकता ही क्या है ? अब मैं आपसे यह निवेदन करता हूँ कि यदि आप आगामी चुनाव के समय मेरे आदमियों को वोंगा-टिकट दे दें तो वे लोग हमेशा आपके अनुयायी रहेंगे । अन्त में मुझे सिर्फ यह कहना है कि कुछ बदमाश कांग्रेस वालों ने मुझे दुश्चरित्र कहकर आपके कान भरे हैं । मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि यह आरोप मिथ्या और सर्वथा निराधार है । मैं रत्ती-भर भी दुश्चरित्र नहीं हूँ पिछले बारह वर्ष से मैं अपनी पत्नी के साथ भी अपनी माँ और बहन का-सा व्यवहार कर रहा हूँ; और यह कांग्रेस के सच्चे आदर्शों के अनुसार है । जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैंने स्थायी रूप से इन्द्रिय-निग्रह कर लिया है । आजकल मैं सिर्फ मूँग की दाल खाता हूँ और नीरा पीता हूँ । जो लोग यह कहते हैं कि मैं दुश्चरित्र हूँ उन्हें मालूम होना चाहिए कि हमारी असेम्बली में कोई महिला मेम्बर तक नहीं है । फिर मुझ पर चरित्रहीनता का अभियोग क्यों कर लगाया जा सकता है ?

प्यारे बोंगा भाई, मुझे आप से आशा है कि आप उन दुश्मनों की बातों में नहीं आयेंगे । ये लोग तो आपके और मेरे बीच मनमुटाव की खाई खोदने पर तुले हुए हैं ।

और अब मैं अपने इस पत्र को एक सुसंवाद के साथ पूरा करता हूँ । आप सुनकर अत्यधिक प्रसन्न होंगे कि यद्यपि मैं वकालत की परीक्षा में पाँच बार अनुत्तीर्ण हो चुका हूँ, लेकिन अब वोंगा-यूनिवर्सिटी इस वर्ष मुझे कन्वोकेशन के अवसर पर एल० डी०, यानी वकालत की सबसे ऊँची डिग्री, आनर्स के साथ

प्रदान कर रही है। हा-हा-हा ! मेरा जी बहकहे लगाना चाहता है। समय का फिरना देगिए ! इसी यूनिवर्सिटी में मुझे अपने विद्यार्थी जीवन में बसावित की परीक्षा में पाँच बार अनुत्तीर्ण कर दिया था। धीरे धीरे हा-हा-हा !



भाषका,  
बहुत-बहुत-बहुत विरवासापान  
बोंगाचन्द

प्रधान मन्त्री—उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी योगानाव  
प्रान्त, बोंगास्थान जनतन्त्र ।

प्यारे बोंगाचन्द,

बन्ने ! तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। जिन कोशिशों से तुमने अपने प्रान्त में बापेसी-मिनिस्ट्री स्थापित की है वह इस बात का प्रमाण है कि हुजूर महाराज की मृत्यु के बाद उनकी आत्मा हमारा मार्ग-प्रदर्शन कर रही है। मुझे तुम पर पूरा-पूरा भरोसा है और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि भ्राताजी बुनाथ में तुम्हारी हर तरह से अपासम्भव मदद की जायेगी और तुम्हीं को पूरे उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी (कोई दिशा छूट गई हो तो वह भी तिल देना) योगानाव प्रान्त का प्रधान मन्त्री बना दिया जायगा।

लेकिन एक बात मेरी समझ में अब तक नहीं आई। तुमने मिनिस्ट्री बनाते समय बगुले को क्यों नजर भ्रन्दाज किया ? बगुला, मैं जानता हूँ कि एक बहुत ही भूख और सम्प्रदायवादी आदमी है। लेकिन राज की परिस्थितियों में वह हमारे बड़े काम का आदमी सिद्ध हो सकता है। तुम्हारे प्रान्त में उसका काफी जोर है। मेरा खयाल है कि तुम बगुले को मन्त्रि-मण्डल में ले लो और उसके समर्थकों को यानी बगुला-भक्तों को दो-चार पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरियों के पद बाँट दो। फिर इस प्रान्त में से हमें कोई नहीं हिला सकता। हम बात को अभी न भूलो कि फिर भी कभी हमारे प्रमत्नों के

बावजूद ग्राम चुनाव होगा। उस समय हमें बगुला-भक्तों की बड़ी जरूरत होगी।

ॐ  
को रू में तुम्हारे उस काम से भी सन्तुष्ट नहीं हूँ जो तुमने अब तक रिपयूजी लोगों के लिए किया है। इसके सिवा तुम्हारे प्रान्त में भ्रम का सवाल है। खाने-पीने की चीजें महंगी हैं। इस सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट तत्काल भेजो। और मूंग का दाल का खाना फौरन बन्द कर दो। मूंग की दाल खाना और तीसरे दर्जे में खाना करना उन दिनों अच्छा मालूम होता था जब श्री हुजूर महाराज जीवित थे। उनके मरने के बाद अब कोई ऐसी आवश्यकता शेष नहीं रह गई। और फिर तुम जिस पद पर हो उस गद्दी पर बैठकर मूंग की दाल खाना सरकारी रीव-दाव और दबदबे के प्रतिकूल है। इस आदत का तत्काल परित्याग करो।

तुम्हारा  
बोंगा भाई

पूज्य बोंगा भाई,

बन्देमातरम् ! आपका गुप्त पत्र मुझे मिला। मैंने जाँच-पड़ताल करके निम्नलिखित कार्य कर डाले हैं—

(१) मैंने बगुला-भक्तों में एक को मन्त्री चुन लिया है। लेकिन उसके पास कोई विभाग न होगा; कैबिनेट में उसका कोई स्थान न होगा; और असेम्बली में उसको कोई सीट न होगी, क्योंकि वह असेम्बली का सदस्य नहीं है। बगुले ने अपनी ओर से यह आश्वासन दिया है कि वह साम्प्रदायिकता (फिरकापरस्ती) को बिलकुल तिलाञ्जलि दे देगा; और आगे से मुसलमानों को हरिजनों के बराबर समझेगा। इससे आप समझ जायेंगे कि बगुले ने कहाँ तक अपनी साम्प्रदायिकता को छोड़ दिया है।

(२) लेकिन बगुला-भक्तों को पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरी चुनना बड़ी टेढ़ी खीर है। मैं यों तो इन्हें पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरी बना सकता हूँ या उपमन्त्री बनाकर इन्हें डिप्टी-सेक्रेटरियों के साथ

लगाकर गुप्त न्यायालय की कार्यवाहियों के लिए भी नियुक्त कर सकता हूँ, लेकिन सवाल नियुक्तियों का नहीं है; सवाल वास्तव में यह है कि वगुला-भक्त तो भ्रसेम्बली के मेम्बर भी नहीं हैं। इसलिए अधिक मंत्री बनाने के लिए यह आवश्यक है कि भ्रसेम्बली के अधिक सदस्य बनाये जायें। और इसके लिए यह जरूरी है कि प्रान्त में उम्मीदवारों के लिए ज्यादा निर्वाचन-क्षेत्र मंजूर किये जायें। यह काम इस तरह से भी हो सकता है कि नये निर्वाचन-क्षेत्रों के बजाय पुराने निर्वाचन-क्षेत्रों का ही बँटवारा करके ज्यादा हिस्से कर दिये जायें। लेकिन निर्वाचन-क्षेत्र निर्दिष्ट करने का अधिकार तो केन्द्र को ही है और आप लोग इस काम में निष्णात भी हैं। एक पूरे महाद्वीप का बँटवारा करके आपने काफी अनुभव प्राप्त किया है। मैं चाहता हूँ कि निर्वाचन-क्षेत्रों के बँटवारे में आप मेरी सहायता और मार्ग-प्रदर्शन करें।

(१) हमारे प्रान्त में अब कोई रिपयूजी-समस्या नहीं रही। मैंने अपने शरणार्थी-मंत्री से इनकी जाँच-पड़ताल कर ली है। उनका कहना है कि अब हमारे प्रान्त में कोई शरणार्थी-समस्या नहीं है। इससे पहले शरणार्थियों का सवाल बहुत ही गम्भीर रूप धारण कर चुका था। फिर मैंने वर्तमान मंत्री को, जो स्वयं शरणार्थी हैं, शरणार्थी-मंत्री बना दिया और अब यह समस्या हल हो चुकी है। न केवल यहाँ कोई रिपयूजी-समस्या है, बल्कि कोई रिपयूजी भी नहीं है। जो शरणार्थी थे, वे मय-के-सब या तो कैम्पों में और या जेलों में बसा दिये गए हैं; और जो कुछ गिने-चुने इज्जत वाले शरणार्थी बाकी रह गए थे, उन्हें जमीन, ठेका व परमिट आदि देकर बसा दिया गया है। इनके बाद अब मैं किसी रिपयूजी-समस्या पर विचार करने के लिए तैयार नहीं हूँ। हाँ अगर भाषकी भाजा हो तो दूसरी बात है।

(४) जहाँ तक वस्तुओं की मँहगाई का सम्बन्ध है, मेरा समाल है कि इसकी ओर ध्यान ही न दिया जाय। केन्द्र से भी

मेरा यही निवेदन है कि वह चीजों की मँहगाई की ओर जरा भी ध्यान न दें; ऐसा समझ ले मानो मँहगाई का अस्तित्व ही नहीं है। इससे बहुत-सी कठिनाइयाँ आप-ही-आप हल हो जायेंगी। क्योंकि जब आप मँहगाई का अस्तित्व ही स्वीकार नहीं करते तो फिर ब्लैक मार्केट

की परेशानी भी बाकी नहीं रहती। बल्कि मैं तो समझता हूँ कि आज-कल के जमाने में ब्लैक-मार्केट को कानूनी तौर पर जायज कर देना चाहिए। काले बाजार को कानूनी तौर पर जायज



और सफेद बाजार

को नाजायज (अवैध) करार देना चाहिए। और जो आदमी या दुकानदार चीजें सस्ती बेचे उसे कोड़ों से पीटना चाहिए या उसे पागलखाने में धकेल देना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो थोड़े ही दिनों में आप देखेंगे कि देश में मँहगाई की कोई शिकायत बाकी नहीं रह गई है। जनता स्वयं ही सूखकर आलू की तरह पिचक जायगी और इसका जो अवश्यम्भावी परिणाम होगा उससे मकानों का सङ्कट भी हल हो जायगा। ज्यादा खुली हवा और ज्यादा खुली जगह सबके लिए मिल जायगी। और सच्चे बोंगा राज की ओर हमारा एक कदम और आगे बढ़ जायगा।

(५) अन्त में तीसरे दर्जे (वर्ग) का सवाल आता है। मुझे इससे अत्यधिक आत्मिक कष्ट होगा, लेकिन आपके कहने पर मैं

भाज से रेल के तीसरे दरजे में यात्रा करना बन्द करता हूँ और शपथ लेता हूँ कि यात्रा से कभी हवाई जहाज या फर्स्ट क्लास एयर कडीराण्ड से कम में यात्रा नहीं करूँगा। (इसी समय मेरी घाँवें भर आई हैं, क्योंकि मेरी दृष्टि में स्वर्गीय हुजूर महाराजा का चेहरा घूम रहा है, जिन्होंने मुझे बोगाराज दिखाया, लेकिन जिनके मैमोरियल फण्ड (स्मृति फण्ड) की रकम अभी तक पूरी नहीं हुई।

लेकिन योगा भाई, मैं भूँग की दाल खाना कैसे बन्द कर सकता हूँ? मैं कांग्रेस हार्डकमाण्ड का हुक्म नहीं टाल सकता और निष्ठा में किसी से पीछे नहीं रहूँगा। लेकिन मैं समझता हूँ कि मैं क्या खाता हूँ, क्या पहनता हूँ इस पर कांग्रेस हार्डकमाण्ड को हुक्म देने का कोई अधिकार नहीं। यह मेरा अपना निजी मामला है; चाहे मैं भूँग की दाल खाऊँ चाहे तूवरकी। यह तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर एक ऐसा कड़ा निरोध (पाबन्दी) है जिसे मैं किसी दशा में भी स्वीकार नहीं कर सकता। इसलिए मैं बराबर भूँग की दाल खाता रहूँगा। यही मेरा निर्णय है।

आपका,  
बहुत-बहुत-बहुत विश्वासपात्र  
योगाचन्द

अर्जेण्ट टेलिग्राम

योगाभाई से योगाचन्द को,

“भूँग की दाल खाना फौरन बन्द कर दो, वरना अभी त्याग-पत्र दो।”

योगाभाई

अर्जेण्ट टेलिग्राम

योगाचन्द से योगाभाई को,

“परमात्मा के लिए अपने निर्णय पर फिर से विचार कीजिए। भूँग की दाल बिल्कुल निरापद है (स्टाप) भूँग की दाल का कोई राजनीतिक महत्त्व नहीं है (स्टाप) भूँग की दाल को

हुजूर महाराज भी बहुत पसन्द करते थे (स्टाप) देखिए स्वर्गीय हुजूर महाराज की पुस्तक 'मैं और मूंग की दाल' पृष्ठ ३५०।"

वोंगाचन्द

जवाबी तार

वोंगाभाई से वोंगाचन्द को,

"वांग्रेस हार्डकमाण्ड का सर्वसम्मति से फैसला है कि तुम मूंग की दाल खाना बन्द कर दो वरना अलग हो जाओ।"

वोंगाभाई

जवाबी तार

वोंगाचन्द से वोंगाभाई को,

"मूंग की दाल बन्द कर दी है (स्टाप) पेचिश हो गई है (स्टाप) आशीर्वाद भेजिए।

वोंगाचन्द

वोंगास्थान टाइम्स दैनिक समाचार

(स्टाप प्रेस)

वोंगापुर—सूचना मिली है कि श्रीयुत वोंगाभाई और श्रीयुत वोंगाचन्द के बीच जो गलतफ़हमी पैदा हो गई थी अब वह दूर हो चुकी है, इसलिए उत्तरी-पूर्वी-दक्षिणी-पश्चिमी वोंगानाव प्रान्त के मंत्री-मण्डल में अभी कोई परिवर्तन नहीं किया जायगा।



# हिन्दी का नया कायदा

बड़ो उन्नत के बच्चों के लिए

अ—अमन

बच्चो, यह अमन का समय है। जिस तरह 'अ' इस प्राइमर का पहला अक्षर है, उसी तरह अमन (शान्ति) भी हमारी जिन्दगी का पहला अक्षर है—हमारे समाज का पहला ध्येय। अमन हमेशा दो सड़ाइयों के बीच के समय को कहते हैं। पहले सड़ाई होती है, फिर अमन; उसके बाद फिर सड़ाई होती है और अगर सड़ाई नहीं होती तो सड़ाई की तैयारी होती है। अभी छोटे सान ही हुए सड़ाई गरम हो चुकी है। अब दुश्मन हार गए तो अमन का जमाना आया। अमन हमेशा दुश्मन की हार के बाद होता है। बाद रसो, अमन के बाद सड़ाई होती है, आजकल भी सड़ाई की तैयारी हो रही है। अमन के लिए बागज के एक पुत्रों की जरूरत होती है और सड़ाई के लिए आदमी के रून की।

अब हमारी दुनिया के बड़े-बड़े विमान-बेस्ता, जिन्होंने गैस, टैंक, तोर, अगुबम और युद्ध के दूसरे अस्त्र-दास्त्र बनाये हैं, इस बात की घोषणा कर रहे हैं कि सड़ाई की तैयारी का जमाना बहुत कम हो जाय और हम ज्यादा आसानी से एक युद्ध के बाद दूसरे युद्ध में शामिल हो सकें। युद्ध इसलिए बिना जाता है कि दुनिया में अमन हो, क्योंकि अगर युद्ध के बाद अमन न हो तो युद्ध बीन बरे, इसलिए दुनिया में अमन सड़ाई से भी ज्यादा आदरमय है। यह भी दाद रखना चाहिए

कि अगर कुछ उम्मीद किया जाता है कि दुनिया में अमन रहे तो अमन भी मान भी उम्मीद की जाती है कि युद्ध की तैयारी अच्छी भी हो गई। हर अमनो तर्ज़ी पिछले अमन की शर्तों से पैदा होती है। अमन युद्ध को अमन देता है, जिस तरह आवश्यकता आविष्कारों को। उम्मीद करो : अ—अमन !

## आ—आत्मा

बच्चों, आत्मा या अन्तःकरण उस काँटे को कहते हैं जो मनुष्य के अन्दर घुमाकर उसे हमेशा तकलीफ देता रहता है। खेलते हुए गुम्बारे पाँच में काँटे चार काँटा चुभा होगा और तुमने महसूस किया होगा कि जब तुम खेलते हो तो काँटा तुम्हें तकलीफ देता है और अगर न बच्चों, बल्कि पाँच को हवा में लटकाए रखो तो यह काँटा कोई तकलीफ नहीं देता। वस यही हाल आत्मा का है; अन्तःकरण भी मनुष्य को उसी समय परेशान करता है जब वह कोई काम करने लगे, जिसे-तुम या कोई हरकत करे। हाँ, अगर मनुष्य हवा में लटका रहे तो यह परेशान नहीं होता; उसे किसी तरह का दुख नहीं सताता।

पिछले जमाने में मनुष्य का अन्तःकरण उसे बहुत परेशान करता था और हजार बार निकालने पर भी यह काँटा नहीं निकलता था, लेकिन वर्तमान काल में साइन्स ने इतनी प्रगति की है कि अब अन्तःकरण का ऑपरेशन हो सकता है। इसलिए अब अपेण्डिसाइटिस की फालतू लाँट की तरह अन्तःकरण का काँटा भी ऑपरेशन के द्वारा मनुष्य के अन्दर से निकाल दिया जाता है। आजकल तुम्हें सौ में से नित्यानन्द आदमी ऐसे मिलेंगे जिनमें आत्मा का वास नहीं है। मैंने भी काफी वक्त हुआ यह ऑपरेशन करवा लिया था; अब मुझे किसी तरह की परेशानी नहीं है। बच्चों, तुम बड़े होगे तो तुम्हारी आत्मा पर भी यह ऑपरेशन किया जायगा; छोटी उम्र के बच्चों पर यह ऑपरेशन नहीं हो सकता। इसलिए कहो : आ—आत्मा !

## ३—इन्मान

बच्चो, हम सब इन्सान हैं। इन्सानों की दो किस्म होती है— छोटे इन्सान और बड़े इन्मान। छोटे वे होते हैं जो चरही चमाने हैं, खेतोबाड़ी करते हैं, गून कातते हैं, बारबानों से काम करते हैं लमाइयाँ राइते हैं, रेलगाड़ियाँ चमाने हैं और जमीन के जन्दर घुसकर कोयला, ममक, सोना, चाँदी, सोहर निखालते हैं। ये सब छोटे इन्मान बहनाते हैं। दूसरी किस्म बड़े इन्सानों की है। बड़े इन्मान वे होते हैं जो छोटे इन्सानों की इन्मान न समझें।

इन्सान की एक तारीफ यह है कि यह बराबर मृष्टि का इन्ामी है। सारे जानवरों में से अच्छा जानवर इन्मान है और सारे इन्सानों में से अच्छे इन्सान इगलैट्यामी हैं। इगलैड भी 'इ' से बनता है, इगलिष्ट वहाँ के रहने वाले भी इन्मान हैं, यद्यपि कुछ लोग उन्हें ईश्वर गमताते हैं।

बच्चो, अंग्रेज तुमने अबगर देखा होगा। अंग्रेज की बमड़ी सफेद होती है। तुम्हारा रंग काला है, भूरा है, गेहूँआ है, मेडिन गफेद नहीं।

सफेद रंग अमरीकन का भी होता है। अंग्रेज और अमरीकन भाई-भाई हैं और दुनिया के रंगदार बमड़ी वालों को छोटे इन्मान समझने का उनको रवानादि अधिकार है।

'इ' से इत्फाज (मेरा-शेरा) भी बनता है लेकिन धुँकि



सब काट डाले थे। गुलाब की शादियाँ, अगूर की बेलें, फूलों की कतारें, सब उखाड़ दी। हालत यह हो गई कि शाम को जब पिताजी दफ्तर से सीटें तो घर भी न पहचान सके। मैंने उन्हें हैरान और परेशान देखकर मानवना के स्वर में कहा—‘आइए, आइए। परेशान क्यों होते हैं? आप ही का घर है।’ इस पर भी मेरे पिताजी मुंह से कुछ न बोले; मुह-मुहकर घनीचे की ओर देखते रहे। मैंने कहा—‘आप इस तरह धूर-धूरकर क्या देख रहे हैं? पिताजी, सच बात तो यह है कि यह सब-कुछ मैंने किया है। वह जार्ज वाशिंगटन वाली घटना...’ लेकिन इसके बाद पिताजी ने मुझे बोलने नहीं दिया और एक कटे हुए पेड़ का तना उठाकर मेरी जो मरम्मत की तो... खैर, मैं जार्ज वाशिंगटन न बना, स्कूल-मास्टर तो बन ही गया। यह दूसरी बात है कि उस दिन से मेरी दाहिनी टाँग लँगड़ी हो गई और बाई बाजू की एक हड्डी टूट गई।

तो बच्चो, कहने का मतलब यह है कि चाहे टाँग लँगड़ी हो जाय, चाहे बाजू टूट जाय, चाहे जान बली जाय, लेकिन ईमानदारी और सच्चाई को हमेशा प्यार करो। हमेशा सच बोलो, बल्कि पहले बात को तोलो, फिर मुंह खोलो, फिर सच बोलो और कहो : ई—ईमानदारी !

### अं—अंत

बच्चो, तुम यन्त मानी मीत से डरते हो क्या? लेकिन अन्त से किसी को न डरना चाहिए, सिर्फ जीवन से डरना चाहिए। जिन्दगी बड़ी भयातक और खूँसार होती है; मीत आराम और शांति देने वाली होती है। बच्चो, अभी तो तुम जिन्दगी की पहली मंजिल पर हो और तुम्हें स्कूल से, स्कूल-मास्टर से, कायदे (बाल-बोध प्राइमर) से, मानीटर से, श्याम पट्ट से, हर चीज से डर लगता है। लेकिन अभी तो यह जिन्दगी की पहली मंजिल है। ज्यों-ज्यों जिन्दगी आगे जायेगी, तुम्हारे डर

होती जायगी । अब तुम खुलकर हँसते हो, फिर डरकर हँसोगे; अब तुम्हें भगवान् का भी डर नहीं है, फिर तुम हर चीज से, छोटी-सी-छोटी चीज से भी डरोगे; मन्दिर और मस्जिद से डरोगे । यह डर बढ़ता चला जायगा । यहाँ तक कि तुम बचपन से लड़कपन, लड़कपन से जवानी और जवानी से बुढ़ापे में प्रवेश करके मौत की गोद में सो जाओगे । लेकिन जब तक जिन्दा रहोगे डरते रहोगे, क्योंकि हमारे बड़े आदमियों ने हमारे समाज की नींव, इस दुनिया की नींव, जिसमें हम रहते हैं डर पर रखी है, मुहब्बत पर नहीं, स्नेह पर नहीं, मेहनत पर नहीं, भ्रातृत्व और अपनत्व पर नहीं—सिर्फ डर पर । यहाँ मौत नहीं, जिन्दगी भयानक है ।

बच्चो, जर्मनी के प्रसिद्ध कवि रिलके ने एक बार भगवान् से प्रार्थना की—‘मैं तुझसे अपनी इच्छानुसार जीवन नहीं माँगता; मैं तुझसे सिर्फ मौत माँगता हूँ, अपनी इच्छा के अनुसार मौत !’

आओ बच्चो, हम भी यही प्रार्थना करें, क्योंकि मर जाने के बाद यह कोई नहीं पूछता कि मृतक किस तरह जिया, बल्कि यह कि उसका अन्त किस तरह हुआ । इसलिए कहो : अं—अंत !

## क— कुत्ता

बच्चो, कुत्ता बड़ा वफादार जानवर है । यह घर में दिन-भर जंजीर से बँधा रहता है और मेहमानों को देख-देखकर गुराँता है । जब घर में मेहमान न हों तो जंजीर से बँधे-बँधे सो जाता है । उसके बाद सपने में मेहमानों को देख-देखकर गुराँता है, भौंकता है, क्योंकि कुत्ता बड़ा वफादार जानवर है और इन्सान का बहुत अच्छा मित्र है । घर का कुत्ता दिन को सोता है और रात को जागता है और बगीचे की चहारदीवारी के चारों ओर घूमता है । वह बिजली के खम्भों, पुलिस के सिपाहियों और चौकीदारों को देख-देखकर भौंकता रहता है; क्योंकि बिना आज्ञा के अन्दर जाना मना है । कुत्ते को अपनी आवाज बहुत प्यारी मालूम होती है; वह उसे स्वयं भी

सुनता है, और दूसरों को भी बार-बार सुनाता है। इसलिए रात-भर घर के भी लोग अपने कुत्ते की स्वामिभक्ति और मीठी आवाज से ध्यानमग्न होते रहते हैं। कुत्ता मनुष्य का बहुत अच्छा दोस्त और वफादार जानवर है।

घर का कुत्ता ली दिन को सोता है, परन्तु गली का कुत्ता न दिन को सोता है, न रात को। वह हर वक्त जागता रहता और बिल्ला-बिल्लाकर मनुष्यों को अन्धकार के भयावहने सफट से सचेत करता रहता है। इसकी स्वामि-भक्ति इस खतरनाक हृद तक बढ़ी होती है कि वह गली में से निकलने वाले हर व्यक्ति को अपरिविश समझता है। यह भी कुत्ते की वफादारी का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जब कुत्ता प्यार से काटे तो उसकी अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए, अस्पृहात में जाकर अपने पैर में घुपके-से चौदह इंचेकान रागवा लेने चाहिए, क्योंकि कुत्ते की सुखी दूमी में है और कुत्ता बड़ा वफादार जानवर है। तुमने उस वफादार कुत्ते की कहानी तो अवश्य सुनी होगी, जिसने अपने मिकारी मातृक की अनुपस्थिति में उसके बेटे को भेड़ियों के आक्रमण से बचा लिया था। इस प्रकार के कुत्ते भिन्न कहानियों में पाये जाते हैं। आम घरों में जो कुत्ते होते हैं वे बच्चा को भेड़ियों से नहीं बचाने, मीठा मिले तो उन्हे खुद काट लाते हैं। और ये बच्चा ही तक सीमित नहीं रहते, बड़े-बूढ़ों पर भी दाँत रगते हैं।

कहावत प्रसिद्ध है कि प्रेम और इन छिपाये नहीं छिपते। कुत्ते के प्रेम का भी यही हाल है। वह दिन-रात बाजारों में और कूचों में घटनाम होता फिरता है। कुत्ते को देखकर आजकल मनुष्यों ने भी अपने प्रेम का इसी तरह प्रदर्शन करना शुरू किया है। कुत्ते के बारे में कई कहावतें प्रचलित हैं, जैसे 'कुत्ता कुत्ते का बैंगी होता है'; 'कुत्ता बिल्ली का दुश्मन है'; 'कुत्ते को घी हवम नहीं होता', 'धोबी का कुत्ता घर का न घाट का'। इन तमाम कहावतों से कुत्ते की स्वामि-भक्ति पर बड़ा प्रकाश पड़ता है।

कुत्ता किसी जमाने में भेड़िया था; अब सिर्फ कुत्ता है और मनुष्य का स्वामिभक्त सेवक है। अब उसने जंगल छोड़ दिया है और मनुष्य की सेवा को अपना व्रत बना लिया है। इसके पारितोषिक में मनुष्य ने उसके गले में जंजीर बाँधी है और उसे अपने जाति-भाई कुत्तों से घृणा करना सिखलाया है। यही स्वामि-भक्ति और गुलामी का पहला और आखिरी पाठ है।

कुत्ते कुत्ते होते हैं और कुत्ते इंसान भी होते हैं। और इंसान कुत्ते भी अपने मालिक की दी हुई जंजीर से बंधे हर वक्त 'अफ-अफ' करते रहते हैं, और अपने मालिक का इशारा पाकर दुम हिलाने लगते हैं। इन कुत्तों को मांस के बड़े-बड़े टुकड़े दिये जाते हैं, और दूध-भरे प्याले इनके सामने रखे रहते हैं, चाहे दुनिया के दूसरे कुत्ते भूखे ही क्यों न मर जायें। यह इसलिए होता है; क्योंकि इन कुत्तों के गले में मालिक का पट्टा होता है और एक लम्बी सुनहरी जंजीर होती है, और ये कुत्ते अपने मालिक के बड़े वफादार होते हैं।

बच्चो, जब तुम बड़े होगे तो कुत्ते की वफादारी को कभी न भूलना। फिर एक दिन तुम्हें भी एक लम्बी-सी जंजीर मिल जायगी और गोشت के बड़े-बड़े टुकड़े और दूध-भरे प्याले। उस समय जंगल में भेड़िये भूखे होंगे—वेवकूफ !

आओ बच्चो, हम कुत्ते की वफादारी और विनम्रता के गुण गाएँ और कहें : क—कुत्ता !

### ख—खरबूजा

बच्चो, तुमने अक्सर खरबूजा खाया होगा। खरबूजा हिन्दुस्तान का मशहूर फल है। हिन्दुस्तान का एक और भी मशहूर फल है; उसे फूट यानी हिन्दू-मुसलमानों की लड़ाई कहते हैं। हिन्दुस्तान के फल और मेवे बहुत मशहूर हैं और वे दूर-दूर तक दिसावर को जाते हैं, लेकिन फूट का मेवा बाहर नहीं जाता। अंग्रेज उसे विलकुल नहीं खाते। अंग्रेज खरबूजा भी नहीं खाते, क्योंकि इससे हैजा फैलने का

उर होता है। हिन्दुस्तान की हर चीज में हैजा फैल सकता है—खरबूजे से, तरकारी से, दूध से, पानी से, हवा से, मिट्टी से। इस देश के ज़र्रे-ज़र्रे में हैजा छिपा हुआ है। इसलिए खरबूजा कभी नहीं खाना चाहिए। खरबूजा बाहर से बड़ा खूबसूरत और लुगलुगारा होता है, लेकिन अन्दर से बिल्कुल फीका और बीजाँ भरा हुआ होता है। कुछ आदमी भी खरबूजे की तरह होते हैं। लेकिन हम उन्हें खरबूजा नहीं कहते—बड़े आदमी कहते हैं। दुनिया के हर देश में बड़े आदमी होते हैं, लेकिन जितने खरबूजे हिन्दुस्तान में होते हैं और कहीं नहीं होते। खरबूजे में एक और विशेषता भी है। और यह यह कि जब छुरी खरबूजे पर गिरती है तो खरबूजा कटता है और खरबूजा छुरी पर गिरता है तब भी खरबूजा ही कटता है। लेकिन यह विशेषता बड़े आदमियों में नहीं पाई जाती; वे स्वयं कभी नहीं कटते, हमेशा दूसरों को कटवाते हैं, इसलिए कहो : स—खरबूजा !

### ग—गाली

बच्चों, तुम्हें गाली देना पसन्द है न ? क, ख, ग सीखने से बहुत पहले तुम गाली देना सीख जाते हो। मैंने तुम्हें खेल के मैदान में अक्सर गाली देते सुना है। तुम गाली बककर बहुत खुश होते हो—विशेषकर माँ-बहन की गाली।

लेकिन बच्चों, अगर तुम जरा सोचो तो तुम्हें मालूम होगा कि माँ-बहन की गाली वास्तव में कोई गाली नहीं है। इस गाली से तुम्हारी यह दिसचस्पी जाहिर होती है जो तुम्हें अपने से भिन्न सेक्स के प्रति है। क, ख, ग सीखने से पहले ही तुम यह बात जान लेते हो कि लड़के और लड़कियाँ एक दूसरे से अलग प्रकार के होते हैं। यही कारण है कि लड़के लड़कियों को और लड़कियाँ लड़कों को पसन्द करती हैं और जब ये लड़कियाँ और लड़के जवान होते हैं तो एक-दूसरे से शादी-व्याह कर लेते हैं और वही काम करते हैं जिसकी तुम गाली देते हो। भला, इस गाली में क्या बुरी बात है ? अगर यह गाली है



तो फिर तुम खुद एक गाली हो; तुम्हारा जन्म गाली है; तुम्हारा अस्तित्व गाली है, क्योंकि इसी गाली की वजह से तुम अपनी माँ के पेट से जने गए हो; तुम आसमान से नहीं गिरे हो, न तुम परियों के देश से आये हो, न तुम सारस की चोंच से प्रकट हुए हो। ये कहानियाँ तुमसे तुम्हारी वास्तविकता छिपाने के लिए कही जाती हैं। असल में तुम अपनी माँ के पेट से पैदा हुए हो, जिस तरह खूबसूरत विल्ले और विल्ली के सुन्दर बलूगड़े अपनी माँ के पेट से पैदा होते हैं। तुम दुःख, दर्द, मुसीबत और ममता की सन्तान हो, इसीलिए इस कदर भोले और सुन्दर हो। लेकिन मैंने आज तक किसी खूबसूरत विल्ले और म्याऊँ-म्याऊँ करते हुए विल्ली के बच्चे को माँ-वहन की गाली देते नहीं सुना। फिर तुम इन्सान के बच्चे होकर क्यों अपने-आपको गाली देने में अभिमान महसूस करते हो ?

बच्चो, माँ-वहन की गाली कोई गाली नहीं है। जब कभी तुम्हें कोई ऐसी गाली दे तो चुप हो जाओ, मुस्कराकर गाली देने वाले को समझा दो कि यह गाली नहीं है; यह तो अपना मुँह चिढ़ाना है, अपने-आप पर थूकना है।

गाली वह होती है जब एक इन्सान दूसरे इन्सान को भूखा रखता है; गाली वह होती है जब कोई तुम्हें शरीफ गुलाम और घुटनाटेक बनाता है; गाली वह होती है जब कोई तुम्हें मोहब्बत से, स्नेह से, सौन्दर्य से, स्वतन्त्रता से वंचित कर देता है। ऐसी हालत एक स्थायी गाली होती है। उसे गाली दो जो तुम्हें अपने बराबर का न समझे, जो तुम्हें गुलाम बनाना चाहे, जो तुम्हारे गले में पट्टा और जंजीर डालना चाहे, जो तुम्हारी वफादारी पर पीठ ठोकना चाहे, तुम्हें बनावट के मकान में रखकर दान लेना चाहे, तुम्हारे सौन्दर्य को बाजार में बेचना चाहे, तुम्हारी आजादी के टुकड़े-टुकड़े करना चाहे।

उस वक्त गाली दो, जरूर गाली दो। मैं गाली को बुरा नहीं समझता; लेकिन सच्ची गाली दो। झूठी गाली देने से हमेशा बचो और कहो : ग—गाली !

## घ—घर

घर छोटा हो या बड़ा, अपना घर बड़ा खूबमूरत होता है। क्योंकि घर में माँ होती है और बाप होता है और भाई-बहन होते हैं और उन सबका प्यार होता है, जो दुनिया में घर से बाहर किसी मूल्य पर नहीं मिल सकता। इसलिए सब बच्चे घर को बहुत पसन्द करते हैं।

परन्तु कुछ बच्चों के पास घर नहीं है, क्योंकि उनके माँ-बाप के पास भी घर नहीं है। ये बच्चे पेड़ों के तने सोते हैं, फुटपाथों पर लेटते हैं या किसी टूटी पुलिया के नीचे पढ़ रहे हैं। दूसरी ओर ऐसे बच्चे भी होते हैं जो होते तो अकेले हैं, परन्तु उनके लिए घर में दाग कमरे होते हैं जिनमें पचास बच्चे आसानी से रह सकते हैं।

फिर कभी ऐसा भी होता है कि किसी बच्चे के पास एक घर भी नहीं होता और किसी बच्चे के पास बहुत से घर होते हैं, जिनमें उस बच्चे के माँ-बाप कभी-कभी रहते हैं—एक घर गरमियों में रहने के लिए, एक घर गरमियों में रहने के लिए, एक घर वसन्त ऋतु के लिए, एक घर पतझड़ के दिनों के लिए, एक घर छादी-ब्याह के लिए, एक घर भोग-विलास के लिए। एक घर में सामान बन्द रहता है, एक घर में उलझ बैठते हैं, यद्यपि यहाँ बच्चों को कहना चाहिए और जो बच्चे टूटी पुलिया के नीचे या फुटपाथ पर रहते हैं उनको यह फासतू घर मिल जाने चाहिए, क्योंकि दुनिया के हर बच्चे को घर के प्यार की जरूरत है।

कभी-कभी अच्छे-भले बच्चे-बच्चा घर नष्ट हो जाते हैं। बच्चा देखता है कि-बाप सुबह से शाम तक घर ही पर रहता है, क्योंकि उसके पास काम नहीं है। फिर एक दिन बच्चा देखता है कि अब उसके बाप के पास स्कूल की फीस नहीं है और अब बच्चा स्कूल नहीं जा सकता। फिर एक दिन घर में खाना नहीं पकता। फिर एक दिन

उनके घर में रहेंगे; वह गली की नाली में बहाए नहीं जाएंगे ।

परन्तु घर सदा सिपाहियों के आने से ही नष्ट नहीं होते । कभी कभी एक नहीं लाखों घर एक क्षण में जलते-देखते नष्ट हो जाते हैं । बच्चो, तुमने बहुधा घरों को जलते देखा होगा । कभी-कभी घर को अपने चिराग ही से आग लग जाती है, जैसा आजकल हमारे देश में हो रहा है । परन्तु कभी-कभी यह आग आकाश से बरसती है, जैसा पिछले महायुद्ध में नागासाकी और हिरोशिमा में हुआ था—जब आकाश से एक एटम-बम गिरा और उसने गिरते ही लाखों घरों को जलाकर राख कर दिया ।

इसलिए बच्चो, अपने घरों की रक्षा करो और उस आग का विरोध करो जो लाखों घरों को इस प्रकार एक मिनट में भस्म कर देती है, जिससे हमारा घर, तुम्हारा घर, दुनिया के लाखों बच्चों के लाखों घर एटम-बम के भय से सुरक्षित रहे । घरों पर बम बरसाने वाले अच्छी तरह से सुन लें, इसलिए जोर से बोली घ—घर !

## घ—घोर

बच्चो, घोरघट होना है जो तुम्हारी चीज चुराकर ले जाय, जिस तरह धूँहे ताक पर से तुम्हारी मिठाई चुराकर ले जाते हैं । लेकिन घोर सिर्फ धूँहे ही नहीं होते हैं । इन्सान भी घोर होते हैं धूँहे या इंसान इस लिए घोरी करते हैं कि उनके पास वह चीज नहीं होगी जिसकी वे चोरी करते हैं और जो दूसरों के पास होती है । उदाहरणार्थ, यदि बूँहों के पास मिठाई होती तो क्या वे तुम्हारी मिठाई चुराते ? हरगिज नहीं । यही हाल इंसानों का है । वे भी एक तरह के घोर हैं और यही चीज चुराते हैं जो उनके पास नहीं होती । वे चोरी करते हैं जब वे भूखे होते हैं, या नगे होते हैं, गरीब होते हैं । चोरी से हमेशा बचना चाहिए । धूर्त, मे. भी, बन्ना, चारिदर, अयोहि, नन्दि, प्लेन, प्लेन, दे. १, बूँहों को बिल्ली खाती है और चोरों को हुकूमत । लेकिन कभी-कभी हुकूमत चोरी की मदद करती है या स्वयं घोर बन जाती है और

लोगों की चीजें चुरा लेती है। जब तुम देखते हो कि राम फटे कपड़े पहने स्कूल में आता है और मोहन रेशम की पोशाक पहनता है, जब देखो कि गुरदयाल शहद और मक्खन से नाश्ता करता है और चुन्नु के पास लोविया खाने के लिए भी एक पैसा नहीं होता, जब देखो कि हर्ष की आँखें कमल की तरह खिली हैं, वालों में खुशबूदार तेल लगा हुआ है और मुन्नू की आँखें लाल लाल हैं, ओठों पर दैन्य और निराशा की पपड़ियाँ जमी हैं और आँसुओं की बूंदें उसकी बड़ी-बड़ी, सहमी-सहमी, हैरान-हैरान पुतलियों पर झलक रही हैं, तो समझ लेना चाहिए कि हुकूमत स्वयं चोर है, या चोरों से मिली हुई है। ऐसी हालत में देश की तमाम दौलत सबमें बराबर बाँट देनी चाहिए ताकि कोई कुछ चुरा ही न सके। न हुकूमत रहे, न चोर। क्योंकि जहाँ धूँहे रहते हैं, वहाँ विल्ली भी रहती है और जहाँ चोर हैं वहाँ हुकूमत भी होती है; इसलिए कहो : च—चोर !

### छ—छड़ी

गुरुजी की छड़ी से सब वच्चे परिचित हैं; उसका मजा सबने चखा है। मैंने भी चखा है। जब मैं पाठ भूल जाता था तो गुरुजी की छड़ी चलती थी और कभी-कभी फ्रण्टियर मेल से भी तेज चलती थी। इसी छड़ी ने हमें बहुत से विचित्र पाठ सिखाए, याद कराए और रटाए। उदाहरण के लिए, इस छड़ी ने हमें याद कराया कि अंग्रेजी साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता; परन्तु आज वह सूर्य अस्त हो चुका है।

इसी छड़ी ने मार-मारकर सिखाया कि यदि एक बनिया एक किसान को फसल के समय दस रुपये व्याज पर देता है तो दस साल में उसकी कितनी जमीन कुर्क हो सकती है। आज इस छड़ी की मार के बावजूद वह किसान व्याज देने से और जमीन कुर्क कराने से इन्कार कर रहा है और बनिए का सारा हिसाब बिगड़ा जा रहा है। पुराना हिसाब जा रहा है, नया हिसाब आ रहा है जिसमें बनिए के व्याज

पर ध्याज का कोई स्थान नहीं ।

छड़ी के हिमाब से यदि एक आदमी कुमारी अन्तरीप से बनारस जाय तो तीन साल में पहुँचेगा (यदि रास्ते में मर न गया तो) । नये हिसाब से वह तीन दिन में पहुँचता है, बल्कि एक दिन में भी पहुँच सकता है और जब तक यह नया व्याकरण आप तक पहुँचता है वह समय और भी घट जायगा ।

छड़ी के भूगोल में गेहूँ साइबेरिया में उत्पन्न नहीं हो सकता था, परन्तु आज का नया व्याकरण साइबेरिया के बरफीले मैदानों में न केवल गेहूँ बल्कि गोभी, शलजम, मटर सब-कुछ उत्पन्न कर रहा है ।

छड़ी के इतिहास में वह राष्ट्र सबसे शक्तिशाली समझा जाता था जिसके पास सबसे लम्बी तोप होती थी । नये व्याकरण के इतिहास में वह राष्ट्र सबसे शक्तिशाली होता है जिसके पास सबसे ज्यादा फास्ताई होती है ।

बच्चो, तुमने वह कहानी तो सुनी होगी जिसमें एक शिकारी ने जाल फेंककर बहुत से कबूतर पकड़े थे । फिर बाद में उन सारे कबूतरों ने एका किया और अपने परों का जोर इकट्ठा लगाकर जाल समेत हवा में उड़ गए और शिकारी की पहुँच में बाहर चले गये ।

बच्चो हमारा नया व्याकरण शिकारियों के लिए नहीं है, भोले-भाले कबूतरों के एके के लिए है । आज शिकारी बेचारा मुँह ताक रहा है और कबूतर आकाश पर जाल समेत उड़े चले जा रहे हैं ।

नये व्याकरण के गुरुजी भी नये हैं । वह बच्चों को छड़ी से नहीं मारते, उन्हें फूल भेंट करते हैं, इसलिए कि वह जानते हैं कि छड़ी का पाठ भुलाया जा सकता है, परन्तु फूलों का पाठ कोई बच्चा नहीं भूल सकता । इसलिए उम्र आने वाले नये जीवन का इन्तजार करो और कहो : छ—छड़ी !

### ज—जमीन

बच्चो, तुम इस समय जमीन पर बैठे हो । अगर तुम इस समय

हवाई जहाज में होते तो मैं कहता कि तुम हवा में उड़ रहे हो। खैर, बच्चो, याद रखो जमीन बड़े काम की चीज है। जमीन से अनाज पैदा होता है, ताकि काश्तकार लगान अदा कर सकें। जमीन से सोना निकलता है, ताकि धनवान हुकूमत कर सकें। जमीन से लोहा निकलता है, ताकि जंग के लिए तोपें और बन्दूकें बन सकें। जमीन से मिट्टी निकलती है ताकि हमारी तुम्हारी कन्नो बन सकें। और सबसे बढ़कर जमीन का फायदा यह है कि जमीन गोल है; ऊपर नीचे दाएँ-बाएँ हर तरफ से गोल है। जिम्बर से देखो और अगर न भी देखो तो भी गोल है।

कुछ लोगों का खयाल है कि दुनिया में झगड़े की जड़ 'ड़' नहीं 'ज' है, और जड़ में 'ज' भी है और 'ड़' भी। चुनांचे वे कहते हैं कि जर जन् (जोरू), जमीन इन तीनों में 'ज' है और तीनों की वजह से ही दुनिया में लड़ाई होती है और झगड़ा फैलता है। मैं उन लोगों से इसलिए सहमत नहीं कि जर, जन्, जमीन इन तीनों में से कोई चीज अपने-आप में बुरी नहीं। बुरी तो वह गड़बड़ है जो एक अरसे से मनुष्य के दिमाग में पैदा हो चुकी है—'नफा।' अगर यह गड़बड़ दूर हो जाय तो दुनिया में चारों ओर सुन्दरता-ही-सुन्दरता दिखाई दे और यह खूबसूरत जमीन खुशी से नाचते-नाचते और भी गोल हो जाय, बल्कि गोल-मटोल हो जाय; इसलिए कहो : 'ज'—जमीन !

## झ—झगड़ा

बच्चो, झगड़ा (लड़ाई) वह है जो अभी कुछ साल हुए खत्म हुआ है और जिसकी अब फिर तैयारी हो रही है। जब लड़ाई-झगड़ा नहीं होता तो उसे शान्ति का जमाना कहते हैं। शान्ति के सपने देखते हैं; इस व्यवहार को राजनीति कहा जाता है। पहले झगड़ा इक्के-दुक्के आदमियों के बीच होता था, फिर कबीलों के बीच बढ़ने , फिर बादशाहों के बीच होने लगा और अब देशों और जातियों हुआ करता है। लेकिन परिणाम हर हालत में वही होता है,

यानी लोग मरते हैं, औरतें विधवा और बच्चे अनाथ होते हैं, खून की नदियाँ बहनी हैं और अन्त में न्याय की जीत होगी है। जब से दुनिया में झगड़ा और युद्ध शुरू हुआ है, हमेशा न्याय और सत्य की विजय होती चली आई है। पहले महायुद्ध में भी न्याय की जीत हुई थी। दूसरे महायुद्ध में भी न्याय की जीत हुई। इससे, अगले युद्ध में भी न्याय ही विजयी होगा। उनसे जगते युद्ध में भी न्याय ही जीतेगा अन्ततोगत्वा एक दिन हम दुनिया में एक भी जादमी शेष न रहेगा, सिर्फ न्याय-ही-न्याय रह जायगा। और यही सड़ाई-झगड़े की सबसे बड़ी खूबी है, इसलिए बड़ो झ—झगड़ा !

### ट—टामी

बच्चों टामी आम तौर पर अंग्रेज सिपाही को कहते हैं। यह सिपाही बिलायत से आया और एक मजदूरी हिन्दुस्तान में रहकर फिर बिलायत लौट गया। सिपाही तो हिन्दुस्तानी भी होते हैं, लेकिन वह टामी नहीं होते। टामी और हिन्दुस्तानी सिपाही में यही अन्तर था कि हिन्दुस्तानी सिपाही काले रंग के थे और टामी सफेद रंग के; टामी को लगभग पचाहत्तर रुपये तनखाह मिलती थी और हिन्दुस्तानी को लगभग तीस रुपये। टामी के जीवन की आवश्यकताएँ हमेशा बहुत ज्यादा रही और हिन्दुस्तानी की बहुत कम। हिन्दुस्तानी सिपाही ने भी अपनी आवश्यकताएँ बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन इससे उसकी तनखाह न बढ़ी। तब उसने डाट-डपट टामी से कहा—  
तू यह मुल्का छोड़, जिससे मेरी तनखाह भी बढ़ जाय, मैंने बहुत देर सत्र किया है। तू भी हिन्दुस्तानी सिपाही की तरह सत्र करना सीखो और कहो : ट—टामी !

### ठ—ठिठोली

बच्चों, ठिठोली उसे कहते हैं जो दूसरों को हँसाए। आदमी साधारणतया दूसरों की तकलीफ पर हँसता है, इसलिए सबसे अच्छा ठिठोली वह है जो दूसरों की तकलीफ दे। बच्चों, याद रखो कि

तमाम जानवरों में मनुष्य ही एक ऐसा जानवर है जो हँसता है, और किसी भी जानवर को हँसना नहीं आता, क्योंकि वे दूसरों को तकलीफ में देखकर खुश नहीं हो सकते। इसीलिए मनुष्य को चराचर सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ कहते हैं।

बच्चो, तुमने देखा होगा कि जब कोई केले के छिलके पर से फिसलता है तो कितनी हँसी आती है। जब कोई बाजार में टकराकर गिर पड़ता है तो हमें कितनी हँसी आती है उस दिन जब स्कूल के बाहर लोबिया बेचने वाले की टोकरी गन्दी मोरी में गिर पड़ी थी तो तुम सब बच्चे किस तरह कहकहा मारकर हँसे थे। इन बातों ही से यह पता चलता है कि तुम सब इन्सान के बच्चे हो, जानवर नहीं हो।

हँसना इन्सान के लिए बहुत जरूरी है, इसलिए भूतकाल में रोमन लोग आदमियों को शेरों से फड़वाकर बहुत खुश होते थे और हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते थे। आजकल लोग आदमियों को शेरों से फड़वाकर नहीं हँसते, बल्कि उन्हें तोपों के मुँह पर उड़वाकर हँसते हैं, उनके पाँव में गुलामी की वेड़ियाँ डालकर कहकहे लगाते हैं और इसे मानवी सभ्यता की चरम सीमा कहते हैं। बच्चों, अगर तुम भी सभ्य और सुसंस्कृत बनना चाहते हो तो दूसरों को तकलीफ में डालकर खूब हँसो, कहकहे लगाओ, दूसरों को हँसाओ और ठिठोली बन जाओ। और कहो : ट—ठिठोली !

## ड—डाकू

बच्चो, डाकू चोर का बड़ा भाई होता है और बड़ा खतरनाक होता है। तुमने अक्सर देखा होगा कि तुम्हारा बड़ा भाई किस तरह तुमसे जबरदस्ती खिलौना छीनकर चला जाता है और तुम रोते रह जाते हो। उस समय तुम रोने के सिवाय कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि तुम्हारा बड़ा भाई तुमसे ज्यादा ताकतवर है। वह बड़ा है और तुम छोटे हो। यही हाल डाकू का है। वह भी अपने से छोटे और कम-



और आदमी पर हाथ डालता है और उससे सब-कुछ छीन लेता है ।

जब एक इन्सान ऐसा करता है तो हम उसे डाकू कहते हैं, जब दो इन्सान ऐसा करते हैं तो हम उसे कबीला कहते हैं, जब तीन इन्सान ऐसा करते हैं तो हम उसे जागीरदारी कहते हैं, और जब चार इन्सान ऐसा करते हैं तो वह साम्राज्य बहलता है । नाम भिन्न हैं, लेकिन विद्वान्त वही है । और फिर इसमें मजा यह है कि जब एक इन्सान डाका डालता है तो हम उसे फाँसी की सजा देते हैं, लेकिन जब चार आदमी मिलकर यह काम करते हैं तो उन्हें खिताब दिये जाते हैं, जाति उन्हें अपना 'हीरो' समझती है और पूजती है, सैकड़ों घरों तक उनका नाम रहता है, उनके बेटों को जागीरें दी जाती हैं और वे लोग बादशाह तथा राजाधिराज बना दिए जाते हैं; और उनका पद परमात्मा के बाद समझा जाता है । राम-राम ! जमाने को कैसी हवा लग गई है ! बच्चो, इन डाकूओं से हमें सा बचो और दुनिया की शक्ति को मनुष्य में बराबर बाँट दो, ताकि कोई जबर-दस्त न रहे, कोई कमजोर न रहे । जब तक ऐसा नहीं होता, नई ब्राह्मण पढ़ते आगे और कहो : ड—डाकू !

### ड—डेर

बच्चो, बहुत सी चीजें एक जगह जमा हो जायें तो उसे ढेर कहते हैं । जंगल भी एक प्रकार का ढेर होता है—दरख्तों का । स्कूल भी एक प्रकार का ढेर होता है—बच्चों का । पुराने जमाने में शासन की ओर से हर गाँव में अनाज का ढेर रखा जाता था, ताकि अकाल के दिनों में लोगों को किसी प्रकार का कष्ट न हो । मुगल बादशाहों के जमाने में भी अनाज के बड़े-बड़े ढेर रखे जाते थे, जिसमें हर साल नया अनाज भरा जाता था, आजकल भी हुकूमत ढेर स्थापित करती है, लेकिन उनमें अनाज नहीं भरा जाता, उनमें रुपये और नोट भरे रहते हैं । उन ढेरों को लोग बैंक के नाम से पुकारते हैं । दुमिश्न के दिनों में भी ढेर अनाज के बदले रुपये और नोट बाँटते हैं । रुपया

चाँदी का होता है, नोट कागज का होता है और ये दोनों चीजें खाने के हक में अच्छी नहीं। अभी कुछ वर्ष हुए बंगाल में अकाल पड़ा था और लाखों लाखों के ढेर लग गए थे। इसकी वजह यह थी कि महा-जनों और दूसरे अमीर आदमियों ने अनाज छिपा लिया था। अगर उस वक्त हुकूमत के अपने अनाज के ढेर होते तो वह फौरन अनाज निकाल-निकालकर लोगों में बाँट देती। लेकिन ऐसा न हो सका। शायद अब लोगों को अकल आ जाय और गाँव-गाँव में अनाज के ढेर कायम हो जायें।

इंगलिस्तान एक द्वीप है, लेकिन हिन्दुस्तान एक ढेर है—बुलबुलों का।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।

हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलसिताँ हमारा ॥

हिन्दुस्तान में पचास करोड़ बुलबुलें रहती हैं। ऐसी क्षुद्र, रोती, बिसूरती, फाके करती बुलबुलें दुनिया के किसी और हिस्से में मौजूद नहीं। सिर्फ हिन्दुस्तान ही इन बुलबुलों का ढेर है—इसके साथ-साथ गुलामी, अज्ञान, पतन, विवशता, निर्जीवता का; इसलिए कहो :  
ढ—ढेर !

## त—तोता

बच्ची, तोता उस आदमी को कहते हैं जो अपने मालिक का सघाया हुआ होता है, और वही कहता है जो उसका मालिक उससे कहलवाना चाहता है। तुमने अक्सर ऐसे तोते देखे होंगे। ये हर जगह, हर देश और हर जाति में पाये जाते; और घरों में, जलसों में दफ्तरों में, असेम्बलियों में अपने मालिक के रटाये हुए वाक्य बोलते रहते हैं। सच पूछो तो दुनिया में उन्हीं तोतों की हुकूमत है।

मालिक उन तोतों को हमेशा अपने पिंजरे में बन्द रखता है और उन्हें बड़े प्यार से हर रोज अपने हाथ से खाना खिलाता है,

क्योंकि तोता बड़ा बफादार होता है, और वह अपने मालिक के रटाये हुए वाक्यों के अलावा और कुछ नहीं बोलता।



1. तोता एक किस्म की चिड़िया भी है। उसका रंग हरा, चोंच मुड़ी हुई और जवान चम्मच की तरह होती है। वह भी पिंजरे में रहना पसन्द करता है और अपने मालिक के रटाये हुए वाक्यों को दोहराता है। इसलिए लोग इसे भी तोता कहते हैं। लेकिन फिर भी तोता जानवर तोता आदमी से कम तोताबदम यानी आँखें पेरने वाला (अकृतज्ञ) होता है। इसलिए तोता जानवर को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया जाता। वस कहो . व—तोता !

### थ—थैली

जैसे बिल्लियाँ काली होती हैं और सफेद भी होती हैं। वसी तरह थैलियाँ काली भी होती हैं और सफेद भी होती हैं। परन्तु आज-कल सफेद थैली कम दिखाई देती है और काली थैली अधिक पाई जाती है। काली थैली और सफेद थैली की पहचान यह है कि काली मारी होती है और सफेद थैली हल्की होती है, बल्कि बहुधा तो बिल्कुल खाली होती है। कभी-कभी उसके नीचे छेद होता है जिसमें जितने रुपये-पैसे डालो बाहर निकल जाते हैं। परन्तु काली थैली में ऐसा नहीं होता। उसके अन्दर छेद के स्थान पर खाने होते हैं जिनमें रुपये डालो अन्दर-ही-अन्दर छिपे चले जाते हैं और उसका वजन बढ़ता जाता है।

पीढ़ी का होता है, नोट फागय का होता है और  
 के हफ में अच्छी नहीं। यभी कुछ पपें हुए एंघार में  
 पीर लाखों लाखों के ढेर लग गए थे। इसकी पत्तों का  
 जनों और दूसरे अमीर आदमियों ने अनाज छिपा लिया था।  
 उस वक्त हुकूमत के अपने अनाज के ढेर होते तो वह फीर  
 निकाल-निकालकर लोगों में बांट देती। लेकिन ऐसा न हो सका।  
 शायद अब लोगों को अबल आ जाय और गाँव-गाँव में अनाज के ढेर  
 कायम हो जायें।

इंगलिस्तान एक द्वीप है, लेकिन हिन्दुस्तान एक ढेर है—बुलबुलों  
 का।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।

हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलसिताँ हमारा ॥

हिन्दुस्तान में पचास करोड़ बुलबुलें रहती हैं। ऐसी खुद, रोती,  
 बिसूरती, फाके करती बुलबुलें दुनिया के किसी और हिस्से में मौजूद  
 नहीं। सिर्फ हिन्दुस्तान ही इन बुलबुलों का ढेर है—इसके साथ-साथ  
 गुलामी, अज्ञान, पतन, विवशता, निर्जीवता का; इसलिए कहो :  
 छ—ढेर !

## त—तोता

वच्चो, तोता उस आदमी को कहते हैं जो अपने मालिक का  
 संधाया हुआ होता है, और वही कहता है जो उसका मालिक उससे  
 फहलवाना चाहता है। तुमने अक्सर ऐसे तोते देखे होंगे। वे हर  
 एगह, हर देश और हर जाति में पाये जाते; और घरों में, जलसों में  
 एप्टरों में, असेम्बलियों में अपने मालिक के रटाये हुए वाक्य बोलते  
 रहते हैं। सच पूछो तो दुनिया में उन्हीं तोतों की हुकूमत है।

मालिक उन तोतों को हमेशा अपने पिजरे में बन्द रखता है  
 और उन्हें पड़े प्यार से हर रोज अपने हाथ से खाना खिलाता है,

सिद्धान्तों पर व्यवसाय करना है जिन पर आजकल की दुनिया का व्यवसाय, वाणिज्य और उद्योग-धन्या चलता है। जब तक व्यापार वाणिज्य के यही सिद्धान्त रहेंगे, बनिये को अच्छा और देशद्रोही को घुरा समझना बिल्कुल अन्याय है। सुशी की बात है कि हिन्दुस्तान में देशद्रोही को घुरा नहीं समझा जाता रहा। जिसने गद्दार हिन्दुस्तान में पैदा हुए, दुनिया के और किसी हिस्से में नहीं। हमारे देशद्रोहियों ने आज से सैकड़ों साल पहले इस देश को बेचना शुरू किया था और अब तक यह व्यापार चलता आ रहा है। आर्यों से लेकर फिरंगियों के जमाने तक यह देश प्रतिघात और प्रतिफल विकता रहा है।

देशद्रोही की इज्जत हमेशा अपने देश में कम और अपने देश बाहर ज्यादा होती है। हर व्यावसायिक वर्ग की तरह देशद्रोहियों का वर्ग भी बहुत सम्पन्न और खुशहाल होता है। यहूदियों की तरह देशद्रोही भी दुनिया के हर हिस्से में और हर देश में फैले हुए हैं और इनका कारोबार अन्तर्राष्ट्रीय है। गद्दारों की मिली भगत उदाहरणीय है। सफट के समय एक देशभक्त दूसरे की मदद नहीं करता; लेकिन एक देशद्रोही हमेशा दूसरे देशद्रोही की सहायता करता है।

बच्चो, अगर तुम इज्जत चाहते हो, ऐस चाहते हो तो देशद्रोही बनो, देशभक्त मत बनो और कहो : द—देशद्रोही !

### घ—घन

बच्चो, घन से हर चीज तरोदी जा सकती है। तुमने यह पोथी घन देकर पाई है, यह तख्ती, यह दवात, यह कलम, कागज, पेसिल स्लेट, हर चीज घन देकर पाई है। घन की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इससे आदमी पत्थर की मूर्ति से लेकर पत्थर की पेन्सिल तक खरीद सकता है, और खुदा से लेकर मिदमतगार तक प्राप्त कर सकता है। घन दुनिया का सबसे ज्यादा माँगा हुआ सामान है। घन का दाम नहीं हुआ करता था; सब लोग बेदाम थे, बल्कि यों कहो

काली थैली का महत्व युद्ध के बाद से बहुत बढ़ गया है और यह थैली अब बड़े ऊँचे-ऊँचे स्थानों पर दिखाई देने लगी है, जहाँ पहले केवल सफेद थैली दिखाई देती थी। कुछ लोग सफेद थैली के अन्दर काली थैली छिपा कर रखते हैं, मानो धर्म की आड़ में धन लूटते हैं। ऐसे लोगों को हमारे व्याकरण में 'थैलीवाज' कहा जाता है। जो जितना बड़ा थैलीवाज होगा उसकी थैली बाहर से उतनी ही सफेद और अन्दर से उतनी ही काली होगी।

सफेद थैली दिन को निकलती है; काली थैली प्रकाश की अपेक्षा अन्धकार को पसन्द करती है। सफेद थैली मेहनत करने वाले हाथों में देखी जाती है; काली थैली बहुधा लोहे की तिजोरियों में बन्द की जाती है। सफेद थैली में बहुधा मूली, गाजर, चावल, किताब, राशन, चीनी रखी हुई मिलती है; काली थैली में घरम-ईमान, सचाई, देश-भक्ति, शान्ति और सुन्दरता के पर कटे हुए मिलते हैं। सफेद थैली में इन्सान का प्रेम होता है काली थैली में सिक्के-ही-सिक्के होते हैं। जब दुनिया के सारे बच्चे हमारा नया व्याकरण पढ़ लेंगे तो दुनिया में चारों तरफ सफेद थैलियाँ ही दिखाई देंगी। इसलिए बच्चों, जोर से कहो : थ—थैली ! परन्तु सफेद, काली नहीं !

## द—देशद्रोही

बच्चो, देशद्रोही भी बनिये और दुकानदार की तरह एक व्यवसायी होता है। बनिया आटा, चावल, नमक, तेल, लकड़ी बेचता है और अपने लिए मुनाफा हासिल करता है। देशद्रोही अपना राष्ट्र देश और जाति बेचता है और अपने लिए मुनाफा प्राप्त करता है। जिस तरह बनिया ज्यादा-से-ज्यादा फायदा उठाने की फिक्र में रहता है, उसी तरह देशद्रोही भी अपने-आपको ज्यादा-से-ज्यादा फायदा पहुँचाने की फिक्र में रहता है। लेकिन विचित्र बात यह है कि दुनिया में बनियों और दूसरे मुनाफा कमाने वालों को तो अच्छा समझा जाता है, लेकिन बेचारे देशद्रोही को बुरा; हालाँकि वह भी एक व्यवसायी है और, उन्हीं

सिद्धान्तों पर व्यवसाय करता है जिन पर आजकल की दुनिया का व्यवसाय, वाणिज्य और उद्योग-धन्धा चलता है। जब तक व्यापार वाणिज्य के यही सिद्धान्त रहेगे, बनिये की अच्छा और देशद्रोही की बुरा समझना बिलकुल अन्याय है। खुशी की बात है कि हिन्दुस्तान में देशद्रोही को बुरा नहीं समझा जाता रहा। जितने गद्दार हिन्दुस्तान में पैदा हुए, दुनिया के और किन्हीं हिस्से में नहीं। हमारे देशद्रोहियों ने आज से सैकड़ों साल पहले इस देश को बेचना शुरू किया था और अब तक यह व्यापार चलता आ रहा है। आपों से लेकर फिरंगियों के जमाने तक यह देश प्रतिक्षण और प्रतिपल बिकता रहा है।

देशद्रोही की इज्जत हमेशा अपने देश में कम और अपने देश से बाहर ज्यादा होती है। हर व्यावसायिक वर्ग की तरह देशद्रोहियों का वर्ग भी बहुत सम्पन्न और सुसहाय होगा है। यहूदियों की तरह देशद्रोही भी दुनिया के हर हिस्से में और हर देश में फैले हुए हैं और इनका कारोबार अन्तर्राष्ट्रीय है। गद्दारों की मिली भगत उदाहरणीय है। सकट के समय एक देशभक्त दूसरे की मदद नहीं करता; लेकिन एक देशद्रोही हमेशा दूसरे देशद्रोही की सहायता करता है।

बच्चो, अगर तुम इज्जत चाहते हो, ऐश चाहते हो तो देशद्रोही बनो, देशभक्त मत बनो और कहो - ब—देशद्रोही !

### घ—धन

बच्चो, धन से हर चीज खरीदी जा सकती है। तुमने यह बोधी धन देकर पाई है; यह तकली, यह दवाज, यह कसब, कागज, पैमिन स्लेट, हर चीज धन देकर पाई है। धन की सबसे बड़ी खूबी यह है कि हमने आदमी पत्थर की मूर्ति से लेकर पत्थर की पैमिन तक खरीद सकता है; और खुदा में लेकर निश्चिततया तब प्राप्त कर सकता है। धन दुनिया का बादशाह है। पहले-पहल दुनिया में धन या दाम नहीं हुआ करता था; सब लोग बेधन थे, बल्कि सब कहते

काली थैली का महत्व युद्ध के बाद से बहुत बढ़ गया है और यह थैली अब बड़े ऊँचे-ऊँचे स्थानों पर दिखाई देने लगी है, जहाँ पहले केवल सफेद थैली दिखाई देती थी। कुछ लोग सफेद थैली के अन्दर काली थैली छिपा कर रखते हैं, मानो धर्म की आड़ में धन लूटते हैं। ऐसे लोगों को हमारे व्याकरण में 'थैलीबाज' कहा जाता है। जो जितना बड़ा थैलीबाज होगा उसकी थैली बाहर से उतनी ही सफेद और अन्दर से उतनी ही काली होगी।

सफेद थैली दिन को निकलती है; काली थैली प्रकाश की अपेक्षा अन्धकार को पसन्द करती है। सफेद थैली मेहनत करने वाले हाथों में देखी जाती है; काली थैली बहुधा लोहे की तिजोरियों में बन्द की जाती है। सफेद थैली में बहुधा मूली, गाजर, चावल, किताब, राशन, चीनी रखी हुई मिलती है; काली थैली में धरम-ईमान, सचाई, देश-भक्ति, शान्ति और सुन्दरता के पर कटे हुए मिलते हैं। सफेद थैली में इन्सान का प्रेम होता है काली थैली में सिक्के-ही-सिक्के होते हैं। जब दुनिया के सारे बच्चे हमारा नया व्याकरण पढ़ लेंगे तो दुनिया में चारों तरफ सफेद थैलियाँ ही दिखाई देंगी। इसलिए बच्चों, जोर से कहो : थ—थैली ! परन्तु सफेद, काली नहीं !

## द—देशद्रोही

बच्चो, देशद्रोही भी बनिये और दुकानदार की तरह एक व्यवसायी होता है। बनिया आटा, चावल, नमक, तेल, लकड़ी बेचता है और अपने लिए मुनाफा हासिल करता है। देशद्रोही अपना राष्ट्र देश और जाति बेचता है और अपने लिए मुनाफा प्राप्त करता है। जिस तरह बनिया ज्यादा-से-ज्यादा फायदा उठाने की फिक्र में रहता है, उसी तरह देशद्रोही भी अपने-आपको ज्यादा-से-ज्यादा फायदा पहुँचाने की फिक्र में रहता है। लेकिन विचित्र बात यह है कि दुनिया में बनियों और दूसरे मुनाफा कमाने वालों को तो अच्छा समझा जाना है, लेकिन बेचारे देशद्रोही को बुरा; हालाँकि वह भी एक व्यवसायी है और, वहाँ



सिद्धान्तों पर व्यवसाय करना है जिन पर आजकल की दुनिया का व्यवसाय, वाणिज्य और उद्योग-धन्धा चलता है। जब तक व्यापार वाणिज्य के यही सिद्धान्त रहेगे, वनिये को अच्छा और देशद्रोही को घुरा समझना बिलकुल अन्याय है। खुदी की बात है कि हिन्दुस्तान में देशद्रोही को घुरा नहीं समझा जाता रहा। जितने गद्दार हिन्दुस्तान में पैदा हुए, दुनिया के और किमी हिस्से में नहीं। हमारे देश-द्रोहियों ने आज से सैकड़ों साल पहले इस देश को बेचना शुरू किया था और अब तक यह व्यापार चलता आ रहा है। आर्यों से लेकर फिरंगियों के जमाने तक यह देश प्रतिक्षण और प्रतिपल बिकता रहा है।

देशद्रोही की इज्जत हमेशा अपने देश में कम और अपने देश से बाहर ज्यादा होती है। हर व्यावसायिक वर्ग की तरह देशद्रोहियों का वर्ग भी बहुत सम्पन्न और खुशहान् होता है। यद्वादियों की तरह देश-द्रोही भी दुनिया के हर हिस्से में और हर देश में फैले हुए हैं और इनका कारोबार अन्तर्राष्ट्रीय है। गद्दारों की मिली भगत उदाहरणीय है। संकट के समय एक देशभक्त दूसरे की मदद नहीं करता; लेकिन एक देशद्रोही हमेशा दूसरे देशद्रोही की सहायता करता है।

बच्चो, अगर तुम इज्जत चाहते हो, ऐश चाहते हो तो देशद्रोही बनो, देशभक्त मत बनो और कहो - द—देशद्रोही !

### घ—घन

बच्चो, घन से हर चीज खरीदी जा सकती है। तुमने यह पोषी घन देकर पाई है, यह लकड़ी, यह दवात, यह कलम, कागज, पेंसिल स्लेट, हर चीज घन देकर पाई है। घन की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इससे सादमी पत्थर की मूर्ति से लेकर पत्थर की पेंसिल तक खरीद सकता है; और खुदा से लेकर विद्वानगार तक प्राप्त कर सकता है। घन दुनिया का बादशाह है। पहने-पहल दुनिया में घन आ धाम नहीं हुआ करता था; सब लोग बेधाम थे, बल्कि यों नहो

कि वृद्ध (बेवकूफ) थे। पहले यह होता था कि अगर मेरे पास चमड़ा है और मुझे गेहूँ चाहिए और तुम्हारे पास गेहूँ है और तुम्हें चमड़ा चाहिए तो तुम मुझसे चमड़ा ले लेते थे और मुझे गेहूँ दे देते थे और खुशी-खुशी घर चले जाते थे। अब यह सूरत है कि न तो मैं तुम्हें धन के बिना चमड़ा देता हूँ और न तुम मुझे धन के बिना गेहूँ देते हो और न हम लोग खुशी-खुशी घर जा सकते हैं; क्योंकि आज-कल घर भी धन के बिना नहीं मिलता। इस स्थिति को लोग मानवी प्रगति के नाम से पुकारते हैं।

कई लोग कहते हैं कि खुशी का धन से कोई सम्बन्ध नहीं, लेकिन मैंने किसी निर्धन को यह कहते नहीं सुना कि धन के बिना दुनिया में खुश रहना सम्भव है। पहले यह होता था कि लोग मेरे ज्ञान और कला को देखते थे और उसके बदले मुझे पन्द्रह रुपए नहीं देते थे, बल्कि मेरे जीवन की सभी आवश्यकताएँ पूरी कर देते थे। अब किसी ने मूल्य चुकाने का यह नया तरीका निकाला और सारी दुनिया की खुशी को अपने कब्जे में भर लिया है। इससे तो शायद पहला तरीका ही अच्छा था। उसमें खुशी ज्यादा थी; आजकल दाम अधिक दिखाई देते हैं, खुशी कम। पहले दाम कौड़ियों के होते थे, उन्हें दाम नहीं, बल्कि छदाम कहते थे। फिर दाम धातुओं से बनाये जाने लगे; ताँबा, चाँदी, सोना, पीतल, लोहा—इन सब धातुओं से दाम तैयार किये गए। आजकल दाम कागज के बनते हैं। दाम जाल को भी कहते हैं। वास्तव में इस दाम और उस दाम में बहुत छोड़ा अन्तर है। यह भी एक तरह का जाल है, जिसमें इन्सान की खुशी कैद कर दी गई है। वच्चो, हम सब इस जाल में गिरफ्तार हैं, इसलिए कहो : ध—धन !

## न—नियम

वच्चों, हर काम का एक नियम होता है, ढंग होता है, टकरा होता है, कानून होता है और इसके बिना दुनिया में कोई काम पूरा नहीं हो सकता। जो लोग दुनिया में कोई कानून, कोई नियम नहीं चाहते

उन्हें हम अराजकतावादी कहते हैं, जो लोग नियम और कानून चाहते हैं उन्हें हम सामाजिक कहते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अराजकतावादी नहीं। सेड्विन इसका यह मतबद्ध नहीं कि एक काम एक ही तरह से ही सफल है। काम करने के ढंग कई हैं और फिर जब काम का सिद्धान्त बदल जाता है तो उसका नियम भी बदल जाता है। मानव-समाज मानवी क्रिया-कलापों के एकत्रीकरण का नाम है। जब मानवी क्रिया-कलाप बदलने लगते हैं तो काम करने का ढंग यानी नियम भी बदलने लगता है और मानव-समाज में परिवर्तन हो जाता है। आम जनता की जमान में इसे इन्कलाब कहते हैं।

इन्कलाब जिन्दाबाद का नियम पुराने नियम से भिन्न है और पुराना नियम उससे पुराने नियम से भी भिन्न था। इस तरह अगर हम सैकड़ों साल पीछे की मानव-सभ्यता की बीती हुई सतावियों की ओर लौट जायें तो पता चलेगा कि हर कुछ सतावियों के बाद यह नियम बदलता रहता है और बदलता रहेगा। एक दिन यह नया नियम भी, जो मैं आज तुम्हें पढ़ा रहा हूँ, पुराना हो जायगा। क्योंकि जीवन परिवर्तन का दूसरा नाम है और जीवन बदलता है तो उसके नियम भी बदल जाते हैं।

तुम्हारी आँखों के सामने इस समय मानव-समाज बदल रहा है और हमारा प्रतिदिन का जीवन बदल रहा है। छत्रों के बजाय हवाई जहाज, भोजन के बजाय रोटरी ग्रेम है, पेड़ की छाल के बजाय मर्सराइज्ड कपड़ा है और जिन्दगी में एक की हुकूमत के बजाय सभकी हुकूमत है, और एक के प्रेम के बजाय सबसे प्रेम है।

यह पुराना नियम नहीं है, यह नया नियम है। यह बदलने वाली जिन्दगी का नियम है। अगर पढ़ना चाहते हो तो पढ़ो; अगर सुनना चाहते हो तो पढ़ो; अगर जीना चाहते हो तो पढ़ो; बचना मौत और गुलामी तो भाग्य में लिखी ही है, और तुम्हारे इस जन्मसिद्ध अधिकार को तुमसे कोई छीन नहीं सकता। इसलिए कहो : न—नियम !

## प—पतलून

बच्चो, 'प' पतलून होती है। 'प' पाजामा भी होता है, जो तुम अक्सर पहनते हो। और 'प' पंखा भी होता है, जो तुम्हारे घरों में अनाज के डण्ठलों और गन्ने के धूसे हुए छिलकों से बनाया जाता है। लेकिन ये सब देसी चीजें हैं और किसी काम की नहीं हैं। इनसे तुम्हारे ज्ञान में कोई वृद्धि नहीं होती, इसलिए 'प' पतलून ही सही है।

पतलून पढ़े-लिखे लोग पहनते हैं; और जब तुम भी पढ़ना-लिखना सीख जाओगे तो पतलून पहना करोगे। पतलून पहनने से शरीर फुर्तीला रहता है और मस्तिष्क तेज होता है। दर्जी एक पतलून इतने समय में सीता है जितने समय में दस पाजामें तैयार होते हैं। पतलून सीना बड़ा मुश्किल है। इसलिए बच्चो, अगर तुम्हें पढ़ने-लिखने से प्रेम है तो हरदम पतलून पहनने का पाठ याद करो, क्योंकि जो आदमी पतलून नहीं पहनता वह मूर्ख है।

आदमी पतलून पहनता है और पतलून पेटो पहनती है, जो अधिक कांश में आदमी के कंधे तक जाती है। पेटो, पतलून पहनना, पढ़ना ये तमाम शब्द 'प' से शुरू होते हैं, इसलिए कहो : प—पतलून !

## फ—फाका

बच्चो, फाका (भुखमरी) हिन्दुस्तान का मनभाता खाना है। जिस तरह पश्चिम में लोग दिन में एक बार अण्डे और मक्खन अवश्य खाते हैं उसी तरह हिन्दुस्तानी भी दिन में एक बार फाका जरूर खाते हैं, इसलिए फाका (उपवास) हमारे धर्म में भी शामिल है और वह हमारी जिन्दगी का एक बहुत बड़ा हिस्सा है।

भूखे रहने की सिखाएँ अनगिनत हैं। उपवास करने से आदमी का दिल हमेशा परमात्मा की ओर लगा रहता है और कभी शैतान की ओर नहीं झुकता। भूख बनाई मित्राती है, बुराई नहीं। भूखा रहने से ज्ञान प्राप्त होता है और अज्ञान मिटना है भूख आदमी को बनाती है, उद्धण्ड नहीं। यही कारण है कि हिन्दुस्तानी दुनिया

की अन्य जातियों और राष्ट्रों की तुलना में इतने विनम्र हैं। उपवास से शारीरिक लाभ भी कई है। इससे शरीर मोटा नहीं होता, अपनी वास्तविक हालत पर बना रहना है बल्कि और भी छरहरा हो जाता है। शरीर की मजलदू खरबो घुल जाती है और मांसों की उष्णता इतनी तेज हो जाती है कि दिन में सारे मजदूर आने लगते हैं। इसके सिवा हड्डियों में भी एक खास सबक बल्कि फैलाव का अनुभव होता है। मोरत सिक्कता है, हड्डियाँ फैलती हैं यहाँ तक कि कुछ दिनों में आदमी मोहन-पौष्ट का नहीं, बल्कि हड्डियों का ठाँपा मालूम होने लगता है।

भूखा रहने वाले को—और हिन्दुस्तान में प्रतिदिन करोड़ों आदमी भूखे रहते हैं—पेट की विमारी कम होनी है इसलिए भूखा रहने से कभी बदहजमी नहीं होनी, पेचिश नहीं होती, पेट में कीड़ा नहीं होता अन्धवी आँत में सूजन नहीं होती। आर्थिक दृष्टिकोण से भी भूखा रहना अत्यधिक उपयोगी है। क्योंकि भूखा रहने वाले को पेट का धन्य करने की क्या जरूरत है? यही कारण है कि एक औद्योगिक भारतीय की आमदनी डेढ़ आना है।

लेकिन अब हमारे देश के बड़े-बड़े अमीर आदमियों ने मिलकर एक पन्द्रह वर्षीय योजना बनाई है, हमारी सरकार ने भी पंचवर्षीय योजना बनाई जिस पर अमल करने से हिन्दुस्तान की आर्थिक उन्नति में तिगुनी वृद्धि हो जायगी, यानी जहाँ कि हिन्दुस्तानी पहले दिन में एक फाका करता था वहाँ अब तीन फाके किया करेगा।

बच्चे, उस मनोरम क्षण की प्रतीक्षा करो और कहो . फ—फाका !

### ख—बच्चा

बच्चे, तुम सब बच्चे हो। बच्चे वे होते हैं जिनके माँ-बाप होते हैं और उन्हें कागज, कलम, स्लेट और सस्ती देकर स्कूल भेजते हैं। लेकिन कई बच्चे ऐसे भी होते हैं जिनके माँ-बाप नहीं होते और वे

स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं आते। लेकिन उन वच्चों को हम वच्चे नहीं कहते, अनाथ कहते हैं। दूसरे देशों में सौ वच्चों में से नब्बे वच्चे स्कूल में पढ़ते हैं, हिन्दुस्तान में सौ वच्चों में से सिर्फ दस वच्चे स्कूल में पढ़ते हैं, बाकी आँगना में गुल्ली खेलते हैं, इसलिए उन्हें अनाथ कहते हैं।

हिन्दुस्तान में सब देशों से ज्यादा संख्या में वच्चे पैदा होते हैं और मरते भी सबसे ज्यादा तादाद में हैं। लेकिन जीना-मरना तो भगवान् के हाथ में है, इसमें हमारा कोई दोष नहीं। वच्चे तो भगवान् और अल्लाह भेजता है और फिर वही उन्हें वापस बुला लेता है। यही वाइबिल में भी लिखा है। इसलिए कहो : व—वच्चा !

### भ—भलाई

वच्चो, भलाई उस काम को कहते हैं जो आदमी स्वयं करता है लेकिन जिससे लाभ दूसरों को पहुँचता है। उदाहरण के लिए अगर तुम अपने घर से मेरे लिए आटा, चावल, नमक, तेल लाते हो तो तुम भलाई (पुण्य) करते हो और लाभ मुझे होता है। और फिर मैं एक गरीब शिक्षक हूँ। मुझे पन्द्रह रुपये तनखा मिलती है और इन सिर्फ पन्द्रह रुपयों में मेरा गुजारा नहीं हो सकता, इसलिए अगर तुम चाहते हो कि मैं जिन्दा रहूँ और तुम्हें पुण्य प्राप्त हो तो मेरे लिए हमेशा-हमेशा आटा, चावल, नमक, तेल, लकड़ी लाते रहो। भलाई और पुण्य बड़ी अच्छी चीज है और अंग्रेजों ने एक शताब्दी से अधिक हिन्दुस्तान की भलाई की है। इसलिए कहो : भ—भलाई !

### म—मन्त्री

वच्चो, मन्त्री हुक्म चलाता है। मन्त्रीरियासत के सब बड़े बादमियों से बड़ा होता है और मन्त्री से बड़ा सिर्फ गवर्नर होता है या प्रेसीडेंट होता है, या बादशाह होता है।

तुमने अन्तर परियों की कहानियों में सुना होगा कि बादशाह राज करते हैं और मन्त्री सलाह देते हैं। निष्ठने जमाने में भी, जो परियों का जमाना नहीं था, मन्त्री बादशाह को सलाह देते थे और बादशाह

उनके कहने पर चलता था । लेकिन आजकल यह होता है कि बादशाह या गवर्नर सलाह देते हैं और मंत्री उनके कहने पर चलते हैं ।

परियों की कहानी में तुमने अक्सर देखा होगा कि मंत्री बुद्धिमान होता है और बादशाह मूर्ख । कभी-कभी यह होता है कि बादशाह बुद्धिमान होता और मंत्री बेवकूफ । लेकिन आजकल बादशाह और मंत्री दोनों बुद्धिमान होते हैं, सिर्फ प्रजा बेवकूफ होती है; और अगर नहीं होती तो बनाई जाती है, और अगर फिर भी न धने तो जेल में ठूंस दी जाती है । इस तरह के शासन को प्रजातन्त्रीय शासन कहते हैं ।

परियों के अमाने में एक बादशाह होता था और एक मंत्री । दोनों अलग रहते थे और दोनों के काम भी अलग थे । लेकिन आजकल कई देशों में एक ही आदमी एक ही समय में बादशाह है और मंत्री भी । यह खुद ही सलाह देता है और खुद ही उस पर आचरण करता है । ऐसे आदमी, प्रकट है कि, न बादशाह कहा जा सकता है और न मंत्री । इसलिए उसे डिक्टेटर कहते हैं । डिक्टेटर अपने देश में अकेला हाकिम (अधिकारी) होता है । वह खुद ही सलाह देता है और खुद ही उस पर आचरण करता है । प्रजा सिर्फ ताली बजानी है, बाह-बाहु करती है, अपने खून के दरिया बहाती है; क्योंकि डिक्टेटर को खून बहाने का बेहद शौक होता है । इस प्रकार के शासन को फासिस्ती नामन करते हैं ।

लेकिन परी-देश की दुनिया में डिक्टेटर नहीं होते । परी-देश की कहानी में सिर्फ बादशाह, मंत्री, राजकुमार और राजकुमारियाँ होती हैं । हिन्द में गिर-फिरे लोग इन कोशिश में हैं कि इस दुनिया को भी परी-देश बना डालें, जहाँ हर लड़का राजकुमार होगा और हर लड़की राजकुमारी । निवट भविष्य में इन लोगों के लिए एक पागलखाना खुलने वाला है, जहाँ ये सब लोग जीवित दफन कर दिये जाएंगे । इसलिए बच्चों, इन लोगों का कभी विश्वास न करो और जोर से कहो : म—मन्त्री !

बच्चो, इस प्राइमर का बहुत जरूरी अक्षर 'य' याद है। याद किये वगैर तुम प्राइमर को कभी दिमाग में न रख सकोगे और इसे बहुत जल्दी भूल जाओगे। मैं नहीं चाहता कि तुम यह प्राइमर भूल जाओ, क्योंकि अगर तुमने यह प्राइमर भुला दी तो तुम अपने लिए और इस तरह दुनिया के लिए भी नई जिन्दगी न बना सकोगे। इसलिए इसे याद करो। इस प्राइमर को हमेशा के लिए याद रखो।

नई प्राइमर तुम्हारे लिए क्यों जरूरी है? सम्भव है कि मैं तुम्हें इसका सन्तोषजनक जवाब न दे सकूँ; इसलिए नहीं कि तुम बच्चे हो, बल्कि मैं एक मामूली स्कूल-मास्टर हूँ। हाँ, मैं एक मामूली स्कूल-मास्टर होते हुए भी जब आज की सम्य कहुलाई जाने वाली दुनिया की विपमताओं और कूर कृत्यों को देखता हूँ तो मुझे महसूस होता है कि दुनिया को एक नये कायदे की जरूरत है।

फिर यह नया कायदा मैं तुम्हें क्यों पढ़ा रहा हूँ? क्यों मैं इस कायदे को बड़े-बूढ़े, तीक्ष्ण-दृष्टि विद्वानों के पास नहीं ले जाता और उनसे प्रार्थना करता कि वे इस कायदे को सारी दुनिया में प्रचारित कर दें, बल्कि मैं अपने कायदे के लिए बच्चों से सहायता की याचना करता हूँ—बच्चे जो कमजोर हैं, जो निहत्थे हैं, जो मामूम हैं?

बस, इसलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम निहत्थे हो, कमजोर हो और भोले हो; क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम खिलौने से खेलते हो, परियों से प्यार करते हो, पेड़ों से बात करते हो, तारों की निगाहें पहचानते हो और अपने दिल में वह दोलत रखते हो जो डूबते हुए मूरज के सारे सोने में नहीं है। इसलिए मैं वह कायदा लेकर तुम्हारे पास आया हूँ कि तुम बड़े होंकर इस दोलत को दुनिया-भर में फैलाओ ताकि हर बच्चे का 'निवास' रेगम का हो जाय, उसकी आँखों में मुसी और प्रतिभा चमकने लगे, वह परिस्तान की कहानी हो न मुने, परिस्तान में रहे।



बच्चो, अगर तुमने नये कायदे को याद रखा तो तुम यह सब कुछ कर सकोगे, इसलिए इसे याद रखो और कहो : य—याद !

## २—राजा

बच्चो, तुमने राजा देखा होगा। अगर राजा नहीं तो राजा गृह्य का हाथी अवश्य देखा होगा। हमेशा याद रखो कि राजा गृह्य का हाथी होता है और पड़ित भी की बँसगाड़ी होती है और गोलवी साहब का घोड़ा होता है और गरीब का गधा होता है ! गेबो का कुत्ता होता है और अक्सर वह न घर का होता है न घाट न। लेकिन राजा गृह्य के पास सिर्फ हाथी ही नहीं होता, सब-कुछ होता है—घर, घाट, घोड़े, कुत्ता, पड़ित, मोलवी, हाथी, बीता, बहानी, गाड़ी, मोटर, कलमी और होरा। राजा साहब की रानी भी होती है, बल्कि आमतौर पर वह सभी रानियाँ होती हैं, जो आलीशान महलों में रहती हैं। जो औरतें रानियाँ नहीं होती हैं वे पूँच के छप्परो में रहती हैं। राजा के पास रिआया भी होती है और रिआया के बिना कोई राजा राजा नहीं कहना सकता। इस दुनिया में आरम्भ से यही नियम है कि राजा महल में रहता है, रिआया झोपड़े में रहती है। वह सत्त पर बैठकर हुक्मन करता है और रिआया हल बनाती है। राजा मराब पीता है, रिआया पानी पीती है और पानी पी-पीकर भी नहीं कोसती। और जब पानी भी नहीं मिलता तो चुपचाप भूखी-प्यासी मर जाती है। ऐसे समय की अवज्ञा और मूर्खा बढ़ते हैं।

लेकिन यह दुनिया का पुराना कायदा है। नया कायदा जो तुम अब पढ़ रहे हो यह नहीं मिलाता। नये कायदे में राजा और प्रजा सब बराबर हैं। करोड़ों रुपये एक महल पर खर्च करने के बजाय रिआया के रहने के लिए हजारों अच्छे घर बनाये जाते हैं। कुछ मोटर और हाथी रखने के बजाय मरगारी कारस्ताने सोचे जाते हैं, और बनगो तो बिन्दुन उड़ा दी जाती है। प्रता सिर पर बसंगो लगाने

मे किसका पेट भरता है ? नये कायदे में कलंगी लगाने और हीरे-मोती के गहने पहनने पर किताबें पढ़ने को श्रेष्ठता दी जाती है । इसलिए नया कायदा पढ़ो और कहो : र—राजा !

## ल—लोहा

वच्चो, लोहा तुमने अक्सर देखा होगा । यह एक काले रंग की कड़ी धातु है । यह देखो, तुम्हारे चाकू का फल लोहे का बना है; स्लेट के चौखटे में जो पतरे जड़े हैं वे लोहे के हैं; तुम्हारे कलम में जो निब है वह लोहे से बना है; दर्जी की सुई भी लोहे से बनी है; नार्ज वाशिंगटन का कुल्हाड़ा भी लोहे से बना था । तात्पर्य यह कि लोहे से अनगिनत चीजें बनती हैं ।

आजकल लोहे से मशीनों भी बनती हैं और मशीनगर्नें भी । मशीनों से मनुष्य वे तमाम काम करता है जो पहले अपने हाथ से किया करता था । इसका एक फायदा यह हुआ है कि मशीनें दिन-प्रतिदिन बड़ी होती जा रही हैं और इन्सान के हाथ छोटे होते जा रहे हैं ।

युद्ध हमेशा मशीनगर्नों से और लोहे के दूसरे हथियारों से लड़े जाते हैं । मनुष्य को मारने के जितने हथियार हैं वे सब लोहे से बनते हैं, इसीलिए लोहे को धातुओं का राजा कहते हैं । अन्दाजा लगाया गया है कि पहले और दूसरे महायुद्ध में जितने मनुष्य मारे गए उनकी संख्या इनसे पहले लड़े गए तमाम युद्धों की सम्मिलित संख्या से कहीं अधिक है । सिर्फ एक इसी बात से पता चलता है कि लोहा कितनी उपयोगी धातु है । इसीलिए तो जिन राष्ट्रों के पास लोहा होता है वे बड़े राष्ट्र और जिनके पास लोहा नहीं होता, या कम तादाद में होता है, वे छोटे राष्ट्र कहलाते हैं ।

कुछ लोगों का खयाल है कि अभी तक लोहा मनुष्य के लिए इतना उपयोगी साबित नहीं हुआ जितना कि एक फूल, एक कहे-कहा या एक गीत । लेकिन ऐसे लोगों को आमतौर पर पागल कहा

जाता है। ऐसे लोगों पर हमेशा दुनिया की फटकार बरसती रहती है और वे अक्सर बंदखानों या पागलखानों में बन्द कर दिए जाते हैं, क्योंकि आजकल लोहे का जमाना है, गीत का जमाना नहीं, कहवहे का जमाना नहीं, फूट का जमाना नहीं। वह जमाना अभी नहीं आया, जब आएगा तब तब ये पागल पागल भीत के मुँह में जा चुके होंगे। अब तो लोहे का जमाना है और लोहे और कोयले का बोसी-बामन का साथ है; जहाँ ये दोनों मिस जाते हैं वही मनुष्य का खून बहता है। इसलिए कहो : क—कोयला, ख—खून और ग—लोहा !

### व—वस्त्र हीन

बच्चों, तुम अक्सर वस्त्रहीन, नंगे-धडंगे गलियों में फिरते रहते हो और तुम्हें कोई बुरा नहीं कहता। तमाम जानवरों में संसिर्फ मनुष्य ही एक ऐसा जानवर है जो कपड़े पहनता है। बाकी जानवरों को जो हमेशा नंगे रहते हैं, कभी कोई बुरा नहीं कहता, न उन पर असम्ब्यता का दोषारोपण ही किया जाता है। यह असम्ब्यता सिर्फ वस्त्र पहनने वाले मनुष्य का विशेषाधिकार है। चायद इसीलिए हिंदुस्तान में साधु-महन्त महात्मा हमेशा वस्त्रहीन रहकर ज़िन्दगी बिताते रहे हैं।

अब तुम नंगे घूमते हो, लेकिन जब तुम बड़े हो जाओगे तो तुम्हें नंगा फिरने से रोका जायगा। उस वक़्त तुम गलियों में कपड़े पहनकर घूमोगे, और लोगों की बहू-बेटियों को ताका करोगे। यह सम्ब्यता तो जरूर है, लेकिन नंगापन नहीं और इस देश में नंगापन को बहुत बुरा समझा जाता है। वालो द्वीप के म्ब्री-मुहप, मलाया के लोग, अफ्रीका के हम्पी आमतौर पर वस्त्रहीन घूमते हैं, इसलिए वे सर-के-साथ बुरे हैं, असम्ब्य हैं। नंगा रहना संस्कृति के प्रतिकूल है। संस्कृति उस बुरी चीज़ को कहते हैं जिसे कपड़ों में छिपाकर अच्छा दिखाया जाय।

भूतानी, हिन्दी, बीड, ईसाई, तमल किल्ता (गुर्वि कला) और

चित्रकारी के उत्कृष्ट नमूने वे हैं जिनमें मनुष्य के शरीर को उसका असली हालत में दिखाया गया है। हाथ, पाँव, सीना, जाँघें, लिंग सब कुछ नंगा नजर आता है। इसी तरह पाश्चात्य और पूर्वी संगीत काव्य और साहित्य के उत्कृष्ट नमूने वे हैं जिनमें मनुष्य और मनुष्य के मनोभाव विलकुल नग्न और वास्तविक रूप में दिखलाये गए हैं।

लेकिन ये पुरानी बातें हैं। आजकल नंगा रहने को बहुत दुरा समझा जाता है। यद्यपि मुझे मालूम है कि तुम्हें नंगा रहना पसंद है लेकिन क्या करूँ ? इन्स्पेक्टर साहब का हुक्म है कि तुम्हें नंगा फिरने से रोकूँ। इसलिए मैं तुम्हें नंगा रहने का पाठ नहीं पढ़ा सकता। इसलिए वच्चो, नंगे न फिरो। असल को वास्तविकता को, अपने आपको जो-कुछ तुम हो कपड़ों में छिपा लो। जब तुम बड़े हो जाओगे तो यह आदत तुम्हारे लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होगी, क्योंकि उस समय तुम्हें पता चलेगा कि इन्स्पेक्टर साहब का हुक्म न सिर्फ स्कूल में चलता है बल्कि काव्य कला साहित्य संगीत दफ्तर समाज धर्म, जिन्दगी के हर विभाग में चलता है। नग्नता अपराध है।

वच्चो, अगर यही नियम रहा तो वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य के शरीर पर सिर्फ कपड़े-ही-कपड़े रह जायेंगे और अन्दर कुछ नहीं होगा। यह हमारी मानव सम्यता की अन्तिम सीढ़ी होगी—इसलिए वच्चो, कपड़े पहनो और सम्य हो तो कहो : व —वस्त्रहीन !

## श—शराब

वच्चो, तुमने शायद अपने बाप को आधी रात के समय घर का दरवाजा टटोलते, झूमते-झामते, गाते, गालियाँ बकते सुना होगा। यह शराब का प्रभाव होता है। शराब बड़ी अच्छी चीज है, क्योंकि यह अंगूर के रस से तैयार की जाती है। लेकिन आजकल अंगूर को वेलों कहीं दिखाई नहीं देतीं, क्योंकि उन्हें उन सभी वच्चों ने काट खाला है, जो जार्ज वाशिंगटन की तरह हर समय कान्धे पर कुल्हाड़ा लिये फिरते हैं। इसलिए आजकल शराब अंगूर के रस से नहीं, बल्कि

जो या चावल या मक्की या कीड़े-मकोड़ों के रस से तैयार की जाती है। जो बीज जितनी ही ज्यादा सड़ी-गली-बुसी होगी उससे शराब उतनी ही बढ़िया तैयार होगी। यह शराब का पहला उमूल है। शराब का आखिरी उमूल बीबी-बच्चों को मारने-पीटने और उन्हें गालियाँ देने पर सख्त होता है। जब शराब तैयार हो जाती है तब उसमें थोड़ी-सी धुनन भी डाल देते हैं ताकि मलेरिया के वे मच्छर, जो शराब के सड़ने-गलने की बजह से पैदा हो गए हैं, मर जायें। इसी-लिए तो शराब का स्वाद तीखा होता है और शराबी को कभी मलेरिया नहीं होता। लेकिन हिन्दुस्तान में लोग शराब बहुत कम पीते हैं, इसलिए यहाँ हर साल लाखों मौतें मलेरिया से हो जाती हैं। इस-लिए बच्चों, अगर तुम मलेरिया में बचना चाहते हो और कविता करना चाहते हो तो हमें शराब पियो, क्योंकि कविता सिर्फ शराब पीने से आती है।

शराब पीने से आदमी का हौसला बढ़ जाता है, दिलेरी, मर्दानगी और काम करने का मादा पैदा होता है, इसलिए आजकल हिन्दुस्तान के शराबियों के हौसले इस कदर बढ़ गए हैं कि उन्होंने अपने देश को आजाद करा लिया है और अपनी हुकूमत कायम कर ली है। बच्चों, तुम भी शराबिस्तान का साथ दो और कहो श— शराब।

## स—सरकार

बच्चों, सरकार उसे कहते हैं जो थोड़े से आदमी बहुत से आदमियों पर अपना अधिकार जमाते हैं। तुम बहुत से बच्चे हो, लेकिन तुम सब मेरे अधीन हो। इस स्कूल में मेरी हुकूमत है। मैं इस तहसील में रहता हूँ इस तहसील में और भी बहुत से आदमी रहते हैं, लेकिन इस तहसील पर सिर्फ एक तहसीलदार की हुकूमत है। यह तहसील एक जिले में है, जहाँ कलेक्टर की हुकूमत है। यह जिला एक राज्य में है, जहाँ गवर्नर की हुकूमत है। राज्य एक देश में है,

जहाँ प्रैसिडेण्ट की हुकूमत है । देश कामनवेल्थ में है जहाँ बादशाह की हुकूमत है । कामनवेल्थ घरती पर है, जहाँ परमात्मा की हुकूमत है । खुदा दुनिया में है, जहाँ पैसे की हुकूमत है । हुकूमत के बिना आदमी साँस भी नहीं ले सकता । अगर यह हुकूमत न होती तो यह स्कूल भी न होता; न तुम मुझसे सबक लेते, न मैं तुमको पढ़ाता । यह भी हुकूमत का प्रताप है । इसलिए वच्चो, हमेशा हुकूमत (सरकार) की इज्जत करो और यह याद रखो कि हर आदमी हुकूमत नहीं कर सकता और हिन्दुस्तानी तो खास तौर पर कभी हुकूमत नहीं कर सकता । जो लोग हुकूमत करते हैं वे लोग हाकिम कहलाते हैं और जिन पर हुकूमत की जाती है उन्हें शासित यानी रिआया कहते हैं । हाकिम हमेशा रिआया के फायदे के लिए सरकार चलाता है, इसीलिए हाकिम हमेशा अमीर होता है और रिआया हमेशा गरीब होती है । अगर, परमात्मा न करे, कभी ऐसा हो जाय कि हाकिम रिआया के फायदे के लिए नहीं, उसके नुकसान के लिए सरकार चलाए तो रिआया अमीर और हाकिम गरीब हो जाय और यह अच्छी बात न होगी, क्योंकि गरीब हाकिम कभी सरकार नहीं चला सकता । इसलिए हाकिम को हमेशा रिआया के फायदे के लिए ही सरकार का काम चलाना पड़ता है । कुछ लोग चाहते हैं कि सरकार का अस्तित्व ही दुनिया से मिटा दिया जाय । ऐसे लोग बहुत बुरे होते हैं । वे तो मानो 'स' अक्षर को मिटाने पर तुले हुए हैं । वच्चो, अब तुम्हीं बताओ कि अगर 'स' अक्षर को मिटा दिया जाय तो तुम सरकार में हाकिम कैसे बन सकोगे ? हुकूमत कैसे करोगे ? इसलिए इन पागल आदमियों की बातें कभी न सुनो और कहो : स—सरकार !

## ह—हिन्दू

वच्चो, हिन्दू उसे कहते हैं, जो मुसलमान का दुश्मन हो, वह काम करे जो मुसलमान न करता हो । यही कारण है कि मुसलमान गोश्त

१ है, हिन्दू तरकारी खाता है; मुसलमान सिर मुँड़ाता है; हिन्दू

सिर पर चोटी रखता है, मुसलमान गाय को हुलास करता है, हिन्दू उसे माता समझ कर पूजता है; मुसलमान मूबर को हराम समझता है, हिन्दू उसका अचार डालता है; मुसलमान मस्जिद में जाता है, हिन्दू मन्दिर में, मुसलमान चुपचाप नमाज पढ़ता है, हिन्दू शख और घड़ियाल बजाकर आरती उतारता है। इस पर भी हिन्दू और मुसलमान दोनों भाई-भाई हैं।

हिन्दू पृथ्वीराज चौहान को इज्जत करना है, मुसलमान साहबुद्दीन गोरी की; हिन्दू राणा सांगा को पूजता है, मुसलमान बाबर की दान में प्रशस्तिपत्र लिखना है; हिन्दू राणा प्रताप को अकबर से पड़ा समझता है मुसलमान अकबर को राणा प्रताप से अधिक महत्त्व देता है; हिन्दू का हीरो शिवाजी है, मुसलमान का औरंगजेब। इस पर भी हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई हैं।

हिन्दू जिस मुहल्ले में रहता है वहाँ मुसलमान को घुसने नहीं देता, हिन्दू जिस चौके में खाना खाता है वहाँ मुसलमान का कदम नहीं पड़ सकता; हिन्दू जिस कमरे में सोता है वहाँ मुसलमान की छाया नहीं पड़ सकती; हिन्दू जल पीता है, मुसलमान पानी; मुसलमान बीबी को तलाक देता है हिन्दू उसे सारी उमर अपने साथ रखता है; मुसलमान भरकर गाढ़ा खाना पसन्द करता है, हिन्दू खान पर खाने को धेड़ समझता है। इस पर भी हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई हैं।

हिन्दू मुसलमान को म्लेच्छ समझता है और मुसलमान हिन्दू को काफिर मानता है, मुसलमान का जात-पात में विश्वास नहीं, हिन्दू उसे अपनी सम्यता का केन्द्र-बिन्दु मानता है, हिन्दू की पवित्र भाषा संस्कृत है, मुसलमान की अरबी; हिन्दू दंगोर को पूर्व का कवि-सम्राट् समझता है, मुसलमान इकबाल को, हिन्दू अलखंड हिन्दुस्तान चाहता है, मुसलमान पाकिस्तान। इस पर भी हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई हैं।

अगर हिन्दू और मुसलमान दोनों भाई-भाई हैं तो 'हुदमत' के लिए एक नया शब्द बनाना पड़ेगा। लेकिन जब तक कोई ऐसा शब्द

नहीं गढ़ा जाता तुम यही समझो कि हिन्दू मुसलमान का दुश्मन है और हिन्दू और मुसलमान दोनों भाई-भाई हैं। और ये दोनों भाई एक देश में रहते हैं जिसके सम्बन्ध में कहा गया है 'सारे जहाँ से अच्छा है हिन्दोस्ताँ हमारा' और 'ये आवे रोदे गंगा।' इसी देश में जहाँ हिन्दू और मुसलमान बसते हैं कुछ ऐसे लोग भी विद्यमान हैं जो अपने-आपको मनुष्य कहलाना पसन्द करते हैं—खुदा के बन्दे। लेकिन यह उन लोगों की गलतफहमी है। ये लोग खुदा के बन्दे नहीं हैं, नास्तिक हैं, खतरनाक भेड़िये ! बच्चो, तुम जहाँ भी इन आदमियों को देख पाओ उनके मुँह पर थूक दो; क्योंकि इस्पेक्टर साहब का यही हुक्म है।

हिन्दू और मुसलमान दोनों भाई-भाई हैं और एक-दूसरे को देश-भाई कहते हैं। देश-भाई जब स्नेह की उमंग में आकर एक-दूसरे के साथ खेलते हैं तो दंगा हो जाता है। दंगा बड़े मजे का खेल है और यह हिन्दुस्तान में अक्सर खेला जाना रहा है। क्योंकि यहाँ हिन्दू और मुसलमान बहुत सख्या में रहते हैं। आम तौर पर दंगा पण्डित और मौलवी से शुरू होकर दफा १४४ पर जाकर समाप्त हो जाता है। इस दौरान में खून की नदियाँ बहती हैं, जिनमें हिन्दू और मुसलमान बड़ी खुशी से नहाते हैं। इसके बाद पुलिस स्थिति पर काबू पा लेती है; और फिर दूसरे दंगे की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। बड़े मजे का खेल है यह। चूँकि हिन्दू-मुसलमानों को कभी इस खेल से फुरसत नहीं मिलती इसलिए उन्होंने यह काम बहुत देर तक अंग्रेजों को सौंपे रखा हमेशा इन दोनों भाइयों के बीच न्याय करते रहे। यही कारण अंग्रेजों को न्यायशील कहा जाता है और हिन्दू-मुसलमानों को अशान्त और जो लोग दंगाशील नहीं, उन्हें प्रगतिशील कहा जाता किन देश में ऐसे मूर्खों की सख्या बहुत थोड़ी है। इसलिए  
ह—हिन्दू !

ज्ञ—ज्ञान

१, तुम इस समय हमारी वर्णमाला का आखिरी अक्षर पढ़



रहे हो, लेकिन आखिर में जाने के कारण इसका महत्त्व कम नहीं है। दुनिया में सबसे महत्त्वपूर्ण चीज ज्ञान है, जो तुम इस समय मुझसे सीख रहे हो; जब तुम ज्ञान सीख जाओगे तो मेरी तरह जानी (विद्वान्) कहलाओगे, और हर महीने पन्द्रह रुपए पाओगे जो कि इस देश में एक विद्वान् की तनखाह है। बच्चों, ज्ञान बड़ी सम्पत्ति है, इसे न चोर चुरा सकता है, न राजा छीन सकता है, न भाई बाँट सकता है, न शत्रु हथिया सकता है। इसलिए जब जानी मर जाता है तो अपनी सम्पत्ति अपने साथ ले जाता है और अपने बौबी-बच्चों का भूखा मरने पर मजबूर कर देता है, क्योंकि ज्ञान बड़ी दीलत है। ज्ञान मनुष्य का भूषण है, जिस तरह सोना औरत का भूषण है। लेकिन कई बीजों का भूषण के बिना ही अच्छी मानूम होती हैं जैसे चाँद। हर बच्चा शुरू में चाँद की तरह होना है, लेकिन बाद में वह पढ़-लिखकर विद्वान् बन जाता है और नौकरी पाता है। क्योंकि ज्ञान से नौकरी मिलती है और नौकरी से धन मिलता है। देखो मैं इन स्कूल में नौकर हूँ और पन्द्रह रुपए तनखाह पाता हूँ। पन्द्रह रुपए दीलत को कहते हैं और पन्द्रह हजार रुपए भी दीलत को कहते हैं; पन्द्रह लाख रुपए भी दीलत कहलाते हैं। परन्तु मिकं यह है कि जानी को पन्द्रह रुपए की दीलत मिलती है और कारखानेश्वर को पन्द्रह लाख भी दीलत। लेकिन दीलत हर हालत में दीलत है—बढ़ पन्द्रह रुपए हो या पन्द्रह लाख। इसलिए हर जानी को अपनी दीलत पर निर्भर रहना चाहिए, क्योंकि ज्ञान बड़ी दीलत है। बच्चों, ज्ञान सीखो, क्योंकि अगर तुम यह नहीं सीखोगे तो तुम्हें नौकरी नहीं मिलेगी। ऐसी दशा में तुम क्या करोगे? हलवाई की दुकान खोलोगे, व्यापार करोगे, जूते बनाओगे, कारखानों में काम करोगे, खेती-बाड़ी का मन्धा करोगे, जिस मेरे जैसा विद्वान् गवं करने को या मान-प्रतिष्ठा को पाउ नहीं गमजता है? इसलिए बच्चों, ज्ञान सीखो। ज्ञान के बगैर नौकरी ही मिल सकती और इम्कत नहीं हासिल हो सकती, बल्कि मुक्ति भी हासिल नहीं हो सकती। इसलिए कहो—अ—ज्ञान !

## पहला पाठ

अंग्रेज इन्सान हैं। मलायावासी भी इन्सान हैं। इन्सान इन्सान पर हुक्मत करता है। हुक्मत चोर को सजा देती है। चोर डाकू का छोटा भाई है। सब इन्सान भाई-भाई हैं।

मोहन आम खाता है। बनिया सूद खाता है। टामी मक्खन खाता है। बंगाली भूखा रहता है। राजा महल में रहता है। रानी रेशम के कपड़े पहनती है। मेरी बहन का नाम रानी है। लेकिन उसके पास रेशम के कपड़े नहीं हैं।

खरतूजा खा; खरतूजा न बन। हैजे से मर; भूख से न मर। गाली बक; चुप न रह। यह फूट का मेवा है, इसे दिसावर भेज।

राजा आया। हाथी आया। डाकू आया। अकाल आया। गोदाम कहाँ है? यह तो कागज का गोदाम है। अनाज का गोदाम कहाँ है? पहलवान बन; झूहा न बन। गोदाम पर अधिकार कर।

## दूसरा पाठ

आज शान्ति है; कल लड़ाई होगी; परसों फिर सुलह हो जायगी। इसी का नाम प्रगति है। प्रगति मनुष्य करते हैं। हिन्दू-मुसलमान दंगा करते हैं। हिन्दू हिन्दू-जल पीता है। मुसलमान मुसलमान-पानी पीता है। इन्सान के लिए पानी कहाँ है? कहीं नहीं है।

शराब अंगूर से बनती है। गुलामी बफादारी से आती है। कुत्ता बड़ा बफादार जानवर है। भेड़िया जंगल में रहता है। कुत्ते के गले में जंजीर है। जंजीर को तोड़ दे। दूध का प्याला फोड़ दे।

मोहन बड़ा अच्छा तोता है। यह जान के पिजरे में बोलता है—  
हिप्-हिप्-टूरा! अमजद स्मिय के पिजरे में है। अमजद बोलता है—  
इतमें क्या सन्देह है? मोहन हिन्दू है। अमजद मुसलमान है। हिन्दू-

मुसलमान का दुश्मन है। मोहन और बमजद भाई-भाई हैं। भाई सड़ते हैं। गद्दार एक-दूसरे की मदद करते हैं।

### तीसरा पाठ

डिप्टेटर ग़ून बहाता है। परी-देश में डिप्टेटर नहीं होता। मास्टर के पास पन्द्रह रुपए हैं। कारखाने वाले के पास लाखों रुपए हैं। हिन्दुस्तानी के पास डेढ़ आना है। पन्द्रह साल के बाद हिन्दुस्तानी के पास चार आने होंगे। पन्द्रह साल में पाँच हजार चार सौ पचहत्तर दिन होते हैं। हिन्दुस्तानी चात्तीस करोड़ हैं। हिन्दुस्तान में कुलबुलें रहती हैं।

बच्चा नगा फिरता है, पतलून नहीं पहनता। पतलून पहनेगा तो नौकरी मिलेगी। नौकरी से इश्वर मिलती है। नौकरी कर। बीबी ला। इराम हासिल कर। मोहन के पास बहुत साधन हैं। मोहन के पास एक छदाम नहीं। मोहन गरीब है। गरीब खोरी करता है। हाकिम हुकूमत करता है।

राजा तख्त पर बैठता है। रिजाया हल चला रही है। यह सोंपड़ा है। यह महल है। गान्नी न बक। नया कायदा पढ़। पुराना कायदा भूल जा।

घर जा। डाकू से लड़। पिजरा लोल दे। आज रात है। सल मूबह होगी, मूरज निकलेगा। नया मनुष्य कायगा। बच्चे खेलेंगे। कहकहे लगायेंगे। गीत गायेंगे।

## मंत्रियों का क्लब

कनाट प्लेस के गोल चक्कर के बाहर एक और गोल चक्कर शरणार्थियों की दुकानों का खिंचा हुआ है। दुकानें अधिकांशतः खोखे की लकड़ियों, टीन की छतों या तिरपाल की दीवारों से तैयार की गई हैं। इनमें से अधिकतर दुकानें ढावानुमा होटलों में परिवर्तित हो चुकी हैं। सरकारी मामलों के सिलसिलों में आम लोगों को बहुधा सरकारी दफ्तरों में जाना पड़ता है। ये लोग तबीयत के कमीने और स्वभाव के गन्दे होते हैं, इसलिए नई दिल्ली के साफ-सुथरे होटलों का खाना पसन्द नहीं करते—इसके अतिरिक्त ये लोग अत्यन्त कंजूस और डरपोक होते हैं। 'माई लार्ड' और 'क्लिपटन' ऐसे होटलों के बड़े बिल देखकर डर जाते हैं, इसलिए इन लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कनाट प्लेस के चक्कर के बाहर ये दुकानें जंगली झाड़ियों की तरह खुद-ब-खुद ज़मीन से उठ आती हैं। इन दुकानों में आप वही बेतरतीबी, गँवारपन और अव्यवस्था पायेंगे, जो अपने-आप उगने वाली जंगली झाड़ियों के झुंड में होती है। मुझे इन ढावानुमा होटलों से सख्त नफ़रत है, जहाँ तीन आने में दो चपातियाँ मिल जाती हैं और दाल मुफ्त, पानी मुफ्त और बैठने के लिए कुर्सी और मेज़ तक मुफ्त। अगर दूसरे देशों के यात्री नई दिल्ली के इन गलीज ढावों को देख पायें तो हिन्दुस्तान के सम्बन्ध में कैसी राय कायम करें? और आजकल ले-दे के अपने देश में अपनी एक विदेग-नीति ही तो रह गई है, जिसकी वजह से हिन्दुस्तान का नाम दूसरे मुल्कों में इज्जत से लिया जाता है, वरना हमारे यहाँ है क्या? जनता है तो मूर्ख, दुकानदार हैं तो बेईमान, कर्क हैं तो घूस खाने वाले, मजदूर हैं

तो कामचोर, ओरते हैं तो फैशन की दीवानी । लोग ऐसी बुरी आदती के शिकार हो चुके हैं कि गन्दे धरों में रहते हैं, फटे कपड़े पहनते हैं, और गन्दे बाजारों में आवागमन करते रहते हैं । यहाँ किसी विदेशी यात्री को दिखाने के लिए हे क्या ? एक था गाछडा-नगस डेम—यह पूरा ही नहीं हो चुकता । यार लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि अगर उगे पूरा कर दिया गया तो हमारे पास विदेशी यात्रियों को दिखाने के लिए रह क्या जायगा ?—और दूसरी है हमारी विदेशी नीति—जिसकी वजह से हमारा भरम बाहरी देशों में कायम है, और यह विदेश-नीति गोपाई दिल्ली को पैदावार है, जहाँ ये बदसूरत ढाबे ठीक कनाट प्लेस के सामने मौजूद हैं । जब तक ये ढाबे कनाट प्लेस के सामने मौजूद हैं, हमारे देश की विदेश-नीति कभी सफल नहीं हो सकती । मेरी तुच्छ राय में तो इन ढाबों को बहा देना चाहिये ।—खैर, यह तो सिर्फ विरोध के लिए बात थी, असल बात यह है कि आजकल जो कुछ मैं कहता हूँ, उसमें बात कम होनी है और विरोध अधिक होता है ।

मैं वास्तव में कहना यह चाहता हूँ कि मैं एक रोज कनाट प्लेस के बाहर एक तपती दोपहर में टोल की छत के नीचे इसी ढाबे में बैठा हुआ खाना खा रहा था । मुझे ये ढाबे पसन्द नहीं हैं, और न मैं इनमें खाना पसन्द करता हूँ । मैं एक सम्य, काफी पढ़ा-लिखा आदमी हूँ । बड़े-बड़े आदमियों से मेरी मुलाकात रहनी है, जिनमें मन्त्री, गवर्नर, लीडर, मिल-मानिक और पक्षधर्मीय प्लान के निदेशक शामिल हैं । जो नहीं, आपने गलत समझा । मैं किसी महकमे में रिप्टी सेक्रेटरी नहीं हूँ, सीमेट का ठेकेदार भी नहीं हूँ, रिगो मन्त्री का मानजा भी नहीं हूँ । नहीं, नहीं मेरी पत्नी किसी असेंबली की मेंबर भी नहीं है । मैं तो आजकल एक असवार में रिपोर्टर हूँ और केवल इसलिये इस तुच्छ ढाबे में खाना खाने पर मजबूर हूँ कि मुझे लगभग प्रतिदिन सिविल सेक्रेटेरियट-में किसी न किसी बड़े आदमी से इंटरव्यू करने के लिए जाना पड़ता है और मेरी जेब इस बात की आशा

नहीं देती कि माई लार्ड होटल में बैठकर खाना खाऊँ, वर्ना ईलान की कहिये—मखमल की कुर्सियों और विलायती चीनी की प्लेटों में सजा हुआ खाना किसे पसन्द न होगा ? हाँ भाई, आधी प्लेट दाल की और दे दो और यह चपाती तो बिल्कुल जल गई है, इसे बदल के लाओ ।

“हाँ, तो मैं क्या कह रहा था ? उपफोह । किस कदर बुरी आदत है मेरी, पड़ा-पड़ा बेकार की बातें किया करता हूँ, इससे एक तो असल मतलब भिट जाता है और फिर समय कितना बर्बाद होता है, आपने कभी ध्यान दिया । आप आधे घंटे से एक ही कौर मुँह में डाले उल्लू की तरह मेरा मुँह क्या देख रहे हैं । नहीं, नहीं, आप खफा मत होइये । मेरा कहने का मतलब यह था कि आप खाना भी खाइये और साथ में मेरी बातें भी सुनते जाइये ।

हाँ, तो मैं आपको बता रहा था कि एक रोज़ तपती दोपहर में मैं इसी ढाबे में बैठा हुआ था कि—अरे ज़रा देखिये तो यह कौन आदमी आपके पीछे आके बैठा है, मुड़ के देखिये । अरे देखिये ज़रूर, मगर इस तरह तो न घूरिए कि दूसरा आदमी आपको सी० आई० डी० वाला समझने लगे । आपने इसे पहचाना, जरा गौर कीजिये, अपनी स्मरण शक्ति पर जोर देकर बताइये—आपने इसे कहाँ देखा है ? मैं दावे से कहता हूँ आपने इसे ज़रूर देखा होगा ।

कुछ याद नहीं आता ? दरअसल इसमें आपका भी उतना कसूर नहीं है । इस आदमी की बड़ी हुई मूँछें जो उसके होंठों पर गिर रही हैं, इसके मैले-कुचैले कपड़े, यह खदर की मैली गलीज़ टोपी । उसकी फटी-फटी तार-तार मुस्कुराहट से आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते कि वह आदमी कभी उत्तर दक्षिण प्रदेश में कृषि विभाग का मन्त्री बल्लि तेल विभाग भी इसी के पास था, और यह मैं दावे से कह सकता हूँ कि यह उन दोनों महकमों को सम्हालने के योग्य भी था । इसका बाप मौजा घमालपुर का प्रसिद्ध जमींदार था और मन्त्री बनने से पहले यह आदमी सत्रह बार जेल जा चुका था, जिनमें से पहली बार तो एक लड़की भगाने के केस में पकड़ा गया था । दूसरी बार इस पर

राजुओं की सहायता करने का अपराध था। तीसरी और चौथी बार इस पर सरकारी धन के गवन का मुकदमा चला। इसके बाद जो जन-आंदोलन आता तो इस आंदमी का व्यक्तित्व बिल्कुल ही बदल गया। यह गुंडे से एक नेक, सम्य और देवना जैसा इन्सान बन गया। आखिरी तरह जैलें इसने राष्ट्रीय आंदोलन के सिलसिले में काटी हैं। मैं जातिभेद में बिल्कुल विश्वास नहीं रखता। मैं समझता हूँ मनुष्य के अन्दर एक विशुद्ध आत्मा होती है, जिसे अगर छायत कर लिया जाय तो वही मनुष्य देवता बन जाता है। कोई जाति घुरी नहीं होती, कोई मनुष्य बुरा नहीं होता, यह सब दिन में परिवर्तन पैदा करने की बात है, और यह बात अगम है कि हमारे देश के लोग भूर्ख हैं, उनके सर पर जब तक डंडे न मारे जायें वे बदलने नहीं, और जो हमारी-आपकी तरह मध्य लोग हैं उनके विषे लीडर का इशारा ही काफी है।

मह भूतपूर्व मन्त्री आजपल बहुत बुरी दशा में दिखाई देता है। देखिये इसकी चम्पल जितनी फिमी हुई है और इसका बदन का पाय-जामा कैसा पुराना हो रहा है, और इसकी मूँछें होंठों की चार से लगातार गीली हो रही हैं इसलिये उसका रंग कैसा बुझा-भुझा सा है, जैसे मूँछें बालों की न हों भूट की हों। मेरे सवाल में तो इस भूत-पूर्व मन्त्री को अपनी मूँछें रगवा लेनी चाहिये, वरना कोई विदेशी मन्त्री इन मूँछों को देखकर हमारे मुल्क की विदेश-नीति के बारे में क्या सोचेंगा?

: भाग्य की जान है महायम ! कि यह किमी समय का मन्त्री गैजकल इस ढाँचे में बूँ फटे हाल बैठा है। वास्तव में इसमें उसरी किस्मत का भी इतना कमूर नहीं जितना उसकी मूर्खता का है। और सही पूछो तो सत्य निष्ठा भी एक तरह की मूर्खता ही है। यह मन्त्री अत्यन्त ईमानदार था, इसलिये उस दशा को पहुँचा। भला राजनीति में सच्चाई का क्या लेना-देना। राजनीति में तो सच्चाई नहीं देनी जाती, एक-दूसरे का मुँह देखा जाता है। जनता यह देखती है कि लीडर क्या कहता है। लीडर यह देखता है कि मन्त्री क्या कहता है।

मन्त्री यह देखते हैं कि चीफ मिनिस्टर क्या कहता है। चीफ मिनिस्टर यह देखता है कि वाह के मुल्क क्या कहते हैं, इसी पर भारत की साख कायम है।—भाई थोड़ी सी चटनी, प्याज और दे देना।

इस मन्त्री का नाम अलगूराम राय है। जब यह उत्तर-दक्षिण प्रदेश में मन्त्री था तो मैं उसका इंटरव्यू लेने गया था। उस समय इसकी शान ही अलग थी। खद्दर का सफेद बुराक पहनावा। सर पर खद्दर की किश्तीनुमा टोपी, यों ऊँची तन के खड़ी थी, जैसे किसी ने उसके अन्दर बाँस की खपच्ची डालकर खड़ा किया हो। यही सन्देह इस मन्त्री की गर्दन पर भी होता था। उस ज़माने में इससे इंटरव्यू लेने गया तो इसकी स्टेनो बड़ी खूबसूरत लड़की थी, उसका किस्ता अलग है, वह फिर सुनाऊँगा। उस समय मुझे उस सुन्दर कोमल शरीर, सुनहरे घुंघराले वालों वाली लड़की को देखकर बड़ी खुशी हुई थी। ऊँची एड़ीवाले सैंडिल पहने हुए जब वह टप-टप करती हुई चलती थी तो ऐसा मालूम होता था जैसे दफ्तर के फर्श पर टाइप कर रही है। वास्तव में हाथों से अधिक उसके पाँव टाइप करते मालूम होते थे। और जब वह क्लर्कों की मेजों के बीच में से गुज़रते वक्त मन्त्री के कमरे की तरफ जाते हुए इधर-उधर देखकर मुस्कराती थी, तो ऐसा मालूम होता था जैसे मुस्कराती हुई ड्राफ्ट की भिन्न-भिन्न काबन कापियाँ हवा में बिखर रही हैं।

उस दिन मन्त्री ने मुझे बहुत लम्बा इंटरव्यू दिया, वह उस दिन बहुत ही प्रसन्न था। असेम्बली में उसका महत्वपूर्ण व प्रसिद्ध कृषि-संवंधी बिल पेश होने वाला था। वह इंटरव्यू के बीच में बार-बार सिगार पीता था। एक सुगंधित रुमाल—शुद्ध और हाथों से बुने हुए खद्दर का—जब से निकाल कर अपना मुँह पोंछता था, और इतनी तरह स्नेह-भरी निगाहों से अपनी सुन्दर स्टेनो को देखता था, जैसे उन दोनों के बीच कोई दिलचस्प भेद का साक्षात् हो। और वह काफिर भी यों उसकी तरफ देखकर मुस्कराती थी, जैसे उसने अपने हाँठों के पेटे में किसी नई मुस्कराहट का रिबन फिट किया हो। कभी-



बन्नी में होचना है . एक रबी में और एक टाइपराइटर में क्या अन्तर है, जरा मुसमुदाओं, मुन्वरहाट बाहर !



नहीं महाशय ! मैं औरत का दुरमन नहीं हूँ, मैं लड़िवारी भी नहीं हूँ । मैं ओग्लो, टाइपराइटरों, सीइरो, मन्त्रियों, सामाजिक कार्य-कर्त्ताओं और जन-सेवक समाज का बेहद मानने वाला हूँ । जरा अगर मुझे किसी से शिकायत है, तो अपने मुल्क की मूर्ख जनता से । मैं क्या यगाजें कि जिस बदर कुटुम्ब है लोम । अपना भला-बुरा समझने की शक्ति भी नहीं रखते । साथ खुद ही सोचिये, मन्त्री अलमूराम राम ने जो कृषि-विल अधिनियम में पेश किया था, वह किस बदर परि-वर्तनशील बुद्धिमानी का परिचय देता था । अगर पास हो जाना तो हमसे हमारे मुल्क की जनता को किनारा लाभ पहुँचना, और बाहर के

मुल्क भी इस बिल के पास होने से किस कदर खुश होते । मगर जाने क्या बात हुई कि किसी का ध्यान ही नहीं गया उस तरफ । हालाँकि कृषि-मन्त्री ने बहुत उत्तम बिल पेश किया था, और उसके कृषि-मुधारों का सारा उद्देश्य था कि ज़मीन किसानों से ले ली जाय और ज़मींदारों में बाँट दी जाये !! मैं इसी सिलसिले में कृषि-मन्त्री से इंटरव्यू लेने गया था । यद्यपि बात मुझे भी जरा सी अजीब लगी थी कि इस ज़माने में, जब चारों तरफ से यह आवाज़ उठ रही है कि ज़मीन ज़मींदारों से लेकर किसानों में बाँट दी जाये, उस समय एक मनचला ऐसा उठता है जो बवांग घल आप समझते हैं ना ? नहीं तो घर जाके डिक्शनरी देखियेगा, जो बवांग घल यह बिल पेश करता है कि ज़मीन ज़मींदारों से नहीं बल्कि किसानों से ले ली जाये और ज़मींदारों में बाँट दी जाये । इस सिलसिले में जब मैंने कृषि-मन्त्री अलगूराम राय त्रिपाठी से पूछा तो उसने मुझे ऐसा सीधा जवाब दिया कि तबियत पर आज तक उसका असर बाकी है ।

अलगूराम ने कहा, “देखिये, यह बात किस कदर गलत है कि पहले तो हम ज़मीन ज़मींदारों से लेते हैं और इस तरह सम्य लोगों के एक वर्ग को खत्म करते हैं । यह जातीय नफरत हमारे सरकारी नियम के बिल्कुल विरुद्ध है । फिर हम यहीं पर बस नहीं करते, हम यह ज़मीन ज़मींदारों से लेकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े करके किसानों में बाँट देते हैं । ज़मीन का यह बारह-बट हमारी कृषि की पैदावार को और भी कम कर देता है । और उसके बाद जब हमें इसका अनुभव होने लगता है, तो हम कोआपरेटिव आंदोलन चलाते हैं, अर्थात् उस ज़मीन को जो भिन्न-भिन्न किसानों में टुकड़े-टुकड़े करके बाँटी गई थी फिर से इकट्ठा करते हैं । यह मूर्खता नहीं तो और क्या है ? भई टुकड़े-टुकड़े करके फिर से इकट्ठा करने से तो यही बेहतर है कि ज़मीन ज़मींदारों के पास रहे । ज़मींदारी जो है वह गोया एक तरह का कोआपरेटिव नस्टम ही होता है । मेरे मौज़ा घमालपुर ही को ले लीजिये, यह गाँव ई पोढ़ियों से हमारा है । लेकिन हमारे मौज़ के सारे किसान इनमें

मिल के हल चलाते हैं, मिल के बीज बोते हैं, फसल उगाते हैं, फसल काटते हैं। यह कोआपरेटिव आंदोलन नहीं है तो और क्या है? मेरे पिता खुद अपनी आँखों के सामने सब काम कराते थे, और जो दद-माद किसान चूँ-चापड़ करता था, उसे तुरन्त बेखदश कर देते थे। आजकल अजीब हालत है, किमान कितना निकम्मा, फिमड्डी, काहिल और कामचोर क्यों न हो, कोई उसे उसकी जमीन से बेदखल नहीं कर सकता—हालाँकि मेरे जैसे आत्मा पोखीशन के मन्त्री से रोज जवाब-तलबी होती रहती है, तुमने अपने भाई को फली जगह क्यों नियुक्त कर दिया, और अपने फली भतीजे को फली पोस्ट क्यों दे दी? एक मन्त्री की कितनी समझ भी उसके मन्त्रित्व से बेदखल किया जा सकता है, लेकिन एक मूर्ख अनारब, मजहबी, बुराईयो मे फसे और अध-विश्वास के मारे हुए किसान को कभी जमीन से बेदखल नहीं किया जा सकता—यह कोई इसाफ है?

“फिर देखिये जब से जमींदारों से जमीन छीनी जा रही है, खेती की पैदावार कम होती जा रही है। किसान पहले से अधिक निकम्मे और काहिल हो गये हैं, क्योंकि अब उनके सर पर जमींदार का ढण्डा नहीं है, न मिर्क कृषि-पैदावार कम हो गई है बल्कि अनाज की कीमतें बढ़नी जा रही हैं। ईमान की बात कहिये, धर्म की बात कहिये, जरा पच्चीस-तीस वर्ष बल्कि चालीस वर्ष पहले के जमाने में जाइये, जब कि किसानों का यह गलत आंदोलन हमारे देश में न चला था, देखिये उस वक्त भी जमीन जमींदारों के पास थी, लेकिन हमारा देश किस कदर खुशहाल था। हमारे किसान किस कदर मजे से रहते थे, अनाज किस अधिकता से पैदा होता था और कितना सस्ता बिकता था। चावल रुपये का सोलह सेर तो मैंने लेकर खाये हैं। मक्ई रुपये की सवा मन बिकती थी। तीन आने सेर दूध था। घी रुपये का छः सेर बिकता था। आटा रुपये का पंद्रह सेर मिल जाता था। आजकल आटा तो बया सकड़ी का बुरादा भी इन भाव पर नहीं मिलता। अजी सकड़ी का बुरादा तो क्या अगर आप अपने

मकान के निर्माण के लिये बाहर से रेत लाने जायें तो वह भी इस भाव पर नहीं मिल सकती। मुझे मालूम है, मैं आजकल डिप्लोमेटिक कॉलोनी न्यू दिल्ली में अपनी कोठी बनव रहा हूँ। मुझे मालूम है कि रेत किस भाव पर मिलती है। सीमेंट तो खैर कोटा से मिल जाता है। सरकार अगर रेत का भी कोटा कर दे तो संभव है बात कुछ बने मगर केन्द्रीय सरकार को इसकी फिक्र क्या है। कल्चर के लिये मंत्रालय अलग बना लिया है। यह कल्चर-वल्चर सब वकवास है। पेरे ख्याल में तो केन्द्र को जल्द-से-जल्द रेत का मंत्रालय खोल देना चाहिये। कब से मेरी कोठी का काम रेत के न होने से रुका पड़ा है !

“तो इसलिए रिपोर्टर साहब,” अलगूराम राय धमालपुरी कृषि-मंत्री और जेलखाना व पट्टाखाना ने मेरी तरफ अपनी कंजी आँखें घुमाकर कहा—“इसलिये मैं यह कृषि-विल आज असेम्बली में पेश कर रहा हूँ ताकि ज़मीन फिर से ज़मींदारों को मिल जाये और देश में अनाज सस्ता मिलने लग जाये, और हमारे किसानों के लिये वही खुशहाली का दौर आ जाये, जो आज से चालीस बरस पहले इस देश में था।”

“हियर, हियर !” मैंने जोश में ताली बजायी। मंत्री का भाषण सचमुच युक्ति-युक्त और नये विषय का था। इसके बाद उसने असेम्बली में जो भाषण किया, वह उससे भी बेहतर था। मगर ठीक मौके पर जाने क्या हुआ कि चीफ मिनिस्टर, जिसने कृषि-मंत्री को सहायता का विश्वास दिलाया था, उसी का दल विरोधी दल से मिल गया और यह विल पास न हो सका। चीफ मिनिस्टर को मंत्री मंडल में फेर-बदल करना पड़ा। जिसमें अब की उन्होंने अलगूराम राय त्रिपाठी को न लिया। त्रिपाठी जी ने दिल्ली में आकर बहुत से दरवाजे खटखटाये, केंद्रीय सरकार से तिकड़म लड़ने की बहुत सी कोशिशें कर डालीं, मगर कोई लाभ न हुआ। इस मंत्री मौजा धमालपुर भी इससे छिन गया। गया यह मनुष्य अपने

मंत्रीपद से गया और अरने निर्वा पैसे में भी गया । अब आज आप इसे मामूली ढांचे में जली हुई तन्दूरी चपाती खाते हुए देख रहे हैं । ऐसे में अगर कोई विदेशी यात्री हमारे भूतपूर्व मंत्री को इस दरा में देख लें तो हमारी विदेश-नीति के बारे में क्या राय कायम करें ?

मगर असल में उन मंत्री का जो निस्स आपकी सुनाने लगा था, वह तो शिल्प ही निप है । जी नहीं, वह स्टेनोग्राफर सुन्दरी का किरसा भी इस समय नहीं सुनाड़ेगा, उसके लिए दाम का वस्त बेहतर होगा—जब मृगहरी शाग वाली गियर म्बच्छ प्याले में छल-कती हो और निमान रोगनियों का प्रकाश किसी के सुनहरे बालों पर दमकता हो और कोई मृगनयनी [दिन को गिमाने वाली मेरी बगल में बैठी हो और वित्त आप अदा कर रहे हो, वह किस्सा इस समय सुनाने का नहीं है ।

इस समय तो मैं आपको इस मंत्री की दूसरी मुलाकात का हाल सुनाता हूँ । अब अजगूशम राय मंत्रीपद से अराग कर दिया गया और दिल्ली पहुँचा और यहाँ कोशिश करने पर भी मंत्रीपद दुबारा प्राप्त करने में असफल रहा तो उसने नई दिल्ली में मंत्रियों का क्लब खोल लिया । जी हाँ—मंत्रियों का क्लब । इस नई दिल्ली में, वह जहाँ आरमीनियाँ होटल हैं ना, उसके बिस्कुस सामने की बिल्डिंग में खुला था । उस क्लब की कहानी भी बेहद दिलचस्प है । मैं अभी आपको सुनाता हूँ । बरा मेरे लिये आधी प्लेट मुर्ग का आर्डर कीजिये, मगर ब्याल रहे कि उसमें एक टुकड़ा तो मुर्ग की टाँग का हो, दूसरा टुकड़ा सीने का हो । मुझे मुर्ग की टाँग और उसका सीना बहुत पसन्द है । क्या कहा आपने ? पश्चिम में खोरत को भी इसी नजर से परखा जाता है ? महाशय आप बहुत खोरत-पसंद आदमी मालूम होते हैं । आपको मानूम होना चाहिये—यह हिन्दुस्तान है, जिसका पड़ोसी पाकिस्तान है, जिसका पड़ोसी अफ़्गानिस्तान है । पश्चिम की गंदगी यहाँ मन विनेरिये । हम लोग एक आध्यात्मिक देश के रहने वाले हैं । पश्चिम की बिलामिना यहाँ न चलेगी—जो

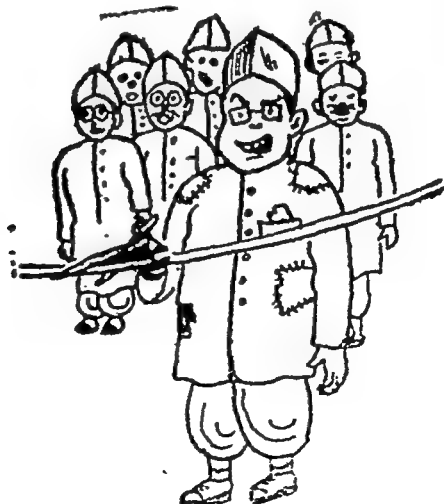
मुर्ग और औरत को एक ही नज़र से परखती है—चलिये मुर्ग न सही गोस्त ही मंगाइये ।

×

×

×

हाँ, तो एक रोज़ मैं अपने अखबार के दफ्तर में बैठा हुआ प्रूफ पढ़ रहा था कि सहायक संपादक ने निमन्त्रण-पत्र मेरे हाथ में थमा कर कहा—“कनाट प्लेस में आज शाम को छः बजे मंत्रियों का क्लब खुल रहा है, आप रिपोर्ट ले आइये ।” मैं बड़ा हैरान हुआ । यह मंत्रियों का क्लब क्या बला है ! कांड देखा । सचमुच आज मंत्रियों के क्लब का उद्घाटन हो रहा था । श्री गुदगुदाचार्य केंद्रीय मन्त्रि-मण्डल के भूतपूर्व कामर्स मिनिस्टर उसका उद्घाटन कर रहे थे । मन्त्रियों का क्लब !—बात अचम्भे की थी, लेकिन जब से कार्ड के नीचे सेक्रेटरी का नाम पढ़ा तो चौंक गया—नीचे मोटे अक्षरों में लिखा था—आर० एस० वी० पी० सेक्रेटरी अलगूराम राय त्रिपाठी धमालपुरी, भूतपूर्व कृषिमन्त्री उत्तर-दक्षिण प्रदेश, रईसज़ादा



व (जेसयाप्ता) : सत्रह बार । उस समय शाम के पाँच बज रहे थे और उद्घाटन छः बजे था । मैंने उसी वक्त साइकेल चलाई और मंत्रियों के क्लब में जा पहुँचा ।

मंत्रियों का क्लब बहुत उम्दा सजा हुआ था । पदें, गावनकिये, तख्तपोश, दीवाना, सोफ़े, देखकर ऐसा भासूम होना था, गोया हैंडलूम इंडस्ट्री का नुमाइश हो रही है । कागजी फूलों और खड्ग के गुट्टारों से सजे हुए केंद्रीय हॉल के एक तरफ नीरा-बार था—जहाँ सिर्फ़ नीरा मिलता था । धूम्रपान के कमरे में सिर्फ़ थोड़ी पी जा सकती थी । और हेलों के कमरे में सिर्फ़ शतरंज खेली जा सकती थी । बलगूराम राय मुझे बड़े सपाक में मिला । अब की यह मंत्रियों का पहनावा यानि अधिकन और खूबीदार पायजामा नहीं पहने हुए था । उसके सिर पर गाँधी टोपी थी, लेकिन उसका रंग अब लाल था । मेरे पूछने पर उसने बताया—“मैंने अपनी पार्टी से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया है और अब सोशलिस्ट पार्टी से सम्बन्ध जोड़ने की कोशिश कर रहा हूँ, अगर वहाँ सफल न हुआ तो कम्युनिस्ट पार्टी में जाऊँगा । और अगर वहाँ भी कामयाब न हुआ तो अपनी पार्टी अलग बनाऊँगा । लेकिन इस अवसर पर तो मैंने मंत्रियों का क्लब खोल लिया है । अब मुझे भविष्य से अलग किया गया तो मुझे कोई-न-कोई काम तो खरूर करना था, इसलिए सोच-सोच कर मैंने नई दिल्ली में मंत्रियों का यह क्लब खोल दिया है । इसका वही व्यक्ति मेंबर हो सकता है जो कभी केंद्रीय मन्त्रि-मण्डल या प्रांतीय मन्त्रि-मण्डल में मन्त्री, सहायक मन्त्री, डिपुटी सहायक मन्त्री या सहायक डिपुटी ज्वाइंट मन्त्री रह चुका हो । इस क्लब का उद्देश्य है भूतपूर्व मन्त्री के अधिकारों की रक्षा और पुनर्वास । मैं कहता हूँ अगर हमारी हुकूमत शरणार्थियों को फिर से बसाने के लिए एक मन्त्रि-मण्डल कायम कर सकती है, तो भूतपूर्व मंत्रियों के पुनर्वास के लिए जलम मन्त्रि-मण्डल क्यों नहीं कायम करती ?

बलगूराम राय ने जोर से मेज पर मुक्का मार कर बड़ी कठोरता

से अंग्रेजी में कहा—There should be a separate ministry for the rehabilitation of ministers.

“वेशक । वेशक” मैंने सर हिलाकर पेंसिल से अपनी नोटबुक पर लिखते हुए कहा । वह मेरे इस समर्थन से निहायत खुश हुआ, राजदाराना स्वर में कोट का बटन पकड़ के कहने लगा—“मेरे क्लब के तीन सौ मेंबर बन चुके हैं और अगले साल दो ढाई सौ के करीब और मेंबर बन जायेंगे ।” “और अगर तुम”—मैंने उसे परमार्श देते हुए कहा—“इस क्लब की एक शाखा पाकिस्तान में कायम कर दो और एक फ्रांस में तो कैसा मज़ा आये ?”

“वाह ! वाह !! तुमने क्या उम्दा बात सुझाई है मुझे ।” अलगूराम राय ने मेरे कोट का बटन तोड़ कर अपनी जेब में डालते हुए कहा—“फिर हम भूतपूर्व मन्त्रियों की एक इंटरनेशनल कांफ्रेंस बुला सकते हैं पैरिस में—अरे सुनते हो पैरिस में ?”

पैरिस का नाम आते ही अलगूराम राय की आंखें आनन्द से चमकने लगीं । कुछ क्षणों के लिए चुप रहा गोया दिल-ही-दिल में पैरिस की इंटर-नेशनल कांफ्रेंस के मजे ले रहा हो फिर यकायक उसे कुछ याद आया, उसने अपनी घड़ी देखी, और जल्दी-जल्दी कहने लगा—“उद्घाटन का समय हो रहा है, श्री गुदगुदाचार्य आने वाले हैं, तुम भी चलो बड़े हॉल में ।”

वह मुझे छोड़कर जल्दी से बड़े हाल की तरफ भागा । मैं भी उसके पीछे-पीछे हो लिया । हाल में झुंड के झुंड भूतपूर्व मंत्री दाखिल हो रहे थे । हर प्रांत, हर नस्ल, हर रंग और कोम और हर भाषा के मंत्री थे । उत्तर के मंत्री, दक्षिण के मंत्री, पूरब के मंत्री, पश्चिम के मंत्री, दुबले मंत्री और मोटे मंत्री, लम्बे मंत्री और छोटे मंत्री, काले मंत्री और गोरे मंत्री और बीमार मंत्री । मन्त्रियों का एक ताँता बँधा हुआ था । जब सारा हाल भूतपूर्व मन्त्रियों से भर गया अलगूराम राय त्रिपाठी ने सेक्रेटरी की हैसियत से अपनी रिपोर्ट की । मन्त्रियों के क्लब के नियम व उद्देश्यों का बयान कि जो



मैं आपको बता चुका हूँ । इसके अतिरिक्त उमने हुकूमत के काम की  
 भी कड़ी आलोचना की जो हर मन्त्री, मन्त्री बनने से पहले और  
 मन्त्रीपद छिन जाने के बाद किया करता है । लेकिन अलगूरांम राय  
 की आलोचना विध्वंसक न थी । मुझे उसमें दो-तीन बातें बहुत दिल-  
 चस्प और ध्यान देने योग्य मालूम हुईं । एक तो उसने पंचवर्षीय  
 योजना की सुस्ताघोनी करते हुए बताया कि देश का और विदेशी  
 मुद्रा विनिमय का करोड़ों रुपया फौलाद के कारखाने ढालने में खर्च  
 किया जा रहा है । हालांकि हम बड़ी सरसता से कच्चा लोहा निकाल  
 कर बाहर के देशों को बेचकर वहाँ से ढगा-डलाया फौलाद हासिल  
 कर सकते हैं और उस फौलाद की मशीनें बना सकते हैं । इस तरह  
 मैं हम उस करोड़ों ब्रिक् अरबों रुपये की रकम बचा सकते हैं जो  
 यहाँ फौलाद के भिन्न-भिन्न कारखाने कायम करने के सिलसिले में  
 खर्च किये जा रही है । कृषि-सुधार के सिलसिले में भी उसने बहुत  
 दिलचस्प बात कही । कृषि-बिल के अमल हो जाने के बाद अलगू-  
 रांम राय ने भी एक हारे हुए आदमी की तरह अपना विषयम बदल  
 दिया था । अब वह यह न चाहता था कि जमीन किसानों में बाँट दी  
 जाये, न यह चाहता था कि जमीन जमींदारों में बाँट दी जाये, अब  
 वह सिर्फ यह चाहता था कि किसानों को जमींदारों में बाँध दिया  
 जाय ।

मैं खुशी से उछल पड़ा । उपकोह ! किस कदर अनोखा और  
 अद्भुत ख्याल है कृषि सुधार का । यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि  
 ऐसे मन्त्री को खलक कर दिया गया है । लेकिन खबराने की कोई  
 बात नहीं । हुकूमत की बहुत जल्दी अपनी गलती का अनुभव होगा  
 और वह इसे फिर मन्त्री बनने का मौका देगी ।

मैं अभी यही सोच रहा था कि सारा हाल तात्तियों से गुँज गया  
 माजूम हुआ । अलगूरांम राय का भाषण समाप्त हो चुका था और  
 अब मैकेंडरी के आग्रह पर श्री मुदगुदाचार्य स्टेज पर इस क्लब का उद्-  
 घाटन करनेके लिए तसरीफ से आये थे । श्री मुदगुदाचार्य को देखकर

न मालूम मेरे मन में क्यों हुदहुद या कॉलिंग चिड़िया की सूरत उभरने लगती है। हालाँकि इन दोनों पक्षियों का दूर-दूर तक ऐसे बुद्धिमान इन्सान से कोई सम्बन्ध नहीं है। श्री गुदगुदाचार्य ने स्टेज पर आकर दोनों हाथ जोड़ कर सबको नमस्कार किया। अपनी धोती का सिरा ठीक किया। अपने दाहिने हाथ को एक हवा में उछाल के कहा—“लेडीज़ एण्ड जेंटिलमैन।”

वह इसके आगे कुछ कहने न पाये थे कि क्लब का एक चपरासी जो अपने अच्छे ज़माने में अपने दफ्तर का सुपरिंटेंडेंट था यानि जय उसका चचा मंत्री था। दौड़ा-दौड़ा स्टेज पर आया और जल्दी से उसने कागज़ का एक रुक्का श्री गुदगुदाचार्य के हाथ में थमा दिया। उसका साँस फूला हुआ था और वह वेहद घबराया हुआ दिखाई देता था। श्री गुदगुदाचार्य ने बड़े संतोष से अपनी ऐनक को नाक पर सरकाते हुए उस कागज़ के पुर्जे को देखा, फिर मुस्कराकर बोले—“लेडीज़ एण्ड जेंटिलमैन, पूर्व इसके कि मैं अपना भाषण शुरू करूँ एक ज़रूरी घोषणा है। उसे सुन लीजिये। केंद्रीय मन्त्री-मण्डल में बड़ा महत्वपूर्ण रद्दोबदल होने वाला है। भिन्न-भिन्न विभागों में फेरफार के बाद इस बात का अनुमान है कि प्रधान मंत्री केन्द्रीय मन्त्रि-मण्डल में एक नये मन्त्री को शामिल करेंगे। आज सात बजे प्रधान मन्त्री की कोठी पर—”

लेकिन इसके आगे किसी ने श्री गुदगुदाचार्य की घोषणा को न सुना। तमाम भूतपूर्व मन्त्री अपनी कुसियों से उठ खड़े हुए और केंद्रिय हाल के दरवाजे की तरफ भागने लगे। वे एक दूसरे पर पिले पड़ते थे। हर मन्त्री यह चाहता था कि वह सबसे पहले हाल से बाहर निकल जाये। धक्कम-धक्का, धोंगा-मुश्ती का वह आलम था कि मछली मार्केट का दृश्य दिखाई देता था। कई मोटे-मोटे तोंदियल मन्त्री पाँव तले आके रोंदे जा चुके थे और ज़मीन पर पड़े चिल्ला रहे थे। और दया की प्रार्थना कर रहे थे।

“लेडीज़ एण्ड जेंटिलमैन !” दो तीन बार श्री गुदगुदाचार्य ने

चिन्मा के कहा—फिर यकायक उन्हें भी कुछ याद आया और वह भी स्टेज पर अपने भाषण का मसौदा फेंक कर, एक इतनी लम्बी छलांग मार कर जो इस उम्र के आदमी के लिए लगभग असंभव थी, हॉल के दरवाजे पर पहुँच गये और तौर की तरह तमाम मन्त्रियों के बीच से निकल गये ।

थोड़ी देर बाद मैंने देखा मन्त्रियों के क्लब में सन्नाटा था, कुर्तियाँ टूटी पड़ी थी, सोफे ओंधे थे । दो-तीन मन्त्री जमीन पर पड़े कराह रहे थे और अस्पताल की एम्बुलेंस का इन्तजार कर रहे थे और बरब के बाहर सड़क पर मन्त्रियों का जमपट था, जो दोनों हाथ खोर से झुलाता हुआ प्रधान मन्त्री की कोठी की तरफ दौड़ रहा था ।

सीजिये गोयल भी खरम हो गया, और आपके पीछे बैठा हुआ बलगूराम राय भी खाना खाके चला गया । खैर इसकी बात तो खरम ही थी, और यह कम्वस्त, इस वक्त यहाँ दावे में आ गया तो मुझे इसकी घटना याद आ गई, वरना वह घटना जो मैं आपको सुनाने वाला था—वह तो दूसरी ही है और बहुत महत्व की है । एक दिन की बात है कि मैं तपती दोपहर में इसी छावे की टीन की छत के नीचे बैठा हुआ—आय ! आन किधर चले ?—अरे विल तो देते जाइये ।

## बचनसिंह \*

लिंकिंग रोड के अड्डे पर तीन टैक्सियाँ खड़ी थीं।

मैं उनकी तरफ गौर से देखता हुआ आगे बढ़ता चला आ रहा था और अभी फैसला न कर पाया था कि किसमें बैठूँ कि इतने में एक आवाज आई, “इधर आओ जी, अपने बचनसिंह की टैक्सी में बैठो। उधर मुंह उठाये हुए कहाँ भागे जा रहे हो बादशाहो ?”

मैंने पलटकर देखा, टैक्सियों के अड्डे के बिल्कुल सामने ईरानी रेस्तराँ के बाहर एक दुबला-पतला तेज लहजे और शरीर आँखों वाला सरदार बचनसिंह मुझे अपनी टैक्सी से हाथ निकाले अपनी तरफ बुला रहा है और सफेद-सफेद दाँतों से मुंह खोले हुए मुस्करा रहा है।

बचनसिंह की सूरत जानी-पहचानी मालूम हुई। बाज सूरतें ऐसी हैं कि चाहे ज़िन्दगी में आपने उन्हें पहले कभी न देखीं हो, लेकिन पहली ही मुलाकात में ऐसा मालूम होता है मानो बरसों की मुलाकात है। मैं जल्दी से टैक्सी का पट खोलकर उसमें बैठ गया। मेरे बैठने से पहले बचनसिंह ने फ्लैग गिरा दिया था और मीटर चालू करके लिंकिंग रोड से घोडबन्दर रोड की तरफ रवाना हो चुका था।

“आप भूल गये मुझे को ? उस दिन आप मुझे भाण्डुप अपने घर से लेकर चिचपोकली आये थे ? कोई तीन महीने की बात है।”

मुझे मालूम था कि मैं भाण्डुप नहीं रहता और न कभी चिचपोकली जाता हूँ मगर मुझे कहना ही पड़ा, “आं-हाँ, याद आया, वहिये बचनसिंह जी मिजाज तो अच्छे हैं ?”

“बाह गुरु की कृपा है। मगर आप तो मुझे भूल ही गये थे और

किसी दूसरी टैक्सी में बैठने चाते थे”, बचनसिंह कुछ खफा होकर बोला, “मगर मैं तो अपने ग्राहकों को पहचानता हूँ। एक बार सूरत देख लूँ तो जिन्दगी-भर नहीं भूलता। याद है, आज से पाँच महीने पहले अगस्त की एक भोगती हुई रात में आपने कुलावे से एक लडकी उठायी थी, मिस लूनावाला उसका नाम था। रात के दो बजे मैं उसे आपकी मिस लूनावाला को, सड़ा पारसी के चौक में छोड़कर आया था, याद है ?”

अब मैं क्या कहता कि कुलावे से लडकी उठाने की मुझे हसरत ही रहों। इतने पैसे ही कभी जेब में न हुए और फिर मिस लूनावाला ? मेरी बीबी अगर कही सुन ले तो मार-मार कर मुझे जूतावाला बना दे। मगर बचनसिंह ने इस फर्राटे से गाड़ी घुमाकर एक ट्रक के करीब से निकाली कि मेरी साँस ऊपर-की-ऊपर और नीचे-की-नीचे रह गई।

कुछ क्षण तक चुप रहने के बाद मैंने हाँफते हुए सिसिमानी हँसी के साथ कहा, “क्या याददास्त है आपकी बचनसिंह जी, कुछ भूलते ही नहीं हो, मगर गाड़ी जरा धीमे चलाओ।”

‘भूलने के दिन तो बचनसिंह पैदा ही नहीं हुआ,’ बचनसिंह ने खुश होकर कहा और इम लुसी में गाड़ी की रफ्तार तेज कर दी। “और फिर वह चीख भी अच्छी थी,” बचनसिंह ने अपने हाँठों पर खान फेरते हुए कहा, “भुने हुए सीतर की तरह तस्ता रही होगी, क्या ?” कहकर बचनसिंह ने ऐनी घरीर निगाहों से मेरी तरफ देखा कि मैं सैंप गमा और टैक्सी पेट्रोल से जाने वाली लारी से टकराते-टकराते बची। बचनसिंह लारीवाले को गालियाँ देने लगा, “देख कर नहीं चमत है ये हरामजादे, अभी तेरे पेट्रोल में एक तीली • शाल के फूँक दूँगा, जाने किस अहमक ने तुझे लाइसेंस दे दिया है ?”

“मगर तुम तो खुद ही पीछे देख रहे थे, अपने ग्राहक से बातों में मग्नूल थे।” लारी ड्राइवर बोला, “वह तो मैंने एक्सीडेंट बचा लिया नहीं तो...”

मगर बचनसिंह ने पूरी बात नहीं सुनी, गाड़ी बढ़ाकर आगे ले

गया और जाते-जाते मुझसे कहने लगा, “देख लिया आपने ? ने लारी वाले कितने हरामी होते हैं । बेतहाशा तेज रफ्तार से गाड़ी चलाते हैं, न आगे देखते हैं न पीछे और कसूरवार हम गरीब टैक्सी ड्राइवरों को ठहराते हैं ।”

“वेशक वेशक, इसमें क्या शुबहा है ?” मैंने कमजोर लहजे में कहा । हालाँकि गलती उसी की थी लेकिन वचनसिंह को टोकने की हिम्मत मुझमें न थी ।

“मगर मैंने भी साले की तबियत साफ कर दी । ओ वच मोड़ तू बुड्डे ।” वचनसिंह ने एकदग ब्रेक लगाई, मगर फिर भी सामने से गुजरता हुआ बुड्डा उसकी टैक्सी से टकराते-टकराते बचा ।

वचनसिंह गाड़ी को रেস करते हुए बोला, “अगर मैं गाड़ी होशियारी से न चलाता तो यह बुड्डा तो अपने बाप के पास गया था, हा, हा, हा । कहाँ जाना है जी, आपको ?”

मेरा जी वहीं उतरने को चाह रहा था, मगर आस-पास कोई टैक्सी खाली न देखकर मुझे मजबूर होकर कहना पड़ा, “धोबी तालाव जाऊँगा, मगर गाड़ी ज़रा संभालकर चलाओ, वचनसिंहजी ।”

वचनसिंह को मेरी सलाह पसन्द नहीं आई, बोला, “आप भी कमाल करते हो बाबूजी, एहतियात तो हर टैक्सी ड्राइवर के लिये ज़रूरी है । एकसीडेन्ट हो गया तो आपका क्या जायगा, ज्यादा-से-ज्यादा एक टाँग टूट जायेगी । मगर मेरी तो टैक्सी टूट जायेगी और हज़ारों का नुकसान अलग होगा और लायसेंस अलग ज़ब्त होगा और रोज़गार से भी जायेंगे । अपने लिये तो बड़ी मुसीबत है । इसीलिये हमेशा टैक्सी बहुत संभालकर चलाता हूँ । ओहो, यह गुजराती सेठ का ड्राइवर बड़ा पाटेखाँ मालूम होता है । मेरी गाड़ी को आपके सामने, देखा आपने, ना, ना साफ कहिये, आपके सामने इसने ओवरटेक किया कि नहीं मेरी गाड़ी को ? मैं इसको ऐसे निकल जाने दूँगा साले को ? समझता क्या है वे तू, वचनसिंह से गाड़ी बढ़ाकर ले जायेगा ?”

यह कहकर बचनसिंह ने एम्मीलेटर पर जो पाँव रखा तो जम से आगे बढ़कर गुजराती सेठ की गाड़ी के साथ-साथ आ गया। अब दोनों गाड़ियाँ साथ-साथ चल रही थीं—बचनसिंह की टैंकरी और गुजराती सेठ की गाड़ी। और बचनसिंह के मुँह से फून मड़ रहे थे।

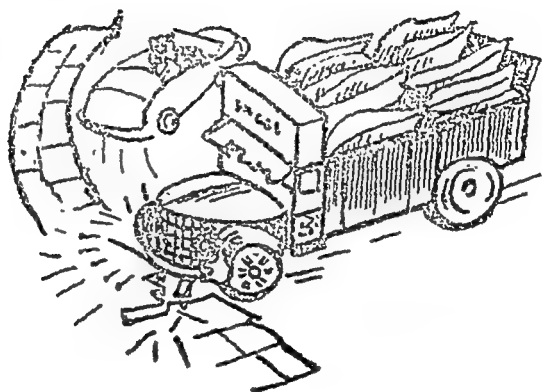
“क्यों वे मड़रासी ?” बचनसिंह गुजराती सेठ के ड्राइवर से कहने लगा, “तेरी फियट के मड़नाई में त्रिचनापल्ली मालू, राँग साइड से ओवरटेक करता है ?”

“क्या बकता है,” दक्षिण भारत का रहने वाला ड्राइवर भी लैश लाकर बोला, “राँग साइड से तुम ओवरटेक किया मेरी गाड़ी को दो बार, और दो बार हम चुप रहा, मगर हम भी ड्राइवर है कोई हज्जाम नहीं है। जासूसी लफड़ा करेगा तो तेरी मारिस का मुँह तीव्र के लुधियाना बना देगा।”

इसके बाद बचनसिंह ने निहायत नफीस पंजाबी में नोक पलक से दुस्त ऐसी माली दी जो मद्रासी ड्राइवर के दिल में घुसकर उसकी सात पुन्ती पर हमला कर गई। पंजाब में दूसरे ड्राइवर ने जो अपने मुँह की मसीनगन खोली तो दिल्ली से अमृतसर तक पूरी पंजाबी कौम का सफाया कर दिया। साथ-साथ दोनों ही गाड़ियों की रफ्तार भी तेज होती गई। बड़े मरगाकी से दायें बायें की गाड़ियों, सारियों, ट्रकों से बचते हुए ये दोनों ड्राइवर एक-दूसरे को गातियों देते साथ-साथ चलते रहे। दोनों गाड़ियों के बीच सिर्फ छः-सात इंच का फासना था। स्टीयरिंग-व्हील की एक जरा-सी गलत हरकत पर, पचास मील की रफ्तार पर चलने वाली गाड़ियाँ एक-दूसरे से टकरा सकती थीं।

उपर गुजराती सेठ का चेहरा फक का इपर मेरा दिव धक का और हम दोनों गानोस ने एक-दूसरे का चेहरा देख रहे थे। बंदी का चोर गुजर गया। बंदी की मस्जिद गुजर गई। दोनों गाड़ियाँ माहिम पीक पर छोड़ती हुई नाके के करीब होती चली गयीं। नाके के दिव्दुस करीब आकर सड़क के दो हिस्से हो जाते हैं, एक हिस्से

पर सिर्फ प्राइवेट गाड़ियाँ गुज़रने की इजाजत थी, दूसरे से लारियाँ, वसों और टैक्सियाँ गुज़रती थीं। मद्रासी ड्राइवर गालियाँ बकता हुआ अपने रास्ते पर चला गया।



बचनसिंह ने टैक्सी स्लो करते हुए मुझसे कहा, "साला भा गया देखा आपने?"

मैंने हँसने की कोशिश की लेकिन मेरे गले से एक ऐसी आवाज़ निकली जो सिर्फ मरने से पहले किसी आदमी के गले से निकल सकती है।

चेक नाके पर पुलिस के संतरी ने बचनसिंह से पूछा, "काय रे, बचनसिंह! क्या माल है तेरी गाड़ी में?"

"एक दर्जन बोटलें ठर्रे की डिक्की में रखी हैं," बचनसिंह कह-कहा मारकर बोला, "और एक नौ-टांक मेरे सेठ ने पी रखी है और दो नौ-टांक मैंने। यक़ीन न आये तो सूँघकर देख ले।"

संतरी जोर से हँसा, "जा, जा मसखरी करता है, मगर कभी तू पकड़ा जायेगा, बचनसिंह।"

हाथ हिलाकर संतरी ने रास्ता दे दिया। बचनसिंह फरटि से



गाड़ी निकाल कर माहिम बाजार में से आया और सीधा शिवाजी-पार्क जाने के बजाय खोदा गली में घुस गया ।

“इधर कहाँ जाता है ?” मैंने घबराकर पूछा ।

“बस एक मिनट का काम है यहाँ ।” बचनसिंह ने एक गंदे छपरे के करीब अपनी गाड़ी रोक कर उतरते हुए कहा ।

गाड़ी में उतरकर उसने दो बार हार्न बजाया । छपरे में से धनिमा-इन और पनलून पहने हुए सफेद वालों वाला एक बुढ़ा निकला । उसके गले में एक छोटी सी तलीय लटकी हुई थी ।

झिंझी खोलकर बचनसिंह ने उसके हाथ में भूरे रंग का एक बड़ा धैला थमाया । जब बुढ़े ईसाई ने उस धैले को अपने हाथ में लिया तो धैले के अन्दर से बोलचाल के टकराने की आवाज आई ।

“पूरी बारह हैं ।” बचनसिंह ने मुस्कराकर कहा ।

बुढ़े ईसाई ने अपनी जेब में हाथ डाल कर बड़ी राउदारी से उमे बचनसिंह के हाथ की तरफ बढ़ाया । दोनों हाथ एक-दूसरे से पुराने दोस्तों की तरह मगलगौर हुए, फिर बचनसिंह का हाथ जन्दी से उमकी जेब में घना गया और बुढ़े ईसाई का हाथ पनलून के बाहर ही रहा । जन्दी से बचनसिंह ने गाड़ी में बैठकर उसे स्टार्ट किया और खोदा गली से दर्जन लेन से होकर कैबिल रोड पर होकर हरी-निवास से शिवाजी पार्क के चौक पर आ गया । दस मिनट का रास्ता था जो उसने दो मिनट में तम किया होगा ।

इसके बाद वह मुझमें बोला, “कभी-कभी सब बोलने से बड़ा फायदा हो जाता है । वह सिपाही मेरे सब को झूठ समझा और गच्चा खा गया, हा, हा, हा ! किधर से चलूँ, खुदादाद स्कूल से या पोर्च-गोल चर्च में ?” फिर मेरे जवाब का इन्तजार किये बिना खुद ही बोला, “उधर दादर से जे० जे० अस्पताल तक बढ़ी गर्दी रहती है इसलिये पोर्चगोल चर्च से चलता हूँ, रास्ता भी सुना मिलेगा और—”

मैंने उसे टोक कर जरा सस्ती से कहा, “जिधर रास्ता सुना मिले उधर से चलो, मगर जरा समझ कर चलो ।”

“संभाल कर चलना तो जरूरी है, “बचनसिंह बड़ी संजीदगी से बोला, “और टैक्सी तो मैं ऐसी संभाल कर चलाता हूँ कि दूसरे ड्राइवर मेरा मजाक उड़ाते हैं। बोलते हैं, तू तो बिल्कुल घूँहे की तरह डरपोक है।”

मैंने दिल में सोचा अगर यह ड्राइवर घूँहा है तो शेरों की रफ्तार का क्या आलम होगा। मगर मैंने उससे कुछ नहीं कहा। बचनसिंह ज़रा संजीदा होकर चालीस की रफ्तार से टैक्सी चलाता रहा। इतिफाक से उसे रास्ते में कोई मोटर गाड़ी या लारी भी नहीं मिली जिसे वह ओवरटेक करने की कोशिश करता। उसने अपने दोनों हाथ कुछ देर के लिये स्टीयरिंग व्हील से उठा लिये और सामने के आइने को तिरछा करके उसमें से देखकर अपने दोनों हाथों से अपनी पगड़ी ठीक करने लगा। सामने से एक बड़ा ट्रक चला आ रहा था। करीब आ रहा था। करीब आ गया। बिल्कुल करीब आ गया।

अचानक मैंने चीख कर कहा, “अरे क्या करते हो? क्या करते हो?”

बचनसिंह ने बड़ी फुर्ती से व्हील घुमाया, ट्रक एक फुट के फासले पर दहाड़ता हुआ करीब से गुजर गया और सारी ज़मीन कांप उठी। मेरे चेहरे से पसीना फूट पड़ा। मैंने जेब से रुमाल निकाला और अपने चेहरे को साफ करने लगा।

बचनसिंह हँसकर बोला, और उसकी आवाज़ में थोड़ी हिकारत भी थी, “बाबूजी, आज मरना, कल मरना, फिर मरने से क्यों डरना? अगर आई होगी तो घर पर बैठे-बैठे मर जाओगे, नहीं तो यह टैक्सी तो क्या पहाड़ से कूद पड़ोगे तो भी बच जाओगे।” बचनसिंह ने यह कहकर गाड़ी की रफ्तार साठ मील कर दी और लहक-लहक कर गाने लगा—

“वंतो दा लक पतला”

मैंने दिल में सोचा सिर्फ वंतो की कमर पतली नहीं है, अपनी

किस्मत भी बिल्कुल पतली बल्कि न होने के बराबर दिखाई देनी है । किसी तरह इस दुर्बली ड्राइवर से जान बच जाये तो साईं दादा के चरणों में ग्यारह रुपये का चढ़ावा चढ़ाऊँगा ।



अचानक वचनसिंह ने गाड़ी की रफ्तार एकदम हल्की कर दी । हैरत का एक दूसरा झटका मुझे लगा । वह मेरी तरफ मुड़कर बोला, “आपने देखा ?”  
“क्या ?”

“वह ओल्ड मोबाइल जो पीछे रह गई उसमें ?”

“क्या था ?”

“था नहीं, थी ।”

“क्या थी ?” मैंने बिलकुल अनजान होकर पूछा । वैसे भी झटके खाते-खाते मेरे दिमाग में मौत के सिवा और किसी चीज का ख्याल बाकी न रह गया था ।

“लड़की ।” वचनसिंह ने मुझं खींच मारकर कहा, “देखिये, वह अब मुझे ओवरटेक करेगी, गौर से देखिये ।”

मैंने गौर से देखा, एक लड़की थी, एक गाड़ी थी, दोनों एक दूसरे में गड़गड़-मड़मड़ थे ।

“उम्दा माल है,” वचनसिंह ने खटखारा भरते हुए कहा, “नये मॉडल की शेवरलेट मालूम होती है ।”

“तुम गाड़ी के बारे में बात कर रहे हो” मैंने पूछा ।

“नहीं, मैं तो लड़की के बारे में बोलता हूँ,” वचनसिंह ने कहवहा

मारकर कहा । “मालूम होता है आपने ग़ौर से नहीं देखा । लीजिये, मैं फिर आपको दिखाता हूँ ।”

यह कह कर वह गाड़ी को रেস करके फिर आगे ले गया ।

अब उसकी गाड़ी लड़की की गाड़ी के साथ-साथ चल रही थी । लड़की ने एक क्षण के लिये सामने से निगाह उठाकर हमारी तरफ़ इस नखरे से देखा जैसे कोई बढ़िया नस्ल की पोमेरियन कुतिया गली के कुत्तों की तरफ़ देखती है फिर उसकी गाड़ी आगे निकल गई ।

“है न फ़र्स्ट क्लास ?” वचनसिंह ने मुझसे पूछा ।

“एकदम हाई क्लास,” मैंने हामी भरी ।

“इसके पीछे-पीछे चलें ?” वचनसिंह ने मुझे मशविरा दिया ।

“अरे नहीं भाई,” मैंने एकदम घबराकर कहा, “मुझे तो अभी स्माल-काजेज कोर्ट पहुँचना है, नहीं तो मकान मालिक कुर्की करा लेगा ।”

वचनसिंह ने अपनी घड़ी देखकर कहा, “अभी तो कोर्ट खुलने में चालीस मिनट हैं, जब तक तो हम इस लड़की का घर मालूम करके वापस बोरीबंदर पहुँच सकते हैं, हिम्मत कर जाओ बाबू ।”

“अरे नहीं भाई, तुम सीधे चलो इस वक्त,” मैंने विलकुल ज़िच होकर कहा, “तुम्हें लड़की की पड़ी है, यहाँ जान पंर वनी है । और देखो गाड़ी धीरे चलाओ, विलकुल धीरे, मैंने कड़े लहजे में कहा, “चाहे अदालत में पाँच-दस मिनट देर से पहुँचेंगे मगर पहुँच तो जायेंगे ।”

वचनसिंह को मेरी वुज़दिली पर बेहद कलक हुआ । धीरे से सर हिला कर बड़े अफ़सोस से बोला, “तुम्हारी मरजी सेठ, नहीं तो ऐसी लड़की बम्बई में तो अब नहीं मिलेगी । क्या स्ट्रीमलाइन बाड़ी है उसका, क्या पालिश है ? एक बार उठाकर गियर में डालो तो यहाँ से नारीमन प्वाइण्ट तक पेट्रोल के बिना चलती चली जाये ।”

“मुझे किसी लड़की का पीछा नहीं करना है, वचनसिंह,” मैंने झुंझलाकर कहा, “किसी तरह तुम मुझे वक्त पर स्माल काजेज कार्ट पहुँचा दो तो मैं तुम्हें दो रुपये इनाम दूंगा नहीं तो टैक्सी रोक कर यहीं मुझे छोड़ दो ।”

“साह्य आपका नमक खाया है जिसकी वार, ऐसे कैसे छोड़ूँगा आपको ?” बचनसिंह ने बड़े भरोसे के साथ मुँहसे कहा, “आपको रमाल काजेज कोटें और फिर कोटें से घर छोड़ के आयेगा मादुप में।”

“मैं मादुप में नहीं रहूँगा, मैं मादुप में नहीं रहूँगा। मेरी सात पुस्तों में आज तक कोई मादुप में नहीं रहा,” मैंने दान पीस कर कहा।

बचनसिंह ने एकदम मेरी तरफ से मुँह मोड़ लिया और गाड़ी की रस्नार सेज करके लड़कों की गाड़ी से आगे निरल गया और भायखला की तरफ जाते हुए उसने दजनों गाड़ियों, सारियों, दुर्कों को गर्द की तरह पीछे छोड़ दिया। एक बार भी उसने मुँहफर मुँहसे बात नहीं की। अब वह मकीनन मुँहसे नाराज था और मैं उससे। भायखला के करीब पहुँच कर मैंने टैक्सी स्टैंड की तरफ निगाह दोड़ाई, मगर मुझे वही टैक्सी नजर न आई नही तो मैं फौरन उतर कर दूसरी टैक्सी के सैला।

दशकिरमती से उम वक्त मुँह का बस्त था, यानि दफनरी और कारगानों और अदानतों में जाने का वक्त था। ऐसे सीरे पर दूसरी टैक्सी वहाँ से मिलेगी। मैं निरल होकर उसी टैक्सी के खदर जमडा-भुनता टेक लगाकर बँठ गया।

भायखला के चौक पर बड़ी भीड़ थी। हमारी टैक्सी के आगे गाड़ियाँ और सारियों का एक दूबूम था। एक तरफ ट्राम का पट्टा था, दूसरी तरफ घेरट की बस्तों की एक लंबी कतार थी। बीच में रास्ते की एक पक्की सी मुरग सी बस्त गर्द थी, इसकी पक्की कि उसमें मे निसी छोटी से छोटी टैक्सी का गुजरना भी मुश्किल था। कुछ देर तक तो बचनसिंह आगे वाली टैक्सियों और गाड़ियों को हानं पर हानं देता रहा और अपनी सीट पर बँठे कसमगाता रहा, फिर उसने एवदम बड़ी पुर्तों और चतुराई से गाड़ी जरा घुमा कर और सार्न से बाहर निकाल कर मुरग के अदर बाल दी।

मेरे दोनों तरफ दायें-बायें भीमबाज ट्रामे और बने सोचनाफ

## विल्ली और वज़ीर

श्री उपाध्याय का इरादा कदापि मन्त्री बनने का नहीं था। वह गली माहदरा में एक माघारण हुकूम थे। गुलकद, सिद्ध मकरध्वज, जहरमोहरा और मुस्ला बेचते थे, मगर किस्सा यह हुआ कि एक दफा चीफ मिनिस्टर के भानजे को, जिसका उसी गली में कोयलों का डिपो था, पेशिश हो गई और वह भी श्री उपाध्याय के इलाज से ठीक हो गया। उसने आतो ही बानों में चीफ मिनिस्टर से श्री उपाध्याय का इतिहास कर दिया। चीफ मिनिस्टर को बहुत दिनों से बवासीर की बीमारी थी और किसी तरह ठीक न होती थी। चीफ मिनिस्टर ने अपने भानजे के आग्रह पर श्री उपाध्याय को बुला भेजा। और उनका इलाज शुरू कर दिया। अदकिम्मती से चीफ मिनिस्टर की पुरानी बवासीर छः महीनों में ही उपाध्याय जी के इलाज से ठीक हो गयी—अब क्या था, श्री उपाध्याय चीफ मिनिस्टर के लानदानी हुकूम हो गए, और उनकी गिनती चीफ मिनिस्टर के अपने आदमियों में होने लगी। श्री उपाध्याय जी की हिकमत वह बली कि उन्हें एक साल के अरसे में ही अपने मरीजों को देखने के लिए एक गाड़ी खरीदनी पड़ी, घर से बंगले में रहना पड़ा, बंगले में टेलीफोन लगाना पड़ा, बैंक में एकाऊंट खोलना पड़ा, मतलब यह कि चीफ मिनिस्टर साहब की दोस्ती उनके लिए अच्छी-खामी मुमोबत बन गई।

लेकिन यह राजनीतिक आदमी आप तो जानते हैं एक दफा जिस के पीछे पड़ जायें, जिन्दगी भर उसे चैन नहीं देने देते। एक दिन उपाध्याय जी को चीफ मिनिस्टर ने बुलाया और कहा—“उपाध्याय-जी ! आप तो हमारे अपने ही आदमी हैं, आप जनता-मण्डल के सेन्नेटरी क्यों नहीं हो जाते।” उपाध्याय जी ने बहुत इन्कार किया, बोले

—“सरकार में आजकल माउल्लहम और द्राक्षासव को मिलाकर एक नई दवा बनाने में लगा हूँ, यों समझिये गोयां हिकमत में वैद्यक का पैवन्द लगा रहा हूँ, देखिये अब इस मिलावट से कौन सी नई चीज निकलती है।”

“कौन सी निकलेगी ?” चीफ मिनिस्टर ने दिलचस्पी लेते हुए पूछा।

“यह तो मुझे भी मालूम नहीं।”

इस पर चीफ मिनिस्टर ने और हैरान होकर पूछा—

“मगर यह दवा जो अभी आपको मालूम नहीं कि क्या होगी, किस मर्ज के लिए होगी ?”

‘यह भी मालूम नहीं।’ श्री उपाध्याय ने बड़ी स्पष्टता से कहा।

“दरअसल बात यह है सरकार कि अंग्रेजी तरीके के इलाज में पहले बीमारी ढूँढी जाती है, बाद में उसका इलाज हाथ लगता है और हम लोग पहले दवा बना लेते हैं और बाद में उसके लिए बीमारी ढूँढते हैं।”

“तो बिल्कुल ठीक है।” चीफ मिनिस्टर ने सर हिलाकर कहा—  
—“आप पहले जनता-मण्डल के सैक्रेटरी हो जाइये, बाद में आपके लिए काम ढूँढ लिया जायगा।”

चुनांचे श्री उपाध्याय जनता-मण्डल के सैक्रेटरी चुने गये, क्योंकि वह चीफ मिनिस्टर के अपने आदमी थे, फिर जब असेम्बली का चुनाव सर पर आ गया तो चीफ मिनिस्टर ने उन्हें फिर बुला भेजा और कहा—“उपाध्याय जी ! मण्डल के लोग आपके काम की बहुत तारीफ करते हैं।”

उपाध्याय जी ने हैरान होकर कहा—“मगर सरकार में तो मण्डल में एक बार भी नहीं बोला।”

“यही तो तारीफ के लायक बात है।” चीफ मिनिस्टर ने सिर हिला कर कहा—“देखिये आजकल इलेक्शन सर पर आ रहे हैं, मेरे ख्याल में आप असेम्बली के लिए अपने क्षेत्र से मेंबरी की दरखास्त

दे दीजिये । आप अपने आदमी हैं और—”

“मगर जनाब ।” श्री उपाध्याय ने बेहद परेशान होकर कहा—  
“मैं इन दिनों बहुत व्यस्त हूँ । आपके कामर्स डिपार्टमेंट के ग्वान्ट  
सेक्रेटरी श्री गरमा बरमानाथ का इलाज कर रहा हूँ ।”

“उन्हें क्या बीमारी है ?” चीफ मिनिस्टर ने दिलचस्पी लेते  
हुए पूछा ।

“बीमारी तो उन्हें यह है जो मैं उनकी स्त्री को भी नहीं बता  
सकता, अब आप खुद ही समझ जाइये ।”

चीफ मिनिस्टर की आँखों में एक शरारत की चमक प्रकट हुई,  
भेद-भरे साहजे में बोले—“तो आप उनका इलाज तो ठीक तरह से  
कर रहे हैं ना ?”

“इलाज तो कर रहा हूँ,” उपाध्याय जी रुक-रुक कर बोले—  
“लेकिन मुसीबत तो यह है कि समझ में नहीं आता कि क्या इलाज  
करूँ ? वास्तव में इस बीमारी का मही इलाज सखिया है, अब मेरी  
समझ में नहीं आता उन्हें कितना सखिया खिलाऊँ जिससे उनकी  
बीमारी तो मर जाय, लेकिन वह खुद न मरे । अगर सखिया कम  
देता हूँ तो उनकी बीमारी नहीं जाती, ज्यादा देता हूँ तो वह खुद मर  
जाते हैं ।”

“मरता जीना तो भगवान के हाथ में है,” चीफ मिनिस्टर ने  
जम्हाई लेते हुए कहा—“मगर इलेक्शन तो अपने हाथ में है न, इस-  
लिए थोड़ा बस देर न कीजिये, आप इसी इमेवशन में लड़े हो जाइये,  
आप अपने आदमी हैं और—”

शुनांचे श्री उपाध्याय जी असेम्बली के मेम्बर हो गये, फिर जब  
चीफ मिनिस्टर साहब अपना मन्त्री-मण्डल बनाने लगे, तो उन्हें अपने  
आदमियों की जरूरत पड़ी, इसलिए उन्होंने श्री उपाध्याय जी को  
स्वास्थ्य विभाग का मन्त्री बना दिया, और जंगल का महकमा भी  
उन्हीं के मुपुंद कर दिया कि हर तरह की जड़ी-बूटियों की शोध  
जगल में ही होती है । श्री उपाध्याय जी ने मन्त्री बनने से बहुत



इन्कार किया, एक तो उनकी घर्मपत्नी ग्यारह वच्चों के बाद गर्भवती थी, फिर उन दिनों वह एक रईस और कारखानेदार की आज्ञा पर सच्चे मोती और जवाहरात वाला सिद्ध मकरध्वज बनाने में व्यस्त थे, मगर चीफ मिनिस्टर साहब ने उनकी एक न मानी, बोले—“आप यह भी तो सोचिये, अब तक इनमें से कोई ऐसा नहीं है, जिसे कोई-न-कोई बीमारी न लगी हो, किसी का सिर हिलता है, तो कोई दमे का शिकार है, किसी को प्रमेह है तो कोई हार्ड-ब्लडप्रेसर से ग्रस्त है, इसलिए भी मन्त्री-मण्डल में किसी न किसी हकीम या वैद्य का होना जरूरी है, आप अपने आदमी हैं और—”

“वेशक ! वेशक ! !” चीफ मिनिस्टर के प्राइवेट सेक्रेटरी ने सर हिला कर कहा और श्री उपाध्याय जी मन्त्री बन गये ।

श्री उपाध्याय जी मन्त्री तो बन गये, लेकिन वह इस पद पर खुश न थे, एक तो उन्हें अंग्रेजी अर्थात् अपने देश की असली राष्ट्र-भाषा आती न थी, फिर वह हिन्दी-उर्दू भी कामचलाऊ जानते थे, इसलिए मन्त्रालय का सारा काम उन्होंने विभाग के प्रिंसिपल सेक्रेटरी को सौंप रखा था और खुद दूसरे मन्त्रियों के इलाज में लगे रहते थे । और सच बात तो है कि यह काम बजाय खुद इतना बढ़ा था कि उन्हें अपने विभाग की तरफ ध्यान देने की फुर्सत भी कहीं थी !

एक दिन दोपहर में आकाश का रंग गुलाबजल की तरह स्वच्छ था, और ज़मीन त्रिफला की तरह पीली और भूरे रंग की हो रही थी, श्री उपाध्याय अपनी खरल में अमल कुस्ता अम्बरी मरवाईवाला घोंट रहे थे ।

चीफ मिनिस्टर का प्राइवेट सेक्रेटरी उनके पास आया और उनके कान में कहने लगा—“अभी चलिये, चीफ मिनिस्टर साहब ने बुलाया है, वेहद जरूरी काम है ।”

“क्या उन्हें दिल का दौरा फिर पड़ गया ?” उपाध्याय जी चिंतित होकर बोल पड़े ।

“नहीं दौरा नहीं है।” प्राइवेट सेक्रेटरी जल्दी से बोला।

“तो फिर मैं कौन सी दवा अपने साथ ले चलूँ, जल्दी से बताइये उन्हें क्या बीमारी है?”

“कोई बीमारी नहीं है।” प्राइवेट सेक्रेटरी ने जग परेशान होकर कहा—“एक सरकारी काम है।”

“सरकारी काम है तो मेरे विभाग के प्रिंसिपल सेक्रेटरी श्री मितेन्द्रनाथ कुन्द्रा को बुला लीजिये, मेरे जाने की क्या जरूरत है, आप देखते नहीं मैं इस खरल में कौसी कीमती दवा घोट रहा हूँ।”

चीफ मिनिस्टर के प्राइवेट सेक्रेटरी ने बड़ी खुशामद की। ऑफिसर बड़ी मुश्किल से उपाध्याय जी जाने के लिए तैयार हुए।

जब उपाध्याय जी चीफ मिनिस्टर की कोठी पर पहुँचे तो वहाँ खुशामदियों की बड़ी भीड़ थी, बड़ी मुश्किल से चीफ मिनिस्टर साहब ने उनसे छुटकारा पाया और फिर श्री उपाध्याय की तरफ ध्यान देते हुए बोले—

“मन्त्री-मण्डल खतरे में है।”

“किसका?” उपाध्याय जी ने पूछा—“मेरा या आपका?”

“सबका!—और अगर इसी वक्त आपने मेरी मदद न की तो मैं मारा जाऊँगा।”

उपाध्याय जी ने हाथ जोड़ कर कहा—“मैं आपका अपना आदमी हूँ, किस दिन काम आऊँगा, उस कमबख्त का नाम आप बता दीजिये, जिसने आप को इस कदर परेशान कर रखा है मैं हर शहर के दो चार गुंडों को जानता हूँ, चाकू के एक ही बार से मैं—”

“नहीं, नहीं उपाध्याय जी आप! आप बात को समझे नहीं, यह गुंडों के किये से काम न होगा, यह काम तो आपको करना होगा।”

उपाध्याय जी काँप गये बोले—“यह काम तो मैंने आज तक कभी नहीं किया, आपके मुँह पर बड़े एहसान हैं, लेकिन किसी की जान लेना।”

‘सात आदमियों की बचत से भला क्या होगा ?’ चीफ मिनिस्टर साहब उदास होकर बोले—“और नीचे जाइये ।” चीफ मिनिस्टर ने मूझाव दिया । उपाध्याय जी सेक्रेटरी के घरातल से नीचे उतर कर सोचने लगे, बोले—

“तो यहूकमे के मुपरिन्टेन्डेन्ट आधे कर दीजिये, साठ के तीस रल्लिए ।”

“तीस की बचत से भी क्या होगा ? और नीचे जाइये, और नीचे—”

उपाध्याय जी और नीचे चले गये, कलकों तक पहुँचे तो चीफ मिनिस्टर का दिल जरा खुस हुआ और जब चपरासियों पर पहुँचे तो चीफ मिनिस्टर की बाँछें खिल गयी, उन्होंने फौरन उपाध्याय जी को गले लगा लिया, बोले—“अब आप कुछ-कुछ मन्त्री होते जा रहे हैं—बरअमल हम लोगों—हम मन्त्री लोगों को बहुत नीचे उतर कर आम लोगों की सतह पर सोचना चाहिए—आप एक काम कीजिये, मेरे ख्याल मे अब आपका एक दौरा भी हो जाय ।”

“दौरा । मुझे तो दिल का दौरा नहीं पड़ता, मैं तो विरहुरत ठीक हूँ ।”

“मेरा मतलब इलाके के दौरे से है । आप तीन ताल का एक चक्कर लगा लीजिए । तीन ताल हरा-भरा सुन्दर पहाड़ी स्थान है और आपने अब तक अपने इलाके का एक दौरा तक नहीं किया, इससे दूसरे मन्त्रियों को आपसे शिकायत पैदा हो चुकी है, लिहाजा आप तीन ताल का दौरा कर आइए और वहाँ बैठकर राष्ट्रीय बचन के सिलसिले में अपनी योजना ठीक तरह से मोध लीजिए और अगर हो सके तो वहाँ के स्थानीय विभागों को देखकर उनमें भी बचन कर दीजिए मैं आपको पूरा-पूरा अधिकार देता हूँ इस सम्बन्ध मे ।”

बातें करते-करते दोपहर से शाम हो गई । जब उपाध्याय जी चीफ मिनिस्टर की कोठी से बाहर निकले तो उन्होंने तीन ताल जाने का और वहाँ जाकर राष्ट्रीय बचत करने का पक्का इरादा कर

लिया था, वह वेहद खुश होकर चीफ मिनिस्टर के बंगले से बाहर निकले, उस वक्त शाम हो चुकी थी, पश्चिमी आकाश में क्षितिज का रंग लाल तरबूज के शर्वत जैसा था और कहीं-कहीं आसमान पर तारे झरवेरियों की तरह निकले हुए थे ।

जंगल विभाग के कंजरवेटर ठाकुर मनवन्तसिंह बड़े उम्दा शिकारी थे, पुराने अनुभवी थे, अंग्रेजों का जमाना देखे हुए थे, उन्होंने श्री उपाध्याय जी को हाथों-हाथ लिया । तीन ताल के बोट क्लब में उन्हें शानदार दावत दी, और उनकी तुलना भारत के प्राचीन वैद्यों —चरक और सुश्रुत से की । बाँदीपुर की महारानी ने उनके सम्मान में नृत्य का आयोजन किया और महाराजा गोलमालपुर उन्हें झील पर मछली का शिकार कराने ले गए । जब यह राउन्ड पूरा हो चुका और श्री उपाध्याय ने तीन ताल के जंगलात देखने चाहे तो ठाकुर मनवन्तसिंह ने राजा आफ बाँसीपुर से कह कर एक हाथी का बंदो-बस्त किया और ठाकुर मनवन्तसिंह श्री उपाध्याय को एक हफ्ते तक तीन ताल के तराई के जंगलों में लिए फिरे ठाकुर मनवन्तसिंह को शिकार का बहुत शौक था । अंग्रेजों के समय में चीफ कंजरवेटर को जंगल की सवारी के लिए एक हाथी मिलता था, लेकिन राष्ट्रीय सरकार के आने से हाथी वक्त में आ गया, इसका भी ठाकुर मनवन्तसिंह को बहुत गम था, मगर वह कुछ न कर सकते थे, दो-चार बार उन्होंने कोशिश की एक मर्तवा खुद चीफ मिनिस्टर से कहा, लेकिन हाथी बराबर घटाव में रहा ।

श्री उपाध्याय को अलवत्ता शिकार से कोई दिलचस्पी न थी, इसलिए जंगल में घूमते-घूमते जब ठाकुर मनवन्तसिंह, “हाय । वह चीता निकल गया ।” कह कर हाथ नलते तो श्री उपाध्याय जोर से चिल्ला पड़ते—“अरे वह झाड़ी आपने देखी ?”

“कौन-सी ?” ठाकुर मनवन्तसिंह अपनी निराशा पर काबू पाते हुए पूछते ।

“वह, जिस पर छोटे-छोटे सुनहरे रंग के फूल लगे हैं ।” इ

बाद थी उपाध्याय हाथी दकवाकर नीचे उतरते और जंगल से बूटी तोड़कर ठाकुर मनवन्तसिंह को दिखाते और कहते—“देखिए हम लोग इसे कटपुकड़ी कहते हैं, प्राकृत में इसे पुढीकट कहते हैं, संस्कृत में यह रपडकिकं है, यूनानी में यह नाग कलीसा है।

“अजब शमेसा है।” ठाकुर जी आश्चर्य से बोले—“मेरे ह्वाले से यह आमले का पेड़ है।”

“जी हाँ। वही तो है, मगर बड़े काम की चीज है। इसके फायदे—‘इसके बाद थी उपाध्याय जी ने हाथी पर चढ़कर जो आमले के फायदे गिनाने शुरू किये तो—“जो, जो, जो।” कह कर ठाकुर मनवन्तसिंह को कुछ नीचे सी जाने लगी, इतने में ठाकुर साहब ने झाड़ी के नीचे एक रीछ देखा और मारे खुशी के फिर अपनी रायफल सीधी की मकायक उपाध्याय जी ने जोरों से चिल्लाकर कहा—“हाथी रोकिये, हाथी रोकिये।” ठाकुर मनवन्तसिंह ने घात पीसकर अपनी रायफल नीचे कर ली और बोले—“नीचे तो रीछ है।”

उपाध्याय जी हँसकर बोले—“नहीं ठाकुर जी। नीचे एक बूटी है, बहुत ही उत्तम बूटी है, मुझे नजर आ गई है, देखिये वह—हाथी उतर कर आपको दिखाता हूँ।”

■ माग गया था। ठाकुर साहब ने दिन ही दिल में कुछ कहा होगा, लेकिन प्रकट में बड़ी सहनशीलता से हाथी दकवाया। उपाध्याय जी नीचे उतरे और एक सूखी झाड़ी के पास रुक गये और बोले—“देखिए यह है बहुमूल्य बूटी। यह मुकुमारल बूटी है, जिसे प्राकृत में मुखमारल कहते हैं, संस्कृत में इकमारल, यूनानी में चिकन खतूता। लाजवाब बूटी है, इसकी जड़ को तीन साल आमले के रस में भिगोकर दाय के रोगी को खिलाया जाय तो वह दो दिन में अच्छा हो जाय।”

ठाकुर मनवन्तसिंह के दिल में ख्याल हो आया कि तीन साल तक मानि जब तक यह बूटी आमले के रस में भिगनी रहेगी, उस समय—

—दाय का रोगी क्या करेगा? मगर भगिनियों से इस तरह के

सवाल करना शिष्टाचार के खिलाफ है, बल्कि सवाल न करना एक तरह की राष्ट्रीय वचन ही है ।

सात दिन के दौरे के बाद श्री उपाध्याय जी तराई के जंगलों से वापस आकर फिर तीन ताल में टिक गये, उनका स्वास्थ्य बेहतर हो गया था, इसके अलावा उन्होंने हल्दी, जीरा, आमला, बनफशा और इसी प्रकार की सौ डेढ़ सौ नायाब वूटियाँ इकट्ठी कर ली थीं । ठाकुर मनवंतसिंह का ट्रिप भी बुरा न था । स्वास्थ्य मन्त्री की बेजारोह टोक के बावजूद उन्होंने दो चीतों के शिकार कर लिये थे ।

श्री उपाध्याय ठाकुर मनवंतसिंह के काम से अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले—“ठाकुर साहब आपको यहां किसी प्रकार की तकलीफ तो नहीं है ?”

ठाकुर साहब बोले—“श्रीमान जी । सब ठीक है, सब अच्छा है, बस एक ही तकलीफ है, और वह यह कि तराई के जंगल तो खुद आपने अपनी आँखों से देख लिए हैं, इन जंगलों में जब घोड़े पर सवार होकर दौरे को जाता हूँ तो सख्त तकलीफ होती है ।”

“मगर मुझे तो कोई तकलीफ नहीं हुई ।” उपाध्याय जी आश्चर्य से बोले ।

“आप तो हाथी पर थे न ।” ठाकुर मनवंतसिंह ने समझाया ।

“तो आप भी हाथी पर जाइये, किसने आपको मना किया है ?” उपाध्याय जी फीरन बोले ।

“कभी-कभार अपने मेल-जोल से किसी राजा-महाराजा का हाथी माँग लेता हूँ, मगर आप जानते हैं वे लोग अपनी मर्जी के मालिक हैं, कभी देते हैं, कभी नहीं देते, हाथी तो दरअसल सरकारी होना चाहिए ।”

“आप बिल्कुल ठीक कहते हैं ।” उपाध्याय जी सिर हिलाकर बोले—“इतने घने जंगलों में हाथी के वगैर जाना सरकारी कर्मचारी को मौत के मुँह में ढकेलना है ।”

“बेशक । बेशक !” ठाकुर मनवंतसिंह अत्यन्त गम्भीर होकर

बोले ।

“हाथी कितने का आपेगा ?” आखिर उपाध्याय जी ने सोच-सोच कर पूछा ।

ठाकुर मनबन्तसिंह बोले—“अच्छा हाथी दस हजार में आपेगा, मगर इन दिनों इतकारु से राजा आफ बाँसीपुर का एक हाथी पाँच हजार में मिल रहा है ।”

“आप ले लीजिये, मैं मजूरी दे देता हूँ ।”

ठाकुर साहब कामजात तो पहले ही तैयार करके जेब में रखे हुये थे, फौरन आगे बढ़ा रिश्वे, खुद अपना कलम पेदा किया और एक दान में पाँच हजार का हाथी मजूर हो गया ।

फिर ऐसी दापतां, टी पार्टियों का सिलसिला चल निकला और कुछ इस तरह की व्यवस्था रही कि अगले दस रोज तक उपाध्याय जी को याद ही न रहा कि वह यहाँ किस सिलसिले में आये थे । यकायक रात को ध्यान आया कि वह तो यहाँ राष्ट्रीय बचत करने के मिलसिले में आये थे, सोचते ही उनके माथे से पसीने की धारें फूट पड़ीं क्योंकि आदमी सीधे थे और नेक दिल थे और नहीं जानते थे कि मरकारो काम कैसा मुश्किल होता है ? विवश होकर उन्होंने टेलीफोन पर ठाकुर साहब को बुलाया और उनसे कहा—कि वह अपने स्थानीय विभाग के कर्मचारियों की सूची लेकर आये, राष्ट्रीय बचत की जायेगी ।

रात को ठाकुर साहब अपने विभाग की सूची लेकर पहुँच गये । श्री उपाध्याय जी ने सूची देखकर कहा—“आप मुझे जवानी समझाइये ।”

“देखिये एक तो मैं हूँ” ठाकुर मनबन्तसिंह बोले—“आप मुझे निकाल सकते हैं ।”

उपाध्याय जी मुस्कुराकर बोले—“चलिये-चलिये, एक आदमी को निकाल कर क्या होगा ?”

“मेरे दो आदमी, मेरे दो डिपुटी कंजरेक्टर हैं, जो छः जगलों

को सँभालते हैं।”

“बाप रे। फिर उनके पास बहुत काम होगा, आगे चलिये मेरा मतलब नीचे चलिये।”

“नीचे चार असिस्टेंट डिपुटी कंजरवेटर।”

“और नीचे।”

“वारह रेंज आफिसर।”

“और नीचे।”

“अट्ठाईस फारेस्ट आफिसर।”

“और नीचे।”

“साठ फारेस्ट गार्ड हैं।”

“और नीचे।”

“सात रेकार्ड क्लर्क।”

“और नीचे।”

“विल्ली का दूध नौ रुपये।”





उपाध्याय जी यकायक रुक गये, बोले—“हाय यह बिल्ली का दूध नियमित ?”

ठाकुर मनवंतसिंह ने बड़ी गंभीरता से कहना शुरू किया—  
“दुर्ज़ूर, हमारे रेकाहें-आफिम में भूहे बहुत हैं, जो करीब के जंगल से आ जाते हैं और रेकाहें खरबाध करते रहते हैं, इसलिए सरकारी तौर पर हमने एक बिल्ली पाल रखी है, जो उन भूहों से हमारे रेकाहें को बचाती रहती है, उसके दूध पर नौ रुपये मासिक खर्च होते हैं, बस।”

उपाध्याय जी ने एकदम गुस्से से भड़क कर कहा—“मगर जब सात रेकाहें बलकें, रेकाहें को सुरक्षित रखने के लिए नियुक्त हैं तो फिर इन बिल्ली की क्या जरूरत है ? नौ रुपये ।—नौ रुपये ! !—हैरत है ठाकुर साहब । आप इतने बुद्धिमान और अनुभवी होकर यह नहीं देख सकते कि आपकी आँखों के सामने राष्ट्र की गाड़ी कपाई का कीमती घन एक जंगली बिल्ली को दूध पिलाने में खर्च हो रहा है ?”

ठाकुर साहब ने धर्म से सर झुका लिया । उपाध्याय जी निर्ण-यात्मक स्वर में बोले—“मैं हुक्म देता हूँ कि दस बिल्ली को आज ही से इसमिस कर दिया जाए ।”

“बहुत बेहतर ।” ठाकुर मनवंतसिंह फाइल को बन्द करते हुए बोले ।

यकायक दरवाजे के करीब से एक आवाज़ आई और उपाध्याय जी अपनी कुर्सी से उछल पड़े—“म्याऊँ” दरवाजे पर एक बिल्ली लड़ी थी और आश्चर्यचकित नेत्रों से मन्थी महोदय को देख रही थी ।

## पत्नी-प्रेम

मान्यवर सम्पादक जी !

क्षमा चाहता हूँ कि इस बार आपके दीपावली अंक के लिये लेख न भेज सका । बात यह हुई कि जब पहली बार आपका पत्र आया, जिसमें आपने लिखा था कि इस वर्ष आपने अपने कुछ पुराने लिखने वालों को एक ही विषय पर लेख लिखने के लिये राजी किया है । और वह विषय है, 'पत्नी अपने पति की दृष्टि में' तो मुझे सहसा हँसी आ गई । संयोग से मेरी पत्नी भी उस समय मेरी कुर्सी के पीछे खड़ी मेरे पत्रों की निगरानी कर रही थी । क्योंकि मुझे डाक से लड़कियों के बहुधा पत्र आते रहते हैं, इसलिये पत्नी द्वारा पत्रों की देख-भाल से मेरे लिये जान बचानी मुश्किल हो जाती है । खैर, वह एक अलग विषय है । उस पर कभी अवकाश मिलने पर बात होगी । इस समय तो मैं आपको यह बता रहा था कि आपका पत्र पढ़कर मुझे सहसा हँसी आ गई । तो मेरी पत्नी ने पूछा,

“क्यों हँसे ?”

मैंने कहा, “यह एक सम्पादक महाशय हैं जो पत्नी पर पति की दृष्टि से लेख मांगते हैं ।”

किसकी पत्नी पर किसके पति की दृष्टि से लेख मांगते हैं ?” उसने तुरंत पूछा ।

मैंने कहा, “यदि किसी दूसरे की पत्नी पर लेख मांगा होता—”

“जब तो तुम तुरंत लिख देते ।” वह बीच ही में बात काट कर बोली, “जरा ठहरो । मुन्ना रो रहा है । मैं उसको दो तमाचे लगाकर धभी आकर तुमसे बात करती हूँ ।”

जब वह वापस आई तो मैंने कुर्सी जरा परे खिसका ली। वह बोली, “हाँ अब बताओ ?”

मैंने कहा, “वास्तव में मुझे तुम पर लेख लिखना है, अपने दृष्टिकोण से। इसलिये मैं हँस रहा था कि भलेमानस सपादक महोदय इतना भी नहीं जानते कि विवाह के पश्चात् पति का दृष्टिकोण भी नहीं हो जाता है जो पत्नी का होता है। फिर वह बेबारा जो कुछ भी देखता है, अनुभव करता है, बात करता है, याता है, जाता है, खाता है, पीता है, पनता है, बैठ जाता है, बैठ कर फिर घसने लगता है यह सब कुछ उसकी पत्नी के दृष्टिकोण से होता है। भलबस्ता विवाह के पश्चात् प्रायः समाप्त हो जाता है। केवल दृष्टिकोण रह जाता है, कुछ समय के बाद दृष्टि भी खली जाती है और केवल कोण रह जाता है।”

मेरी पत्नी ने बड़ी गंभीरता से पूछा, “क्या यह सपादक महोदय कुंवारे हैं ?”

मैंने आश्चर्य से पूछा, “तुमने कैसे जाना ?”

उसने मेरे प्रश्न का उत्तर न दिया। बोली, “शचन मूरत कैसी है ?”

“देखने में तो अच्छा है। परन्तु—।”

“कमाता क्या है ?”—वह मेरी बात अनगुनी करके बोली।

“तीन सौ रुपये मिलते हैं।

“तो बहुत हुए। तुमने तो किसी महीने मुझे दार्द तीन सौ रुपये साके नहीं दिये। तुम अपनी सड़की के विवाह की बात उससे क्यों नहीं करते हो ?”

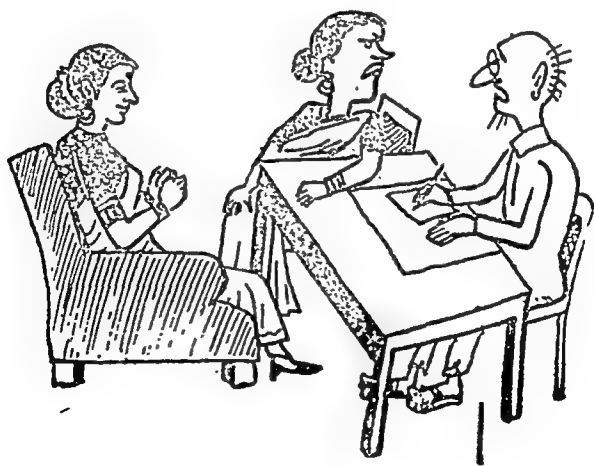
“नहीं मानस।” मैंने विस्मयपूर्वक कहा, “वह सेल माँग रहा है। मैं उसे अपनी सड़की दे दूँ। इस तरह से तो वह साल में तीन-तीन बार विघेदांक निकालेगा।”

“मजाक मत करो” वह गुस्से से बोली, “धर में जवान-जहान सड़की कुंवारी बँठी है और तुम्हें उसकी सुष नहीं है। जब देखो देखार

कलम चलाया करते हो। मेरे तो भाग्य ही फूट गये हैं।” वह अपने आँसू पोछते हुए मेरे कमरे से बाहर चली गई।

दो तीन दिन तक मेरा मूड विगड़ा रहा। कई बार आपका लेख लिखने को बैठा परन्तु कलम चली ही नहीं। चौथे दिन आपकी सहायक संपादिका मुझसे लेख माँगने आ गई। मेरी समझ में यह बात नहीं आती है कि जब आप एक नौजवान और सुंदर लड़की को सहायक संपादिका रखते हैं तो उसे विवाहित लेखकों के घर क्यों भेजते हैं? आपकी असिस्टेंट ने गहरे ऊदे रंग की कंजीवरम की बड़िया साड़ी पहन रखी थी। हाथ में शांतिनिकेतन का चमड़े का बैग था। कानों में पुखराज के बुंदे थे। आप उसको वेतन क्या देते हैं?

मैंने लेख तो लिखा नहीं था, इसलिये वह बहुत समय तक मेरे पास बैठी रही और मैं बहुत देर तक उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसके भाग्य की लकीरें देखता रहा। आपको शायद मालूम नहीं है, मैं बहुत अच्छा ज्योतिषी हूँ और लड़कियों का हाथ तो बहुत अच्छा देखता हूँ।



थोड़े समय बैठकर वह चली गई। इसी बीच मेरी पत्नी ने पर्दे के पीछे से तीन-चार बार झाँक भी लिया था। जब वह चली गई तो उसने पूछा—“वह कौन थी? क्या थी? किस नियो आई थी?”

मैंने कहा, सहक्री थी, सहायक सपादिका थी, वह लेख भाँपने आई थी।”

“तुमने लिख कर दे दिया?”

“लिखा ही नहीं था, क्या देना?”

“हाँ, हाँ। तुम मुझ पर क्यों लिखोगे?” वह झल्लाकर बोली, “मैं तुम्हारी कौन हूँ। तुम बाहर की जाने कौसी-कौसी गई-गुजरी स्त्रियों पर लिखते रहते हो, परन्तु घर की स्त्री पर, अपनी पत्नी पर, तुमसे क्यों लेख लिखा जायगा? मैं सब समझती हूँ, आने दो उस घुड़स को दुबारा। मैं उसकी चुटिया न काट के फेंक दूँ।”

वह जोर-जोर से रोने लगी। मैंने अपनी कुर्सी से उठकर उसे प्यार किया, बहलाया, पुकारा, मनाया। बड़ी मुश्किल से उसने अपने आँगू रोके। उन्हें पोछते-पोछते बोली—

‘क्यों तुम मुझसे प्यार करते हो न?’

“ससार में सबसे ज्यादा।”

“मुझ पर लेख लिखोगे न?”

“अवश्य।”

“अच्छा-सा लेख?”

“बहुत बढ़िया लिखूँगा।”

अब वह आँगुओं के बीच मुस्करा दी। उनकी आँखें खुसी में झमझमने लगी। बोली—

“मेरा एक चित्र भी छाप देना।”

“चित्र?”

“क्यों?” वह एकदम भड़क कर बोली “क्या मैं तुम्हें अच्छी नहीं लगती हूँ?”

“बहुत अच्छी लगती हो डारलिंग।”

“तो फिर ?”

“बहुत अच्छा, चित्र भी छप जायेगा ।” मैंने धीरे से कहा ।

“तो चित्र खिचवाने कब चलोगे ?”

“आज ही चलूंगा ।”

वह बहुत प्रसन्न हुई । फिर सहसा उदास हो गई । बोली, “लेकिन मेरे पास तो कोई साड़ी ही नहीं है ।”

मैंने कहा—“अभी पिछले सप्ताह ।”

वह बोली, “वह तो पिछले सप्ताह की है । नई तो नहीं है ।”

“वेशक नई तो नहीं है” मैंने स्वीकार किया ।

वह बोली—“मैं नई साड़ी में चित्र खिचवाऊंगी ।”

मैंने उसे टालने के अभिप्राय से कहा, “इतना टन्टा क्यों करती हो ? वह अपना पुराना चित्र भेज दो न, जो बनारसी साड़ी में है ।”

“वाह । वह तो विवाह का चित्र है । वाईस वर्ष हो गये । तुम भी क्या बात करते हो ?”

मैंने कहा “अच्छा तो बाजार से साढ़े सत्रह रुपए की वायल की साड़ी ले लेंगे । आजकल फूलदार वायल की बहुत बढ़िया साड़ियाँ आई हैं ।”

वह चीख कर बोली, “मैं वायल नहीं लूंगी । मैं तो कंजीवरम की साड़ी लूंगी । वैसे ऊदे रंग की जैसी उस कलमुंही ने पहन रखी थी ।”

“कंजीवरम की साड़ी ?”—मेरा हृदय अंदर ही अंदर बैठने लगा । घटिया से घटिया कंजीवरम भी अस्सी-नब्बे से कम नहीं आती है ।

“हाँ कंजीवरम की साड़ी लूंगी और शांतिनिकेतन वाला वही बैग जो उस छिनाल ने ले रखा था । और वैसे ही सैंडिल और वैसे ही प्लाऊज । और कान के वैसे ही बूंदे । और मैं टैक्सी में बैठकर चित्र खिचवाने जाऊँगी । अभी से कहे देती हूँ । वस मैं नहीं जाऊँगी । अभी से कहे देती हूँ । नहीं तो मेरे सारे कपड़े खराब हो जायेंगे, हाँ !”

इस घटना के तीन-चार दिन के बाद आपकी सहायक सपादिका एक नई पोशाक पहन कर मेरे घर आई, तो मेरी पत्नी ने कह दिया कि मैं घर पर नहीं हूँ। उसके तीन-चार दिन बाद जब वह फिर आई तो मैं पूना गया हुआ था। उसके बाद अहमदाबाद गया था, फिर नासिक गया था। उसके बाद वह नहीं आई। उसने सोचा होगा—नासिक जाके कौन छोड़ता है? तीर्थघाम है जो।

लेख तो मैं लिख नहीं सका। पत्नी का पित्र आपको भेज रहा हूँ। विज्ञापनों के किसी पृष्ठ पर छाप दीजियेगा। साथ ही बिल भी भेज रहा हूँ। विवरण यह है—

१—कजरीबरम की साड़ी	—	एक सौ पच्चीस रुपये
२—पेटीकोट सिल्क	—	इक्कीस रुपये
३—सैडिंगा	—	साढ़े पंद्रह रुपये
४—ध्वाऊज : बंगलोर आटे	—	अट्ठारह रुपये, दस आने
५—बुन्दे	—	एक सौ पैंतीस रुपये
६—टैक्सी	—	नी रुपये नी नये पैने
७—सिनेमा	—	छ रुपये
८—दही बड़े की चाट	—	डेढ़ रुपये
कुल टोटल	—	तीन सौ इक्कीस रुपये- दस आने-नी नये पैने

बिल की अदायगी तुरत होनी चाहिये। क्योंकि मैंने ये रुपये एक पठान से कर्ज लिये हैं, वरना आपको मेरी भरहम-पट्टी का खर्चा भी देना पड़ेगा। इसलिये बिल तुरत भिजवा दीजिये और भविष्य में लेख मांगते समय लेखक की जेब का ह्याल रखिये।

केवल आपका  
—कृष्णचन्द्र

## हम तो मोहब्बत करेगा

शुरू से ही मुझे दो चीजें बहुत पसंद हैं, सुन्दर जूते और सुन्दर स्त्रियाँ। इन दोनों में ऐसा कौन-सा मनोवैज्ञानिक संबंध है कि यह दोनों चीजें मेरे मस्तिष्क में इकट्ठी आती हैं, यह तो मैं नहीं कह सकता, इतना जानता हूँ कि अगर मेरे पाँव में खूबसूरत जूते न हों तो मुझे हरदम एक हीनता का अनुभव-सा होता है, और यदि मेरी वगल में खूबसूरत औरत न बैठे हो तो मुझे अपने चारों तरफ की दुनियाँ अंधेरी-सी मालूम होने लगती है।

लेकिन यह तो कोई जरूरी नहीं है कि जो चीज आपको पसंद हो वह आपको मिल भी जाये। बहुत से लोगों को हवाई जहाज में यात्रा करना पसन्द होता है लेकिन जिन्दगी भर वे हवाई जहाज में यात्रा नहीं कर सकते। बहुत से लोगों को हीरे की अंगूठी पहनने का शौक होता है लेकिन उन्हें चाँदी का एक छल्ला तक नसीब नहीं होता। इसी तरह बहुत से लोग पाँव में जूता पहनना चाहते हैं, लेकिन वह जूता पड़ता उनके सर पर है। इसी का नाम दुनिया है और मैं इसी दुनिया में रहता हूँ और इसी वजह से अपनी मनचाही चीज कभी हासिल नहीं कर सकता।

लेकिन हासिल न करने पर भी पसंद तो अपनी जगह पर रहती है। और इसके लिये मनुष्य कोशिश भी करता है और यही कोशिश मुझे एक बार खींचकर श्री मदनगोपाल के घर ले गई। श्री मदनगोपाल अवेड़ अवस्था के अंडर-सेक्रेटरी हैं। बारह-सी रुपया तनत्वाह पाते हैं—पचास वर्ष की आयु होने को आई, लेकिन अभी तक शादी नहीं की इसीलिए हमेशा खूबसूरत जूते पहनते हैं और खूबसूरत



औरत के संपर्क में रहते हैं। उनका घर खूँक मेंरी गली में है और उनकी छोटी-सी आस्टिन गाड़ी अक्सर मेरे घर के पास खड़ी रहती है इसीलिए मुझे उनकी रंगीन-मिजाजी को देखने का तर्जुबा भी है और बहुत पास से है।

एक दिन मैं हिम्मत करके इतवार के दिन उनके घर चला ही गया और उनसे अपनी विपदा कह डाली। उन्होंने बड़े ध्यान में मेरी बात को सुना, फिर सोच-सोचकर बोले—

“मेरे श्याल से आपको प्रेम करना चाहिए।”

“जुते से?”

“नहीं औरत से,” वह मुस्करा कर बोले—“किसी भी सुन्दर औरत से प्रेम करना चाहिए।”

“मगर हमारे मुहल्ले में तो कोई गूबगूरत औरत है नहीं।”

“आप समझें नहीं।” भदनगोपाल जी मुझे समझाने हुए बोले—“जब आप किसी औरत से प्रेम करने लगेंगे, फिर वही औरत आपको सुन्दर मानूम होने लगेगी।”

“मगर फिर इन जूतों का क्या होगा?”

वह बोले, “उसकी किफ़ न कीजिएगा—औरत के आने से जूते खुद-ब-खुद धा जाते हैं।”

यह बात भी ठीक थी, लेकिन आज तक किसी ने मुझे समझाई नहीं थी। अब भदनगोपाल जी ने मुझे बताया तो मेरी समझ में आया और मैंने उन्हें उन्ताद मान लिया। दूसरे ही दिन मैं एक मूढ़-गौर पठान से एक-नौ दसवा कजें लेकर आया। थोड़ी-सी मिठाई खरीदी, थोड़े-से फूल बनाये, यह सब-कुछ उनके घरणों में रखकर बोला—

“आज मुझे अपना शायिद बना भीजिए और मुझे प्रेम करना सिखा दीजिए।”

भदनगोपाल जी ने मेरी भेंट स्वीकार कर ली, मेरे सर पर बड़े इपापूर्वक हाथ फेरकर बोले—“बेटा, प्रेम भी एक वंजा है, जैसे

लोहार का एक पेशा है, मोटर मैकेनिक का एक पेशा है—प्रेम भी एक विद्या है, और प्रत्येक विद्या की दो डालें होती हैं : एक थ्योरी, दूसरी तजुर्बा । विद्या उस समय तक सम्पूर्ण नहीं होती जब तक मनुष्य उसकी थ्योरी न समझ ले और बाद में तजुर्बों से उसे परख न ले ।”

“इसीलिए तो मैं आपके पास आया हूँ गुरुदेव । मुझे प्रेम का ज्ञान दीजिए ।”

“सुनो ।” मदनगोपाल जी बड़ी गंभीरता से बोले—“प्रेम करने की दो तरकीबें हैं, एक तो यह कि आपके पास पैसा हो तो प्रेम की बहुत सी कठिनाइयाँ अपने-आप हल हो जाती हैं—क्योंकि इस दुनिया में जितनी सुन्दर स्त्रियाँ हैं, बहुत ही कोमल और नाजुक हैं । और सुन्दर वस्तुओं का अनुभव खास तौर पर प्रकृति ने उनके मन में समा दिया है । प्रत्येक सुन्दर स्त्री सुन्दर वस्त्रों तथा वस्तुओं को पसंद करती है, जैसे जड़ाऊ सोने का हार—बैडिलैक की सुन्दर गाड़ी, उम्दा सजा-सजाया सुन्दर ड्राइंग रूम, सोने के तारवाली साड़ियाँ—अगर आप स्त्री को यह सुन्दरता दे सकें तो वह बहुत जल्दी आपकी हो जाएगी ।”

“मदनगोपाल, जी” मैंने बड़ी निराशा के साथ कहा, “मैं एक गरीब लेखक हूँ । महीने में सौ-पचास रुपया मुझे पत्रिकाओं में लेख लिखकर मिल जाते हैं—इसके अलावा मैं एक अखबार का सहकारी संपादक भी हूँ । एक-सौ-बीस रुपए मुझे वहाँ से मिलते हैं, इस पर मेरी बूढ़ी माँ है, तीन कुंवारी बहनें हैं, दो विधवा भौसियाँ हैं,—जिनके सात नन्हें-नन्हें बालक हैं—कुछ समझ में नहीं आता । एक साड़ी तक तो खरीद नहीं सकता, मोटर गाड़ी कहाँ से खरीदूंगा ?”

मदनगोपाल जी ने धीरे से सोच-सोचकर सर हिलाया, फिर बड़े गंभीर स्वर में बोले, “तब तो तुम्हारी तरकीब ठीक रहेगी ।”

“वह क्या है ?”

“इसे प्रेम की दूसरी तरकीब कहते हैं । जन-साधारण की परि-  
में इसे बिना-पैसे-का प्रेम कहा जाता है—लेकिन इसमें बड़े

अभ्यास की आवश्यकता है और बराबर तजुर्बा करते रहने की जरूरत है।”

“मैं दिन रात मेहनत करने के लिए तैयार हूँ। आप तरकीब तो बताइए।”

“इस तरकीब की ध्योरी यह है कि स्त्रियाँ सुन्दर आभूषणों, सुन्दर स्वभाव रखने वाले मर्दों को भी पसंद करती हैं। इसके अलावा यदि वह पुरुष खुद भी सुन्दर हो तो क्या कहना? मगर मैं देख रहा हूँ कि आपका साँवला चेहरा, चेचक के दाग, गजा मिर और ठिगना कद इस सिलसिले में आपके लिये बहुत सी कठिनाइयाँ पैदा कर देंगे।”

मैंने कहा—“मैं किसी ठिगनो कदवाली स्त्री से प्रेम कर लूँगा। मगर आप तरकीब तो बताइए?”

मिस्टर मदनमोपाल ने अपनी आँखें बंद कर ली, कुछ मिनट तक वे निस्सी गहरे ध्यान में डूबे रहे। जब उन्होंने आँखें खोलीं तब उनके चेहरे पर मुस्कराहट पैदा हो गई थी। प्रसन्न होकर बोले—“तरकीब समझ में आ गई है, मेरे ध्यान में आप मिस बिमला से प्रेम कर बीजिए।”

“वह जो कालेज में पढ़ती है और बेहद नफासत-पसंद है।”

“जो हाँ, आपने गौर नहीं किया होगा, वह उम्दा मुसबूरी भी प्रेमी है। वह पेरिस की उम्दा से उम्दा मुसबूरी इस्तेमाल करती है। मगर मैं जानता हूँ उसकी मनपसंद मुसबूरी क्या है—ईबनिंग-इन-पेरिस। इस सीट पर तो वह जान देती है। आप ऐसा बीजिए कि बल बाजार से वही सीट लाइए, उसे अपने कमाल पर लगाइए और कमाल का जेब में रखकर गली के मुककड़ पर उसका इन्डार कीजिए। जब यह कालेज जाने के लिए गली से निकले तो आप उसकी तरफ देगकर मुसबूराइए; हो सकता है यह न मुसबूराए, बहरहाल आप उसकी परवाह न कीजिए। आप मुसबूराकर उनके पाय से निकल जाइए और आगे निरल कर जाइए। कुछ बंदम आये धसकर अपना

रूमाल जेब से निकाल कर जमीन पर गिरा दीजिए। इस तरह गिरा-  
 इए जैसे आपने जान-बूझकर रूमाल नहीं गिराया, बल्कि... खुद गिरा  
 है। रूमाल को गिरता देखकर मिस विमला यकीनन आपका रूमाल  
 उठा लेगी, और सुगंध उसके नथुनों में पहुँचेगी। आम जरा ठिठक  
 कर खड़े हो जाइए—वह आपको आवाज देगी, 'मुड़कर देखिए तो,  
 आपका रूमाल... ले लीजिए'। नफासत-पसंद भद्र महिला जरूर आपसे  
 प्रश्न करेगी—क्या आपको भी इवनिंग इन पैरिस पसंद है? इस पर  
 खुशबुओं पर बहस चल निकलेगी और रूमाल की खुशबू से बढ़ते-  
 बढ़ते मामला दिल की खुशबू तक पहुँच जाएगा।”

मैंने खुशी से उछलकर मदनगोपाल जी का हाथ पकड़ लिया और  
 उसे धूमते हुए बोला—“वाह-वाह, उस्ताद—क्या तरकीब बताई है,  
 मैं कल सुबह ही इस पर अमल करूँगा।”

“और कल शाम ही को मुझे इसकी रिपोर्ट दे देना, फिर मैं  
 तुम्हें आगे की तरकीब बताऊँगा।”

दूसरे दिन शाम को जब मैं मदनगोपाल जी के घर पहुँचा, तो  
 उन्होंने मेरे चेहरे ही से अन्दाज़ा लगा लिया कि कहीं पर कोई-न-कोई  
 गड़बड़ है। मेरे अन्दर आते ही उन्होंने पूछा—

‘क्या हुआ? मुस्कुराना भूल गये थे?’

“जी नहीं, मुस्कुराया तो था—मगर मालूम नहीं क्या हुआ।  
 संभवतः कुछ ऐसी शिक्षकती हुई रोनी-सी मुस्कराहट होगी कि उसे  
 देखकर मिस विमला को गुस्सा आ गया। उन्होंने नफरत से मुँह फेर  
 लिया और जल्दी-जल्दी आगे निकल गयीं।”

“मूर्ख, मैंने तुम्हें आगे निकल जाने को कहा था।”

“सुनिये तो, वह इतने तेज-तेज कदम उठाने लगीं कि मुझे उनका  
 पीछा करना दुश्वार हो गया। खैर, साहब, जिन्दगी में मैं भी इस  
 प्रकार तेज कदम को चला था? किसी न किसी तरह भाग-दौड़कर  
 उनके सामने से निकल गया और फिर बड़ी होशियारी से मैंने अपना  
 रूमाल भी जमीन पर गिरा दिया और उन्होंने रूमाल को गिरते देख-

कर उसे उठा भी लिया !”

“शाबाश !” मदनगोपाल जी मेरी पीठ ठीककर बोले  
“शाबाश !”

“सुनिये तो, उसके बाद—उन्होंने मेरे रुमाल को एक पत भर के लिए देला और जल्दी से मुँह बनाकर उसे जोर से पास की गंदी नाली में फेंक दिया !”

“ऐ—यह क्यों ? तुमने खुशबू नहीं लगाई थी ?”

“खुशबू तो लगाई थी, जनाब, मगर दरअसल मुझ में यह बुरी आदत है कि मैं रुमाल में ही धूंकटा हूँ। और उसी में अपना बलगम साफ करता हूँ। मिस बिमला के हाथ में मेरा बलगम लग गया था—उस पर उन्होंने मुझे गालियाँ सुनाई—गधा, भूख, बदनमीज ! और जाने क्या-क्या कहा, मैं तो वहाँ से भाग आया।”

मदनगोपाल ने अपना भाचा पीठ तिया। “मुझे क्या भासूम था कि तुम अपने गन्दे रुमाल में खुशबू लगाओगे। अनाड़ी हो न या खिर—नर, अब क्या हो सकता है ? मिस बिमला तो तुम्हारे हाथ से गई—अब तुम जिन्दगी भर उससे प्रेम नहीं कर सकते।”

मैंने मदनगोपाल जी के पैर पकड़ लिये।

“नहीं, ऐसा मत कीजिये, मैं तो प्रेम करूँगा, भगवान के लिये मेरी हालत पर रहम कीजिए, मुझे प्रेम करना सिखा दीजिये।”

मदनगोपालजी ने जब मुझे इस तरह गिड़गिड़ाते हुए देखा तो उन्हें सामद मेरी हालत पर दया आ गई। अपने मुँसे पर काबू पाकर बोले—“नर, कोई बात नहीं, अब मैं प्रेम करने की तीसरी तरकीब बताता हूँ।”

“प्रेम की तीसरी तरकीब ? जल्दी बताइये, उस्ताद ! और तरकीब के इस्तेमाल की विधि भी बताइये।”

मदनगोपाल जी बोले, “इस तरकीब को फूसों वाला प्रेम कहते हैं, अर्थात् इसमें फूसों के ज़रिए प्रेम किया जाता है। इसके लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि तुम पहले एक जगह तलाश करो जहाँ ओरत

अकेली बैठी हो और सामने फूलों की क्यारी खिल रही हो या आस-पास कहीं पर फूल हों औरत बिल्कुल अकेली हो तथा अपने ध्यान में मग्न हो। उस समय तुम फूलों की क्यारियों से एक फूल तोड़कर उसके पास ले जाओ और उसे पेश कर दो। बड़ी कोमलता के साथ और बहुत ही इज्जत तथा रख-रखाव के साथ। फूल पेश करते समय कोई सुन्दर-सा वाक्य कहो—।

जैसे—जैसे—'लीजिए, फूल के लिए फूल हाज़िर है'। मतलब यह कि कोई अच्छी बात कहिये—जिससे फूलों के साथ-साथ स्त्री की सुन्दरता की बड़ाई का पहलू भी निकलता हो। औरत शर्माएगी, मुस्करायेगी, लेकिन आपका शुक्रिया जरूर अदा करेगी। बस—वहाँ से बात चल निकलेगी, मौका मुनासिब समझकर बात को आगे बढ़ा ले जाओ और ठंडी-ठंडी आहें भरना शुरू कर दो। जब लड़की आपसे आपकी ठण्डी आहों की वजह पूछे, तो उसे सोंफ बता दो कि उसकी वजह "सिर्फ तुम हो। सिर्फ तुम हो और सिर्फ तुम्हीं से मुझे प्रेम है।"



“आ हा हा हा, क्या अच्छी तरकीब बताई है मदनगोपाल जी न गाड़ी की जरूरत न गाड़ी की, केवल कुछ फूल और कुछ मोठी बातें ! अब की मैं जरूर ही बामयाब हो जाऊंगा अपने प्रेम में, देम लीजिएगा । अब आपना चेला असफल नहीं लोटेगा । मैं कत ही इस तरकीब को आजमाता हूँ । मगर—”

“मगर क्या—?”

मेरा चेहरा एकदम उदास हो गया, मैंने धीरे से कहा, तरकीब बताई है तो तरकी भी तो बताइये । जिस पर मैं इसे आजमाऊँ ।

सूबसोब रामदास वर मदनगोपालजी ने मुझे बताया—“वह रेलवेगाँव की लड़की मेरी दिसोजा है ना, वही बचल और घोस है, हर समय अपने कटे हुए बालों में फूल लगाये रहती है । बड़ी रोमांटिक लड़की है । यह तरकीब तुम उस पर आजमाओ और कल शाम को मुझे इसकी रिपोर्ट दो ।”

मैं अपने उस्ताद के हाथ धूमकर जल्दी से उधर खाना हो गया ।

लेकिन दूसरे दिन जब मैं शाम को मदनगोपाल जी के घर पहुँचा तो वह मेरा उदास और उतरा हुआ चेहरा देखकर खुद भी उदास हो गये । वही ही बेदिली से पूछने लगे—“क्या हुआ ? लड़की अकेली नहीं मिली ?”

“जी नहीं, मेरी दिसोजा बिल्कुल अकेली बैठे थीं—और अपने मकान के पिछवाड़े । तीसरी पहर का सुहामना समय था और वह बिल्कुल अकेली थी । वहाँ पर गन्धे, मोर्बा लगे हुए टीन के डिब्बे, पुराने ड्रम, लोहे के सड़े-गले पाइप...और बहुत-सा कूड़ा ककंद जमा था । वातावरण एकदम मनमोहक और तरह-तरह की खुशबुओं में भरा हुआ था ।”

“तो फूल न होंगे वहाँ पर, पिछवाड़े में फूल कहाँ से आयेंगे ?”

“जी नहीं, फूल भी थे । पिछवाड़े की दीवार से लगी एक झाड़ी पर बहुत से सफेद लम्बे-लम्बे चिलमनुमा फूल थे ।”

“फिर तुमने क्या किया ?”

“फिर क्या हुआ ?”

“कुछ नहीं, वह चुपचाप बैठो रहो। कभी पैर पटकती थी, कभी बाल झिटकती थी। जब मेरी समझ में कुछ न आया तो मैंने ठण्डी-ठण्डी आहें भरना शुरू कर दिया। इस पर उसने धनरा कर मेरे चेहरे की तरफ देखा। उसने मेरे चेहरे पर दुख की छाया को देखकर पूछा—

“क्यों जी, क्या आपके पेट में दर्द होता है ?”

मैंने धनराकर कहा—“जी हाँ।”

इन पर वह बोली, “मेरे ख्याल से आप फौरन एक जुलाब ले लीजिये।”

यह कह कर वह खोर-खोर से हँसी और हँसते हुए अपने घर के अन्दर भाग गई, उस्ताद !

यह कहते समय उसके चेहरे पर ऐसी घृणा थी कि मैं तो हिन्दगी भर उस से आँख न मिला सकूँगा, मैंने धर्म से अपना सर झुका लिया।

“क्यों जाओ।” मदनमोपान जी मुझे मे बोले “मेरी आँखों से दूर हो जाओ।”

“नहीं, उस्ताद ! भगवान के लिए मुझे बचा लीजिये, किसी भी तरीके से मुझे प्रेम करना सिखा दीजिये नहीं तो मैं तो मर जाऊँगा।” यह कह कर मैं दहाड़ें मार-मार कर रोने लगा।

मुझे रोने देखकर उसके दिल में फिर दया आई—मेरे आँसुओं की पोंछ कर बोले—“अब मैं तुम्हें प्रेम करने की चौथी तरीक़ बताना हूँ। अगर खबरदार, जो तुमने अब की इससे करार भी गलती की।”

मैंने अपने कानों को हाथ लगाया, “अब कभी मतली न करूँगा उम्माद ! मेरी गर्दन काट लेना अगर रत्नी भर इधर से उधर हो जाऊँ। जिन तरह तुम कहोगे, उसी तरह करूँगा—बिल्कुल उमी टगह !”



मदनगोपाल जी बोले, "यह प्रेम की चौथी तरकीब है और इसे शक्तिशाली प्रेम कहते हैं।"

"शक्तिशाली प्रेम?"

"हाँ, इसमें मनुष्य को अपनी बुद्धि से कोई काम नहीं लेना पड़ता, तुम्हारे लिए यह तरकीब सबसे अच्छी रहेगी।"

"जल्दी बताइये, जल्दी बताइये मेरे माननीय गुरु, मेरे पूज्य उस्ताद।"

"इसमें चिन्ता की अधिक जरूरत नहीं है। एक लड़की छांट लो जो तुम्हें सबसे अधिक पसन्द है, उसे अकेला कहीं देखो फिर उस के पास जाकर बड़ी दिलेरी से उसका हाथ पकड़ लो, यदि वह हाथ छुड़ाये तो तुम दोनों हाथों से कस कर पकड़ लो, और अगर इस पर भी वह तुम्हारी जकड़ से निकल जाने की कोशिश करे तो उसे जोर



के साथ अपने सीने से चिपका लो। इस पर अगर वह पीछे-चिटलाये तो अपने हाँठ उसके हाँठ पर रख कर उसका मुँह बन्द कर दो। इस पर भी यदि वह वाज न आए और अपने बचाव की कोशिश करे तो जोर से एड़ी मार कर जमीन पर धम्म से गिरा दो। बस, प्रेम तुम्हारा कामयाब है। क्योंकि हरजोरत मर्दानगी को पसन्द करती है—”

क्या यह बताने की जरूरत है कि मैंने यह तरकीब भी आजमा देनी। और अब मैं यह कहानी जेल की सलाखों के पीछे से लिख रहा हूँ। लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी। मेरा इरादा है कि मैं छ. माह की कैद काट कर फिर अपने उस्ताद की सेवा में उपस्थित होऊँगा और उनसे प्रेम करने की पाँचवी तरकीब अवश्य पूछूँगा।

## हमारे लोकप्रिय उपन्यास

हम तो मोहब्बत करेगा  
 सांझ का सूरज  
 यौवन की प्यास  
 रोम की नगरवधू  
 स्वेतलाना  
 घाट का पत्थर  
 मदभरे नयन  
 जवानी के दिन  
 नागिन  
 अवतरण  
 आखिरी किस्त  
 आकाश खाली है  
 ये चकले वालियां  
 मनुष्य के रूप  
 एक दो तीन  
 वरदान  
 नीलोफर  
 तपोभूमि  
 मुझे मालूम न था  
 नवाब ननकू  
 एक रात का नरक  
 लोपा मुद्रा  
 पत्थर के सनम  
 स्वयंतिद्धा

कृष्ण चन्दर  
 ओमप्रकाश शर्मा  
 अल्वर्टों मोराविया  
 अल्वर्टों मोराविया  
 क्षितीश

गुलशन नन्दा  
 कुशवाहा कान्त  
 कुशवाहा कान्त  
 कुशवाहा कान्त

गुरुदत्त  
 गुरुदत्त  
 दत्त भारती  
 कुप्रिन  
 यशपाल

शंकर

मुंशी प्रेमचन्द  
 शीकत थानवी

जैनेन्द्र व ऋषभचरण जैन  
 भगवतीप्रसाद वाजपेयी

आचार्य चतुरसेन

उपेन्द्रनाथ अश्क

के० एम० मुंशी

शंकर सुल्तानपुरी

माणिक बन्धोपाध्याय

सुबोध पॉकेट बुक्स

४४०८ नई सल्ली-६

